जुलाई-अगस्त, 2026
मूल्य ₹ 50

RNI : BIHHIN/2010/32942
ISSN : 2348-5043

लोकहित का सतत चिन्तन

लोकचिन्तन

मासिक

लोकचिन्तन स्थापना दिवस विशेषांक

बंगाल में महाराष्ट्र जैसी स्थिति:
क्या ऋतब्रत टीएमसी के शिंदे साबित होंगे?

कर्नाटक: मुख्यमंत्री बदलकर सत्ता विरोधी लहर
को कम करने की कोशिश

मधेसी के बेटे पहली बार बने नेपाल के प्रधानमंत्री कौन हैं बालेन शाह ?

ट्रंप के अड़ियल रवैये के कारण पूरी दुनिया में ऊर्जा संकट का दौर

राजनीति, शिक्षा, ज्ञान-विज्ञान, पुस्तक-समीक्षा, अध्यात्म, कविता, कहानी एवं अन्य विषयों पर सारगर्भित चर्चाएँ !

रामलखन सिंह यादव महाविद्यालय, बेतिया ।

(बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर की अंगीभूत इकाई)

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में रामलखन सिंह यादव महाविद्यालय, बेतिया के बढ़ते कदम!

- इन्टरमीडिएट स्तर से स्नातकोत्तर स्तर की पढ़ाई की उत्तम व्यवस्था।
- वाई-फाई सुविधा सम्पन्न परिसर।
- व्यवसायिक पाठ्यक्रम के अन्तर्गत बी.सी.ए. फीस एवं फीसरीज इंडस्ट्रियल केमेस्ट्री की त्रिस्तरीय स्नातक स्तर की पढ़ाई की व्यवस्था। बी0 एड0 की पढ़ाई द्विवर्षीय एवं चार वर्षीय इन्टीग्रेड कोर्स की शुरुआत।
- छात्र एवं छात्राओं के लिए अत्याधुनिक सुविधा सम्पन्न सामान्य सदन।
- छात्र/छात्राओं एवं प्राध्यापकों के लिए उत्कृष्ट पुस्तकों से सम्पन्न अत्याधुनिक डिजिटल ई-लाईब्रेरी, ग्रंथालय एवं INFWB NET से जुड़ी ऑनलाईन पुस्तकालय।
- छात्र/छात्राओं की खेल प्रतिभा के समुचित विकास के लिए फुटबॉल, बॉलीवाल, क्रिकेट आदि खेलों की समुचित व्यवस्था के साथ-साथ इण्डोर एवं आउट गेम का उत्तम प्रबंध।
- नियमित वर्ग संचालन एवं सेमिनार, संगोष्ठी, वर्क शॉप, संगीत एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की नियमित व्यवस्था।
- पेयजल की उत्तम व्यवस्था। पूरे पसिर में R.O. सिस्टम से शुद्ध पेयजल की व्यवस्था।
- उच्च योग्यताधारी उर्जावान एवं विषय विशेषज्ञ प्राध्यापकों की उपलब्धता।
- गाँधी अध्ययन केन्द्र के माध्यम से गाँधी जी के विचारों को प्रसारित एवं प्रचारित करना।
- शिक्षा के साथ-साथ विद्यार्थियों के सुसंस्कारों का सम्बर्द्धन।
- Language Lab. Computer Room की उत्तम व्यवस्था।
- जननायक कर्पूरी ठाकुर छात्रावास में Backward Classes के विद्यार्थियों हेतु छात्रावास की उत्तम व्यवस्था।
- Botanical Garden, Pond के माध्यम से पर्यावरण-संरक्षण एवं हरीतिमा-सम्वर्द्धन हेतु समुचित प्रयास।
- विद्यार्थियों के नैतिक एवं चारित्रिक उत्थान हेतु आध्यात्मिक गोष्ठियों के माध्यम से प्रोत्साहित करना।
- खेल-कूद प्रतियोगिता का समय-समय पर समुचित व्यवस्था।
- महाविद्यालय को आदर्श महाविद्यालय के रुप में विकसित करने हेतु शिक्षकों-विद्यार्थियों-अभिभावकों के साथ समय-समय पर गोष्ठियाँ आयोजित करना।
- विज्ञान, कला एवं वाणिज्य संकायों के अधिकतम विषयों में Post-Graduate स्तर की पढ़ाई शुरु।

डॉ० अभय कुमार
प्राचार्य

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ !

Reg. No.: 1597/2003-04
PAN No.:AAAJS3791C
GSTIN: 10AAAJS3791C2ZF

A Non-Governmental Organisation to Serve to Humanity

ISO Certifications : ISO14001:2015
E.P.F.O.: BRMUZ1897521000
ESI No.: 42001597540000908
12 A: AAAJS3791CE20206
80 G:AAAJS3791CF20228

DAS AND COMPANY AND SWARG

(Reg. U/S 80G of Income Tax Act, 1961)
(Registered under Soicety Registration Act 21/1860)

दास एण्ड कंपनी एण्ड स्वर्ग के बढ़ते कदम

◎ पूर्वी चम्पारण में सुगौली नगर पंचायत एवं पश्चिम चम्पारण में चनपटिया नगर पंचायत और बगहा नगर परिषद क्षेत्र में स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत ठोस अवशिष्ट कचरा प्रबंधन के अंतर्गत डोर-टू-डोर कचरा संग्रहण एवं निष्पादन और अन्य सफाई के कार्य को सफलतापूर्वक निष्पादन हेतु अग्रसर।

◎ सम्बंधित क्षेत्र के आमजनों से निवेदन है कि अपने क्षेत्र को साफ-सुथरा रखने में विशेष ध्यान दें। कृपया नाली में कूड़ा नहीं डालें, पॉलिथीन एवं प्लास्टिक थैलों के उपयोग का बहिष्कार करें, कूड़ों को निर्धारित डस्टबीन या कन्टेनर में ही डालें। एजेंसी के कार्यों में सहयोग अपेक्षित है।

प्रेम कुमार दास
Secretory, SWARG N.G.O.
Proprietor, DAS AND COMPANY
Bettiah (W.Chamapran)

लोकचिन्तन मासिक समाचार पत्रिका के 17वां स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं व बहुत-बहुत बधाई!

Office : Sona Devi Path, Nauranga Bagh, Bettiah, West Champaran, Bihar-845438
Mob.-9431428660, E-Mail ID: swarg1597pkdas@gmail.com

लोकहित का सतत चिन्तन

लोकचिन्तन

वर्ष-17 | अंक-2 | जुलाई-अगस्त, 2026 | मूल्य : ₹ 50/-

सम्पादक

रवीन्द्र कुमार शर्मा

सहायक सम्पादक : प्रो॰ (डॉ॰) सुरेन्द्र प्रसाद 'केसरी'
संयुक्त सम्पादक : शमीम अहमद
साहित्य सम्पादक : मन्त्र मुदित
प्रबंध सम्पादक : हरेन्द्र सिन्हा
समाचार उप सम्पादक : रविकान्त झा, मुनेष कुमार सिन्हा, प्रेम कुमार दास
साहित्य उप सम्पादक : सिस्टर प्रफुल्ला पन्ना, सरिता सिंह 'नेपाली', डॉ॰ विवेक मणि त्रिपाठी, मेरी आडलीन, प्रो॰ मदन मोहन ओझा, डॉ॰ रिपुसूदन पाण्डेय,
प्रबंध उप सम्पादक : सुभाष कुमार, मो॰ हिदायतुल्लाह, मो॰ कलाम अंसारी, अमरेश कुमार

ब्यूरो प्रमुख

नेपाल : पूनम झा दिल्ली : दिवाकर शर्मा दिल्ली एन.सी.आर. : राशिद आलम दिल्ली नगर निगम : उमेश वर्मा हरियाणा : डॉ॰ शिवानी जैन कर्नाटक : पूर्णिमा मलेश गुजरात : डॉ. आशा सिंह सिकरवार पंजाब : सुरेन्द्र नाथ जिंदल असम : वाणी वरठाकुर हिमाचल प्रदेश : शेर सिंह मध्य प्रदेश : शीतल सिंह राघव राजस्थान : राजेश मिडल उत्तराखण्ड : वसुन्धरा उपाध्याय उड़ीसा : रेनू कुमारी अग्रवाल बिहार : अजीत कुमार सिंह जम्मू-काश्मीर : यशपाल शर्मा लेह-लद्दाख : ज्योति सिंह

मंडल/जिला ब्यूरो प्रमुख

पटियाला : रबिन्द्र सिंह संगरूर : दिशा गिल जोधपुर मंडल : भरत कुमार दक्षिण पूर्वी दिल्ली : राखी सरोज उत्तरी दिल्ली : डॉ॰ सुमन शर्मा मुम्बई बॉलीवुड : रुस्तम घायल अकोला : डॉ॰ पंजाबराव खडे भोपाल : चित्रा घोटे उन्नाव : वेदस्वरूप त्रिवेदी देवरिया : उमेश कुमार गुप्त आजमगढ़ मंडल : अनिता साइलेस पटना प्रमण्डल : सिन्धु कुमारी दरभंगा : आशीष कुमार 'अकिंचन' पूर्णिया : रानी कुमारी रोहतास : कात्यायनी कुमारी मुजफ्फरपुर प्रमण्डल : डॉ॰ ललित किशोर पटना : संगीता सहाय पटना (ग्रामीण) : डॉ. अन्नपूर्णा श्रीवास्तव किशनगंज : कुमारी गुड्डी आरा : जर्नादन मिश्र मुंगेर : विनय कुमार सिंह सीतामढ़ी : डॉ॰ लोकेश शरण परसा (नेपाल) : राहुल कुमार गुप्ता लखनऊ : रजनी कुमारी गुरुग्राम : डॉ॰ होशियार सिंह यादव नोएडा : सीमा शर्मा सीतापुर : डॉ॰ ज्ञानवती दीक्षित मधेपुरा : डॉ॰ इन्दु कुमारी मुजफ्फरपुर : सुनील कुमार प्रिय सारण : डॉ॰ सुनील प्रसाद गोपालगंज : डॉ॰ विपिन दूबे पूर्वी चम्पारण : डॉ॰ नम्रता कुमारी, सुरेश सिंह प॰ चम्पारण : आशीष कुमार शर्मा

विशेष संवाददाता

नयी दिल्ली : कुमार अनिल, अजय कुमार चौधरी पटना : अजीत कुमार शुक्ला गांधीनगर : वीरेंद्र बहादुर सिंह

संपादक-मंडल

प॰ चतुर्भुज मिश्र, हरिहर चौबे, भगवती प्रसाद द्विवेदी, अंजनी कुमार सिन्हा, मधुरेश नारायण, डॉ॰. प्रमोद कुमार सिन्हा, हजारी सिंह, लाल बिहारी लाल, नन्दकुमार मिश्र 'आदित्य सामवेदी'।

डिजाइनिंग : गंगासागर 'अंजान' मो. : 9471211890

सभी पद अवैतनिक

सर्वाधिकार सुरक्षित

सम्पादकीय

स्थापना-दिवस विशेषांक

प्रिय पाठकगण!

सर्वज्ञात 'लोकचिन्तन' पत्रिका का प्रस्तुत विशेषांक अनेक दृष्टियों से प्रसन्नताप्रद है। हमने अपने 17वें स्थापना-दिवस समारोह के आयोजन की भव्य तैयारी की है। हमें देश भर से सम्मानित लेखकों के आलेख प्राप्त हुए हैं। कई आलेखों ने तो हमें विशेष विमुग्ध किया है। उनमें राष्ट्र-हित-चिन्ता गम्भीरता से प्रकट हुई है। उन्हें सम्मान-सहित हमने प्रकाशित भी किये हैं।

इस विशिष्ट अवसर पर परम्परा के अनुसार हम विभिन्न क्षेत्रों की 151 विभूतियों को 'लोकचिन्तन विशिष्ट सेवा-सम्मान' तथा 'पण्डित राजकुमार शुक्ल स्मृति-सम्मान-2026' से अलंकृत करने जा रहे हैं। इन महानुभावों ने अपने-अपने सेवा-क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य किये हैं।

इस पत्रिका के स्थापना-दिवस-समारोह में 'लोकचिन्तन विशिष्ट सेवा-सम्मान' एवम् 'पण्डित राजकुमार शुक्ल स्मृति-सम्मान-2026' प्राप्त करने वाले महानुभावों के प्रति हम हार्दिक साधुवाद ज्ञापित करते हैं। उनके सत्कार्य सराहना-योग्य हैं ही! कार्यक्रम की शोभा बढ़ा रहे आगत महाशयों को निहार कर हम मन्त्रमुग्ध हैं। उन्होंने हमारे लिए कितनी कृपा की है!

साथ ही विशेषांक के लिए विज्ञापन देने वाले उदारचेताओं के प्रति सम्मान अभिव्यक्त करना हम अपना कर्तव्य समझते हैं। उन सभी का अनेकशः आभार!

इस समारोह की शानदार सफलता में लगे आयोजन समिति के सभी पदाधिकारियों के प्रति बहुत-बहुत धन्यवाद ज्ञापित!

आप सभी प्रेमी पाठकों, लेखकों, संवाददाताओं, विज्ञापनदाताओं एवम् शुभेच्छुओं को स्वतंत्रता दिवस-2026 की हार्दिक शुभकामनाएं एवम् बधाई!

(रवीन्द्र कुमार शर्मा)
सम्पादक

प्रधान कार्यालय
मकान नं : 1-1096A, हरिनगर एक्स. गली नं॰ - 30, टंकी रोड, बदरपुर, नयी दिल्ली - 44

सम्पादकीय कार्यालय
शर्मा हाउस, विवेक विहार कॉलोनी, संत कबीर रोड, बानुछापर, बेतिया - 845438

प्रबंधकीय कार्यालय
203, अमर अर्पाटमेन्ट, श्यामनगर, मयूर विहार कॉलोनी, मौर्या पथ, खाजपुरा, बेली रोड, पटना-14

पंजीकृत कार्यालय
ग्राम + पोस्ट- शिकारपुर, भाया - मझौलिया, प॰ चम्पारण (बिहार) - 845454

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक रवीन्द्र कुमार शर्मा द्वारा मुद्रक : संदीप उपाध्याय, विमला प्रिंटर्स, बेलबाग, बंगाली कॉलोनी, बेतिया (बिहार) से मुद्रित तथा ग्राम+पोस्ट-शिकारपुर, भाया-मझौलिया, प॰ चम्पारण (बिहार) से प्रकाशित।

9934659107 lokchintanmagazine@yahoo.com www.lokchintan.com

nidan
निदान
स्वक्षधरा
सफाई मित्रों की आजीविका को मजबूत करने और शहरों में स्वच्छ एवं स्वस्थ वातावरण को बढ़ावा देने हेतु।
हमारी सेवाएं
शून्य अपशिष्ट प्रबंधन
हाउसकीपिंग सेवाएं
प्रशिक्षित सफाई कर्मचारी
कचरा प्रबंधन समाधान
स्वच्छ एवं स्वास्थ्यकर वातावरण
संपर्क करें:
0612-2220773, 7543930050
पता:
304, मौर्या टावर, मौर्या लोक, बुद्ध मार्ग, पटना - 800001
Visit: https://nidan.in

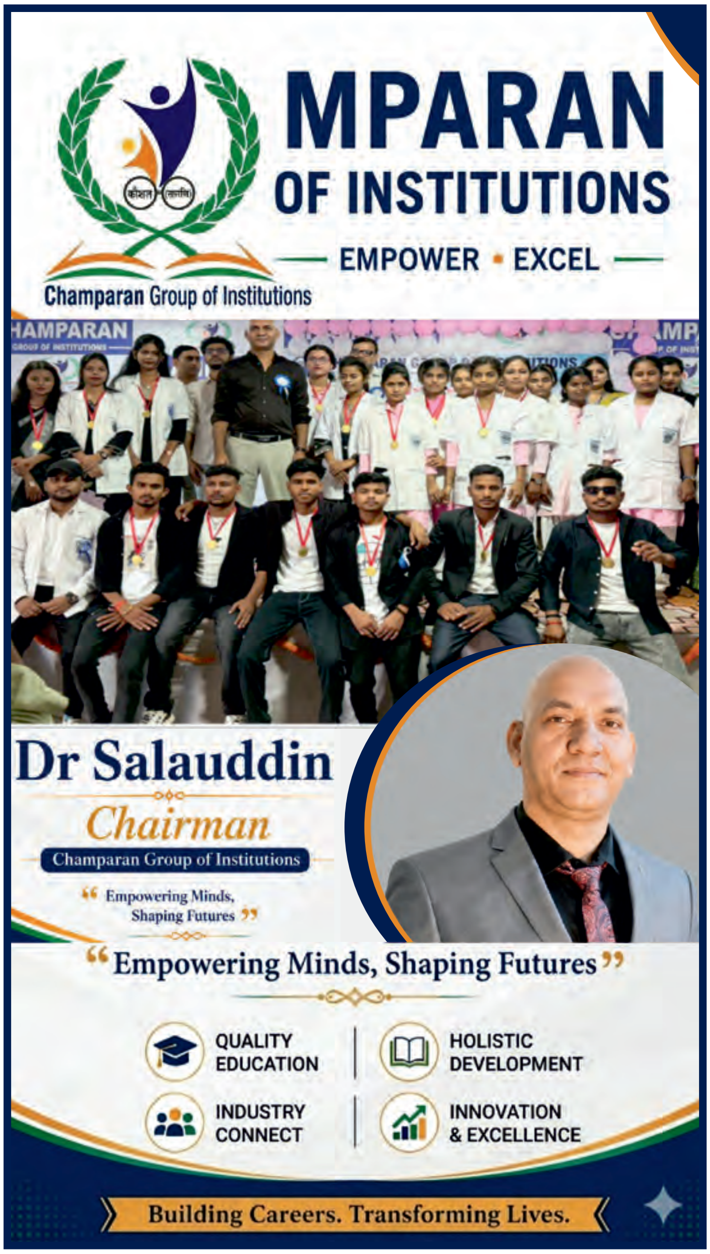
MPARAN
OF INSTITUTIONS
EMPOWER • EXCEL
Champaran Group of Institutions
Dr Salauddin
Chairman
Champaran Group of Institutions
"Empowering Minds, Shaping Futures"
"Empowering Minds, Shaping Futures"
QUALITY EDUCATION
HOLISTIC DEVELOPMENT
INDUSTRY CONNECT
INNOVATION & EXCELLENCE
Building Careers. Transforming Lives.

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं!
सोनालिका
फतह को तैयार, बनाये हर मुश्किल आसान
18 से 65 HP में सम्पूर्ण रेंज उपलब्ध
सम्पर्क करें :
शारदा इंटरप्राइजेज
प्रधान कार्यालय : मछली लोक, NH-727, बेतिया।
शाखा कार्यालय : गाँधी चौक, पनसेरवा बाबा स्थान, बगहा–1
8709595489, 9534710662, 8603587487

बंगाल में महाराष्ट्र जैसी स्थिति:
क्या ऋतब्रत टीएमसी के शिंदे साबित होंगे?

✍ वीरेंद्र बहादुर सिंह
विशेष संवाददाता 'लोकचिन्तन' गांधीनगर, गुजरात।
(पूर्व सम्पादक, मनोहर कहानियां एवं सत्यकथा)

पश्चिम बंगाल में भाजपा ने ऐतिहासिक जीत दर्ज कर ममता बनर्जी के शासन का अंत कर दिया। इस बार का विधानसभा चुनाव कई मायनों में अभूतपूर्व साबित हुआ। सबसे बड़ी बात यह रही कि भाजपा ने यहां भारी बहुमत के साथ सरकार बना ली। विधानसभा चुनाव में भाजपा को 208 सीटें मिलीं, जबकि तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) केवल 80 सीटों पर सिमट गई।

इस हार के बाद टीएमसी में टूट–फूट शुरू हो गई। एक ओर ममता बनर्जी मुख्यमंत्री पद गंवाने से नाराज थीं, वहीं दूसरी ओर पार्टी में दरारें पड़ने लगी थीं। ममता के खिलाफ पार्टी के भीतर बड़ा मोर्चा बन गया था और बड़े राजनीतिक उथल–पुथल के संकेत मिलने लगे थे।

विधानसभा चुनाव में हार के बाद टीएमसी ने तीन बार समीक्षा बैठक बुलाई। 6 मई को परिणाम आने के बाद हुई पहली बैठक में 10 विधायक अनुपस्थित रहे। इसके बाद 19 मई को फिर बैठक बुलाई गई, जिसमें 35 विधायक नहीं पहुंचे। इससे ममता और अधिक परेशान हो गईं। 31 मई को तीसरी बैठक हुई, जिसमें 80 में से 60 विधायक अनुपस्थित रहे।

यहीं तक मामला सीमित नहीं रहा। चुनावी हार के बाद पार्टी में इस्तीफों की भी झड़ी लग गई। टीएमसी प्रवक्ता बिस्वजीत देब ने इस्तीफा दे दिया। शांतनु सिंह, अभिजीत मजूमदार, काकोली घोष और अरूप चक्रवर्ती ने भी अपने पद छोड़ दिए। इसके अलावा डायमंड हार्बर से 8 पार्षदों, चंदननगर से 30, भाटपाड़ा से 30, गरुलिया से 18, हलिशहर से 16, उत्तर बैरकपुर से 15 और कांचरापाड़ा से 14 पार्षदों ने इस्तीफा दे दिया।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह रही कि इन इस्तीफों के बीच ममता बनर्जी ने उलबेरिया के विधायक ऋतब्रत बनर्जी और एंटाली के विधायक संदीपन साहा को पार्टी से निकाल दिया। उन पर पार्टी–विरोधी गतिविधियों में शामिल होने का आरोप लगाया गया था।

हालांकि वास्तविकता यह थी कि इन दोनों विधायकों ने विधानसभा में विपक्ष के नेता से जुड़े एक प्रस्ताव और उस पर हुए हस्ताक्षरों की वैधता पर सवाल उठाए थे। संदीपन साहा ने तो यहां तक कहा था कि जिन विधायकों के हस्ताक्षर प्रस्ताव में दिखाए गए हैं, वे बैठक में मौजूद ही नहीं थे। इसके बाद दोनों को पार्टी से बाहर कर दिया गया।

इन इस्तीफों और निष्कासन की घटनाओं ने यह स्पष्ट कर दिया कि अब टीएमसी में दीदी की ममता नहीं रही। नेता खुलकर विद्रोह करने लगे थे।

राजनीतिक जानकारों के अनुसार, इन घटनाओं ने पश्चिम बंगाल में महाराष्ट्र जैसी स्थिति पैदा कर दी। कोलकाता के विधायक हॉस्टल में एक गुप्त बैठक हुई, जिसमें इस्तीफा देने वाले नेता, निष्कासित नेता और असंतुष्ट नेता एक साथ आए। उन्होंने पार्टी की कमान अपने हाथ में लेने का फैसला कर लिया।

उन्होंने टीएमसी को नई विचारधारा और नई नीतियों के आधार पर चलाने की योजना बनाई। परिणाम यह हुआ कि जैसे महाराष्ट्र में शिवसेना दो हिस्सों में बंट गई थी, वैसे ही यहां भी टीएमसी में विभाजन हो गया।

टीएमसी के 80 में से 58 विधायकों का समर्थन हासिल कर ऋतब्रत बनर्जी पार्टी के नए नेता बन गए। उन्होंने विधानसभा अध्यक्ष को आवेदन देकर स्वयं को विपक्ष का नेता घोषित करने की मांग की और अध्यक्ष ने इसे स्वीकार भी कर लिया।

इस प्रकार कांग्रेस से अलग होकर टीएमसी बनाने वाली ममता बनर्जी की पार्टी दो हिस्सों में बंट गई और ऋतब्रत बनर्जी को टीएमसी का शिंदे कहा जाने लगा।

विधानसभा अध्यक्ष द्वारा ऋतब्रत को विपक्ष का नेता घोषित किए जाने से ममता बनर्जी को हार के बाद दूसरा बड़ा झटका लगा। कुछ रिपोर्टों के अनुसार, टीएमसी के विधायक ऋतब्रत को विपक्ष का नेता तो बनाना चाहते हैं, लेकिन ममता को पार्टी अध्यक्ष के रूप में बनाए रखना चाहते हैं।

दूसरी ओर इस घटनाक्रम के बाद ममता बनर्जी ने टीएमसी की सभी समितियां भंग कर दीं। फिलहाल पार्टी की स्थिति काफी डांवाडोल बताई जा रही है।

विशेषज्ञों का मानना है कि ऋतब्रत ने अब ममता को ही पार्टी में हाशिए पर धकेल दिया है और टीएमसी की कमान अपने हाथ में ले ली है। हालांकि वे सार्वजनिक रूप से ममता को अपना नेता बताते हैं, लेकिन 58 विधायकों के समर्थन के साथ विपक्ष का नेता बन जाना उनके बढ़ते प्रभाव को दर्शाता है।

कहा जा रहा है कि 80 में से लगभग 60 से भी अधिक विधायक ऋतब्रत के साथ हैं और ममता के पास अब गिने–चुने विधायक ही बचे हैं।

सबसे बड़ी बात यह है कि ममता ने अपने ही नेताओं और सहयोगियों पर पार्टी को कमजोर करने का आरोप लगाया है। उनका कहना है कि कुछ लोग पर्दे के पीछे रहकर पार्टी को तोड़ने की साजिश कर रहे हैं।

विश्लेषकों का मानना है कि टीएमसी में अब पुराने और नए नेताओं के बीच संघर्ष चल रहा है। फिलहाल स्थिति शीत युद्ध जैसी है, लेकिन कभी भी बड़ा विस्फोट हो सकता है। यही कारण है कि इस्तीफे और निष्कासन की घटनाएं लगातार सामने आ रही हैं।

महाराष्ट्र में 2022 में भी कुछ ऐसा ही हुआ था। एकनाथ शिंदे ने बड़ा राजनीतिक उलटफेर किया था, जिसके कारण शिवसेना दो हिस्सों में बंट गई थी। उन्होंने बड़ी संख्या में विधायकों को अपने साथ लेकर अलग गुट बनाया और बाद में पार्टी पर नियंत्रण स्थापित कर लिया।

2019 के महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के बाद उद्धव ठाकरे ने मुख्यमंत्री बनने के लिए भाजपा का साथ छोड़कर कांग्रेस के साथ गठबंधन किया था। वहीं से पार्टी में असंतोष बढ़ना शुरू हुआ। अंततः 30 जून, 2022 को शिंदे मुख्यमंत्री बने और बाद में अदालत तथा चुनाव आयोग ने भी उनके गुट को मूल शिवसेना के रूप में मान्यता दे दी।

जानकारों के अनुसार, टीएमसी में लंबे समय से असंतोष पनप रहा था। पार्टी के आंतरिक ढांचे और उसके संचालन के तरीके को लेकर कई नेता नाराज थे। इसके अलावा अभिषेक बनर्जी की कार्यशैली और निर्णय लेने के तरीके को लेकर भी भीतरखाने असंतोष था।

चुनाव परिणामों ने इन सभी समीकरणों को बदल दिया। ममता का राजनीतिक जादू नहीं चला और अभिषेक की रणनीतियों पर भी सवाल उठने लगे। हार के बाद ममता द्वारा अपने ही नेताओं के खिलाफ कार्रवाई किए जाने से असंतोष का ज्वालामुखी फूट पड़ा।

ऋतब्रत और संदीपन को निकाले जाने के बाद उनके नेतृत्व में असंतुष्ट नेता एकजुट होने लगे। जो लोग पहले ममता और अभिषेक का विरोध खुलकर नहीं कर पाते थे, वे अब सामने आने लगे।

तीन–तीन समीक्षा बैठकों में विधायकों और नेताओं की अनुपस्थिति ने भी यह संकेत दे दिया कि टीएमसी में सब कुछ सामान्य नहीं है। पार्टी अब विभाजन के कगार पर पहुंच चुकी है।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि स्थिति बेहद गंभीर है। यदि 80 में से लगभग 60 से अधिक विधायक ऋतब्रत के साथ खड़े हैं और 28 में से 20 सांसद क्षेत्रीय दल NCPI के साथ विलय कर लोकसभा में अलग गूट के रूप में बैठना चाहते हैं, तो यह स्पष्ट संकेत है कि पार्टी टूट की ओर बढ़ रही है और ऋतब्रत बंगाल के शिंदे साबित हो सकते हैं।■

कर्नाटक: मुख्यमंत्री बदलकर सत्ता विरोधी लहर को कम करने की कोशिश

अनिकेत सिंह
बड़ौदा, गुजरात।

कर्नाटक में कांग्रेस सरकार के खिलाफ उभर रहे एंटी–इन्कम्बेंसी फैक्टर को कमजोर करने के लिए कांग्रेस नेतृत्व ने सरकार में नंबर दो की भूमिका निभा रहे डी.के. शिवकुमार को मुख्यमंत्री पद सौंप दिया है। सिद्धारमैया और डी.के. शिवकुमार दोनों कांग्रेस के ऐसे वफादार चेहरे रहे हैं, जिन्होंने भाजपा को कर्नाटक में राजनीतिक उथल–पुथल मचाने का अधिक अवसर नहीं दिया। कर्नाटक की राजनीति में दोनों नेताओं ने खुद को बेहद चतुर और कुशल साबित किया है।

जब कांग्रेस ने कर्नाटक में जीत हासिल की थी, तब यह तय किया गया था कि मुख्यमंत्री पद ढाई–ढाई साल के रोटेशन के आधार पर चलेगा। रोटेशन के अनुसार सिद्धारमैया का कार्यकाल ढाई वर्ष पूरा हो जाने के बावजूद वह कुर्सी छोड़ने के लिए तैयार नहीं थे। विवाद और असंतोष बढ़ने से पहले कांग्रेस नेतृत्व ने उन्हें मना लिया था। कर्नाटक में सिद्धारमैया और डी.के. शिवकुमार दोनों ही अपने–अपने प्रभाव और राजनीतिक कौशल में एक–दूसरे से कम नहीं हैं।

डी.के. शिवकुमार पहनावे और जीवनशैली के मामले में काफी शौकीन माने जाते हैं। वह विदेशी ब्रांड के कपड़े पहनना पसंद करते हैं। घड़ियां, जूते और अन्य वस्तुएं भी वह ब्रांडेड इस्तेमाल करते हैं। उन्हें तमाम लग्जरी चीजों का शौक है। उनकी संपत्ति लगभग 1400 करोड़ रुपए बताई जाती है। वह लोकप्रिय नेता भी हैं और डोसा खाने के शौकीन हैं। खास बात यह है कि वह चम्मच का इस्तेमाल किए बिना पारंपरिक देसी अंदाज में डोसा खाना पसंद करते हैं।

राजनीति में वह एक मंजे हुए खिलाड़ी हैं। भाजपा को चुनौती देने वाली रणनीति बनाने की क्षमता रखते हैं। हालांकि विवाद इस बात को लेकर है कि चुनाव नजदीक होने पर मुख्यमंत्री बदलने का फैसला जल्दबाजी भरा माना जा सकता है। रोटेशन का समय आ जाने के बावजूद सिद्धारमैया कुर्सी छोड़ने को तैयार नहीं थे। कांग्रेस नेतृत्व और पार्टी के वरिष्ठ नेताओं ने उनसे पद छोड़कर जिम्मेदारी डी.के. शिवकुमार को सौंपने का आग्रह किया था। उन्हें राज्यसभा की सीट सहित कई प्रकार के राजनीतिक आश्वासन और प्रलोभन भी दिए गए थे, लेकिन वह मुख्यमंत्री पद छोड़ने को तैयार नहीं थे। कांग्रेस नेतृत्व की चिंता यह भी थी कि सिद्धारमैया अब 80 वर्ष की आयु के करीब पहुंच चुके हैं।

कांग्रेस की वर्तमान में चार राज्यों में सरकार है और उनमें कर्नाटक सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है। सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) क्षेत्र में कर्नाटक का योगदान बहुत बड़ा है। कर्नाटक के आईटी क्षेत्र में हिस्सेदारी बढ़ाने के लिए पड़ोसी आंध्र प्रदेश भी प्रयासरत है। ऐसे समय में जब अगले वर्ष कर्नाटक विधानसभा चुनाव होने वाले हैं, मुख्यमंत्री बदलकर कांग्रेस ने एक जोखिम भरा कदम उठाया है।

सिद्धारमैया ने न तो स्वेच्छा से और न ही खुशी–खुशी डी.के. शिवकुमार को कुर्सी सौंपी थी। उन्हें बड़ी मुश्किल से समझाया गया था। कहा जाता है कि कांग्रेस नेतृत्व को पार्टी के भीतर असंतोष और संभावित बगावत की आहट मिलने लगी थी। डी.के. शिवकुमार पार्टी के प्रति वफादार हैं, लेकिन उनके समर्थक सिद्धारमैया को मुख्यमंत्री पद पर बनाए रखने के पक्ष में नहीं थे, यह भी एक सच्चाई है।

दूसरी ओर सिद्धारमैया को हटाने के अलावा कांग्रेस के पास कोई विकल्प भी नहीं था। पार्टी नेतृत्व की मौजूदगी में ढाई–ढाई वर्ष के रोटेशन का वादा किया गया था। संक्षेप में कहें तो सिद्धारमैया को काफी समझाने–बुझाने के बाद पद छोड़ने के लिए राजी किया गया था। अब जबकि वह राज्यसभा के माध्यम से केंद्र की राजनीति में जाने के इच्छुक नहीं हैं, तो संभव है कि वह स्थानीय स्तर पर डी.के. शिवकुमार के लिए विधानसभा चुनाव में उम्मीदवारों के चयन से लेकर चुनाव प्रचार तक कई मामलों में बाधा उत्पन्न कर सकते हैं।

ऐसी स्थिति में कर्नाटक में कांग्रेस की राह मुश्किल हो सकती है। फिलहाल सिद्धारमैया और डी.के. शिवकुमार एक–दूसरे का सम्मान करते हुए एकता का प्रदर्शन कर रहे हैं, लेकिन उनकी यह एकता कितने समय तक कायम रहेगी, इस पर संदेह बना हुआ है।■

चम्पारण सत्याग्रह के प्रणेता पण्डित राजकुमार शुक्ल की जयंती (23 अगस्त) पर विशेष

रवीन्द्र कुमार शर्मा
अध्यक्ष
पण्डित राजकुमार शुक्ल स्मारक समिति (रजि॰)

चम्पारण सत्याग्रह के नायक राजकुमार शुक्ल को मिले 'भारत रत्न'

भारत में कई विदेशी जातियाँ आयीं। कुछ ने बर्बरता दिखायी, धन लूटा और अपनी राह पकड़ी। कुछ जातियाँ यहीं की होकर यहाँ की मिट्टी में रस–बस गयीं। किन्तु सन् 1600 ई० में ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना के साथ अंग्रेजों का आगमन और अंग्रेजी राज्य की स्थापना भारत वर्ष के गौरवपूर्ण इतिहास का सबसे अधिक कालिमा पूर्ण अध्याय है। व्यापार के नाम पर आने वाली इस हुकूमत ने बर्बरता के जितने अध्याय अकेले जोड़ा उतना यहाँ आने वाली सभी कौमों ने मिलकर भी नहीं जोड़ी होगी।

चम्पारण की जलवायु, प्राकृतिक सम्पदा, भूमि की उर्वरा शक्ति और तत्कालीन पारिवारिक सामाजिक संरचना ने निलहों को अपनी ओर सर्वाधिक आकृष्ट किया। फलतः चम्पारण में नील की कोठियाँ पर कोठियाँ बनती गयीं और सम्पूर्ण चम्पारण नील के धब्बे से बदरंग हो उठा। यहाँ कुल 95,970 एकड़ भूमि में नील की खेती होने लगी। चम्पारण में मुख्य रूप से बेतिया, रामनगर, मधुबनी आदि राजाओं का भूमि पर वर्चस्व था। निलहों ने ठेके–पट्टे के रूप में इन छोटे–बड़े जमींदारों से जमींदारी का स्वामित्व लेकर यहाँ की आम जनता तथा छोटे बड़े किसान–मजदूर का शोषण प्रारम्भ कर दिया।

प्रत्येक किसान को अपनी खेती योग्य भूमि का सर्वाधिक उपजाऊ हिस्सा नील की खेती के लिए छाँटना होता था। यूरोपियन निलहे यहाँ के किसानों से नील की खेती अपने शर्त पर करवाते थे। चम्पारण में तीन–कठिया प्रथा ही सबसे अधिक प्रचलित था। इस प्रथा के अनुसार एक निलहा अंग्रेज के क्षेत्राधिकार में जितने किसान थे, उन्हें एक बिगहा की खेती वाली जमीन से तीन कट्ठे जमीन में अनिवार्य रूप से नील की खेती करनी होती थी। तीन कठिया जमीन की कोड़ाई–जोताई किसानों को खून–पसीना बहाकर सर्वोत्तम विधि से करनी पड़ती थी। कोठी के गुमास्ता– तहसीलदार, रोकदार या स्वयं अंग्रेज साहब तीन कठिया खेत का निरीक्षण करते थे और जिस प्रकार की कमी उनकी दृष्टि में पायी जाती, उस किसान को

भारतीय स्वाधीनता संग्राम के अमर सेनानी एवं चम्पारण सत्याग्रह के प्रणेता पण्डित राजकुमार शुक्ल के स्मृति-रक्षार्थ

हमारी मुख्य माँगें

भारत सरकार से

- चम्पारण सत्याग्रह के नायक पण्डित राजकुमार शुक्ल को 'भारत रत्न' से सम्मानित किया जाय।
- चनपटिया रेलवे स्टेशन का नामकरण पण्डित राजकुमार शुक्ल के नाम पर किया जाय।
- बेतिया में हवाई यात्रा सेवा यथाशीघ्र प्रारम्भ की जाय तथा इसका नामकरण 'पण्डित राजकुमार शुक्ल एयर पोर्ट बेतिया' किया जाय।

बिहार सरकार से

- पटना तथा बेतिया नगर निगम क्षेत्र में 'पण्डित राजकुमार शुक्ल स्मृति संग्रहालय' की स्थापना हो।
- पटना तथा बेतिया के किसी महत्त्वपूर्ण मार्ग का नामकरण पण्डित राजकुमार शुक्ल के नाम पर किया जाय।
- राजधानी पटना तथा जिला मुख्यालय बेतिया में प्रमुख स्थल पर पण्डित राजकुमार शुक्ल की प्रतिमा स्थापित की जाय।
- बेतिया शहीद पार्क के आस–पास 'सत्याग्रह पार्क' का निर्माण हो, जिसमें चम्पारण सत्याग्रह के सभी स्वतंत्रता सेनानियों के नाम–पते सहित 'श्रद्धांजलि शिलापट्ट' लगाये जाएँ।

- रवीन्द्र कुमार शर्मा
अध्यक्ष : पण्डित राजकुमार शुक्ल स्मारक समिति
(निबंधित–वर्ष 1991 ई०)

(22 अप्रैल 2017 को चंपारण सत्याग्रह शताब्दी वर्ष के अवसर पर एक ऐतिहासिक दृश्य देखा गया, जब महात्मा गांधी के प्रतिरूप के साथ हजारों की संख्या में लोगों ने बेतिया रेलवे स्टेशन से हजारीमल धर्मशाला की ओर प्रस्थान किया। इसका नेतृत्व जिला प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारियों, गणमान्य नागरिकों तथा पंडित राजकुमार शुक्ल स्मारक समिति के अध्यक्ष रवीन्द्र कुमार शर्मा ने किया।)

("27 अप्रैल 2017 को मुरली भरहवा में आयोजित चंपारण सत्याग्रह शताब्दी समारोह में, पंडित राजकुमार शुक्ल स्मारक समिति की दीर्घकालिक मांग के आलोक में तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार द्वारा चंपारण सत्याग्रह के प्रणेता पंडित राजकुमार शुक्ल और उनके साथी संत राउत की प्रतिमा स्थापित करने की घोषणा की गई। इस अवसर पर पंडित राजकुमार शुक्ल स्मारक समिति के अध्यक्ष रवीन्द्र कुमार शर्मा के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल द्वारा मांग-पत्र भी सौंपा गया, जिसमें पंडित शुक्ल की स्मृति को जीवंत करने हेतु विभिन्न मांगें रखी गई थीं।")

कोड़ा मारने या मुर्गीखाना में बंद करने या जोकही–बावली में कुछ समय तक खड़े रहने की सजा दी जाती थी।

जोकही–बावली उन तालाबों को कहा जाता था, जिनमें जोंक पाले जाते थे। नील की खेती में असावधानी दिखाने वाले किसानों को उन तालाबों में खड़ा कराया जाता ताकि जोंक उनके रक्त को खींच लें और असहनीय पीड़ा हो। मुर्गीखाना में प्रायः वो किसान बंद किये जाते थे, जिन्हें मुर्गीयों के छुआ–छूत से परहेज था। यदा–कदा चम्पारणवासियों के बेटी–बहुओं की इज्जत पर निलहे हाथ डालना चाहते थे।

सन् 1916 ई० के पूर्व जब किसानों और आम जनता पर अंग्रेज निलहों का अत्याचार चरम सीमा पर पहुँच गया था, तब सम्पूर्ण चम्पारण दहशत की छाया में अपना जीवन व्यतीत कर रहा था। इसी निलहे आंतक की कालिमा में प्रकाश की मशाल के रूप में अवतरित हुए सतवरिया गाँव के एक छोटे से कर्मनिष्ठ ब्राह्मण परिवार में 23 अगस्त 1875 ई० को जन्मे पं० राज कुमार शुक्ल। जिन्होंने अंग्रेजी राज्य के अत्याचारों को जड़ से उखाड़ने का संकल्प कर गाँव–गाँव घूमे और निलहों के विरुद्ध किसानों में जागृति का कार्य आरंभ कर दिया। उनका यह प्रयास जल्द ही अंग्रेजों के जानकारी में आ गयी और बेलवा कोठी का मैनेजर मि० एमन, जिसके क्षेत्राधिकार में मुरली भरहवा ग्राम था, जहाँ राजकुमार शुक्ल की खेती योग्य जमीन थी। उसने झूठा मुकदमा दायर कर राजकुमार शुक्ल को जेल भेजवा दिया। जेल से निकलते ही राजकुमार शुक्ल ने दुगुने उत्साह से किसानों को संगठित करने में अपनी पूरी ताकत लगा दी। किन्तु उन्हें इसी दौरान यह भी अहसास हो गया कि जिस काम को पूरा करने का बीड़ा उन्होंने उठाया है वह किसी असाधारण पुरुष की सहायता के बिना संभव नहीं है। गाँधी जी द्वारा दक्षिण अफ्रीका में चलाये गये सत्याग्रह अभियान और उसकी सफलता के बारे में राजकुमार शुक्ल ने सुन रखा था। अन्ततः उन्होंने गाँधी जी को ही चम्पारण लाने हेतु हर संभव प्रयास करने का निश्चय किया।

राजकुमार शुक्ल को जैसे ही ज्ञात हुआ कि दिसम्बर 1916 ई० में काँग्रेस का अधिवेशन लखनऊ में होने वाला है, वे लखनऊ पहुँच गये और ब्रजकिशोर प्रसाद के साथ गाँधी जी से भेंट कर चम्पारण की व्यथा सुनायी तथा उनसे चम्पारण चलने का निवेदन किया। परन्तु गाँधी जी ने तत्काल चम्पारण चलने में अपनी असमर्थता बताते हुए बाद में चम्पारण चलने का वचन दिया।

गाँधी जी लखनऊ से कानपुर गये, जहाँ से उन्हें कलकत्ता जाना था, राजकुमार शुक्ल भी कानपुर पहुँच गये और गाँधी जी से चम्पारण चलने की याचना की। जब गाँधी जी कलकत्ता पहुँचे तो वहाँ भी पं० शुक्ल, भूपेन्द्र बाबू के यहाँ पहले से ही मौजूद थे। इस प्रकार गाँधी जी को चम्पारण लाने के लिए चम्पारण के इस किसान ने कठोर परिश्रम किया। फलतः गाँधी जी पं० राजकुमार शुक्ल के साथ 10 अप्रैल, 1917 को पहली बार बाँकीपुर रेलवे स्टेशन, जो अब पटना जंक्शन है, पर पहुँचे। पटना में कुछ समय रुकने के बाद 11 अप्रैल, 1917 को गाँधी जी पं० शुक्ल के साथ मुजफ्फरपुर पहुँचे, वहाँ भी कुछ दिन रुकने के बाद 15 अप्रैल, 1917 को गाँधी जी का शुभागमन चम्पारण के जिला मुख्यालय मोतिहारी में हुआ। यहाँ गोरख बाबू के मकान में गाँधी जी रुके तथा दूसरे ही दिन से किसानों पर अंग्रेजों द्वारा किये गये अत्याचारों की जाँच शुरू कर दी। जाँच की बात सुनते ही अंग्रेजों में खलबली मच गई। तत्कालीन जिलाधिकारी डब्लू० बी० हेकाक ने गाँधी जी को एक नोटिस भेजा, जिसमें उनको चम्पारण छोड़ने का आदेश दिया गया था। 17 अप्रैल, 1917 को निषेधाज्ञा उल्लंघन के आरोप में गाँधी जी पर धारा–188 लागू कर 18 अप्रैल, 1917 को मोतिहारी के तत्कालीन एस०डी०ओ० जॉर्ज चन्दर के कोर्ट में उपस्थित होने का आदेश मिला। गाँधी जी ने कोर्ट में उपस्थित होकर चम्पारण छोड़ने से इन्कार कर दिया तथा जमानत पर छूटना भी अस्वीकार कर दिया। उमड़ते जन–सैलाब के समक्ष अंग्रेजी शासन को झुकना पड़ा और गाँधी जी के विरुद्ध किए सभी मुकदमे वापस लेना पड़ा।

22 अप्रैल, 1917 को गाँधी जी राजकुमार शुक्ल के साथ बेतिया पहुँचे और हजारीमल धर्मशाला को मुख्य शिविर बनाकर जाँच कार्य प्रारंभ कर दिया। लगभग एक हजार गाँवों के पच्चीस हजार से ज्यादा किसानों की लिखित

("मुरली भरहवा में 2 अक्टूबर 2000 को तत्कालीन मुख्यमंत्री नीतीश कुमार द्वारा पटना से रिमोट से पंडित राजकुमार शुक्ल एवं संत राउत की प्रतिमाओं का अनावरण किया गया। तत्पश्चात, जिला प्रशासन द्वारा आयोजित अनावरण समारोह में पंडित राजकुमार शुक्ल स्मारक समिति के अध्यक्ष रवीन्द्र कुमार शर्मा द्वारा पंडित शुक्ल की प्रतिमा पर प्रथम माल्यार्पण किया गया।")

(3 फरवरी 2019 को बिहार विधानसभा अध्यक्ष के कार्यालय कक्ष में, बिहार विधानसभा के तत्कालीन माननीय अध्यक्ष श्री विजय कुमार चौधरी द्वारा चंपारण सत्याग्रह शताब्दी वर्ष पर प्रकाशित स्मारिका 'चंपारण सत्याग्रह के 100 साल' का विमोचन किया गया। इस अवसर पर समाज के विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान देने वाले 19 महानुभावों को 'पंडित राजकुमार शुक्ल स्मृति सम्मान 2019' से सम्मानित भी किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता पंडित राजकुमार शुक्ल स्मारक समिति के अध्यक्ष रवीन्द्र कुमार शर्मा ने की।)

शिकायतें गाँधी जी तथा उनके सहयोगियों द्वारा दर्ज की गईं।

महात्मा गाँधी, पं० राजकुमार शुक्ल, डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, ब्रजकिशोर प्रसाद, गोरख बाबू आदि के अहिंसक सत्याग्रह के दबाव से मजबूर होकर 10 जून 1917 को बिहार उड़ीसा सरकार ने एक संकल्प द्वारा 'कृषक जाँच समिति' की नियुक्ति की, जिसे भारत सरकार ने भी अपनी सहमति प्रदान कर दी। इस समिति में गाँधी जी को भी सदस्य बनाया गया। 14 अक्टूबर, 1917 को समिति ने जाँच प्रतिवेदन सरकार को समर्पित किया, जिसमें पं० राजकुमार शुक्ल के सभी आरोप सही साबित हुए और 29 नवम्बर, 1917 को मिस्टर मार्ड द्वारा लेजिस्लेटिव एसेम्बली काउन्सिल में पेश किया, जहाँ 'चम्पारण एग्रेरियन बिल' अन्ततः 4 मार्च, 1918 को पास कर दिया गया। फलतः तीन कठिया प्रथा तथा अन्य जुल्मों–सितम से चम्पारणवासियों को मुक्ति मिली।

पं० राजकुमार शुक्ल नहीं होते तो शायद महात्मा गाँधी के चम्पारण में चरण नहीं पड़ते। गाँधी शायद महात्मा गाँधी नहीं कहला पाते, स्वाधीनता आन्दोलन को चम्पारण सत्याग्रह के माध्यम से गाँधी का नेतृत्व नहीं मिल पाता। पं० शुक्ल ही प्रथम भारतीय हैं जो मोहनदास करमचंद गाँधी को सार्वजनिक रूप से 'महात्मा' कहकर पुकारते थे। उनकी डायरी के अंश और उनके द्वारा बापू को लिखे गये पत्र इस बात के साक्षी हैं।

डॉ० राजेन्द्र प्रसाद के अनुसार भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का वास्तविक बीजारोपण चम्पारण में ही हुआ। दक्षिण–अफ्रीका से लौटने पर गाँधी जी का यह चम्पारण सत्याग्रह पहला महान कार्य था। मोहनदास करमचंद गाँधी को महात्मा गाँधी बनाने का श्रेय चम्पारण के लाल राजकुमार शुक्ल को ही जाता है।■

लेखक : कई पुस्तकों के रचनाकार एवं पण्डित राजकुमार शुक्ल स्मारक समिति के अध्यक्ष हैं।

('पंडित राजकुमार शुक्ल स्मृति सम्मान - 2022' सह 'लोकचिन्तन स्थापना दिवस समारोह' पटना स्थित गांधी संग्रहालय में 20 अप्रैल, 2022 को संपन्न हुआ। इसके मुख्य अतिथि बिहार विधान परिषद के तत्कालीन उपसभापति डॉ० रामचंद्र पूर्वे थे तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता पंडित राजकुमार शुक्ल स्मारक समिति के अध्यक्ष रवीन्द्र कुमार शर्मा ने की। इस समारोह में बिहार के विभिन्न जिलों और देश के विभिन्न प्रदेशों से आए कुल 151 विशिष्ट व्यक्तियों को 'पंडित राजकुमार शुक्ल स्मृति सम्मान' और 'लोकचिन्तन विशिष्ट सेवा सम्मान' से सम्मानित किया गया।)

कविता

मिट्टी, मोहब्बत और पहचान

सिद्धेश्वर
हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना।

अपनी जमीन पर
गुमान रखते हैं हम,
खुद की अलग
पहचान रखते हैं हम।
ये धरती मेरी है,
आसमान मेरा नहीं,
अपनी मिट्टी पर
जान रखते हैं हम।

नफरत के इस दौर में भी
दिल में मोहब्बत का
अरमान रखते हैं हम।
अपनी आदत नहीं बदली
सच बोलने की,
होठों पर सदा
सच्चा बयान रखते हैं हम।

राह बदलते नहीं कभी
तूफानों के डर से,
सीने में हौसलों की
उड़ान रखते हैं हम।
भले हर रोज
बदल रही हो दुनिया,
अपनों से जुड़ा हुआ
हिंदुस्तान रखते हैं हम।

दूर दिखाई दे रही है
हमारी मंजिल तो क्या,
कदमों में फिर भी
तूफ़ान रखते हैं हम।
हमेशा इंसान की पहचान
दौलत से नहीं होती,
चरित्र में ही
अपनी शान रखते हैं हम।

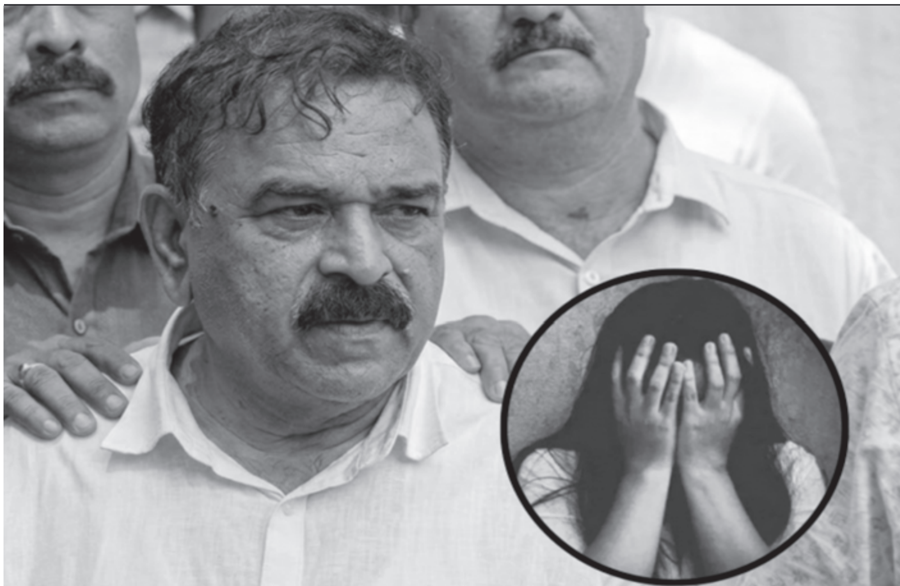

तंत्र के लिबास में लिपटा नारी अस्मत के लुटेरे अशोक खरात

संजय रोकड़े
मुम्बई

भारत में स्त्रियों की आबरू से खेलने और उसे तार– तार करने का चलन कोई नया नही है। यहां आदिकाल से ही महिलाओं के साथ अत्याचार और अनाचार होते आया है। कभी देवदासियों के बहाने ब्राहम्णों द्वारा स्त्रियों के साथ जिस्मानी संबंध बनाए गए तो कभी जातिभेद के चलते अस्मतें लुटी गई। एक लंबे अरसे से बलात्कार की संस्कृति हमारे समाज में चली आ रही है।

आज यही काम भगवाभेष में तथाकथित साधु–संत कर रहे हैं। वे महिलाओं के साथ हिंसा करने में न केवल फक्र महसूस कर रहे हैं बल्कि इसे अपनी मर्दांगी का परिचायक भी मान रहे हैं। हिंदुस्तान में बलात्कार संस्कृति को बढ़ावा देने वाले अनेक ऐसे जालिम और हवसी हुए हैं जिनने ना केवल महिलाओं के मनोबल को कम किया है बल्कि उनकी आत्मा को ठेस पहुंचा कर उनको बेजान भी किया है।

यहां हम महिलाओं की आबरू लुटने के संदर्भ में आम बलात्कारियों की बात नही कर रहे हैं बल्कि साधु–संत के चोले में छिपे उन हरामियों की बात कर रहे हैं जो न केवल मानवता के विरोधी है बल्कि समाज में कुप्रथा के वाहक भी है।

हम यहां जो भी नाम बताने जा रहे हैं ये भी कभी स्त्री देह के साथ अनाचार करने के आरोप से अछूते नही रहे हैं। इनमें सबसे पहला नाम ज़ेहन में जो आता है वो है सिंधी व्यापारी समुदाय से संबंध रखने वाले आसुमल का। इस आसुमल को हम सब बलात्कार के आरोपी आसाराम के रूप में जानते–पहचानते हैं। इसके बाद गुरमीत राम–रहीम का नाम ज़ेहन में आता है।

बलात्कार के आरोपों से तो चंद्रास्वामी, रामपाल, परमहंस नित्यानंद, शंकराचार्य स्वामी जयेंद्र सरस्वती, स्वामी अमृत चैतन्य उर्फ संतोष माधवन, स्वामी रघुवंश पुरी, नित्यानंद स्वामी, स्वामी भीमानंद, कश्मीरी पीर बाबा गुलजार बट उर्फ सैयद गुलजार भी नही बच पाएं हैं।

बलात्कार के आरोप में मध्य प्रदेश का स्वयंभू स्वामी वैराग्यानंद गिरि तो गिरफ्तार तक हो चुका है। हालांकि ये जो ऊपर नाम दर्ज किए हैं उनमें से भी अनेक पुलिस और कोर्ट के हत्थे चढ़ चुके हैं। जेल की हवा भी खा चुके हैं।

अब हम इस फेहरिश्त में पंडित अशोक खरात का जिक्र करें तो वो तो वह इस बलात्कारी संस्कृति का एक अदना सा मुलाजिम है। हालाकि पंडित अशोक पर महाराष्ट्र की अनेक महिलाओं से बलात्कार करने का आरोप है। इस आरोप के चलते ही इस समय महाराष्ट्र में तूफान खड़ा है।

बहरहाल। ये पंडित अशोक की बलात्कार संस्कृति का ऐसा मामला है जो भारत में कहीं भी देखने को मिल जाता है। खासकर बाबाओं के बीच। ऐसे बाबा जिन्हें आस्था के नाम पर बलात्कार करने का हूनर आता है वे कभी भी, कहीं भी, किसी भी महिला को छोड़ते नही हैं।

दरअसल ऐसे बाबाओं में भगवावेश धारण कर बलात्कार करने का जुनून होता है। इनका शगल ही है– धर्म की आड़ में महिलाओं का सम्मोहन कर उनसे जबरन यौन संबंध बनाना। जैसे कि हर साधु–संत का काम है ईश्वर का डर बनाकर धर्म की आड़ में जैसा चाहे वैसा घिनौना काम करना।

पंडित अशोक कुमार एकनाथ खरात ने भी वही किया जो अब तक साधु–संत करते आए हैं। कोई जुदा काम नही किया। इसने भी काले जादू और टोने–टोटकों का एक पूरा मायाजाल फैलाकर तांत्रिक हथकंड़े अपनाएं। मसलन रिमोट–कंट्रोल वाले सांपों के अलावा, लोमड़ी के कान, बाघ की खाल, पॉलिश किए इमली के बीज जैसी तमाम नकली चमकीली चीजों को अपने अपराध का हथियार बनाया।

इन सब वस्तुओं के साथ ही टोना– टोटका भी करता था। इन सब वस्तुओं और कुकृत्यों के सहारे ही वह महिलाओं को अपने जाल में फंसाता था। ध्यान देने वाली बात ये है कि वह इन डरावनी चीजों से ही सिद्ध रत्न बनाने का ढ़ोग करता था और धर्मभिरूओं में डर भर कर उन्हें ऊचें दाम में बेचता था। महिलाओं के इस शिकारी ने भी ईश्वरीय भय को अपना हथियार बनाकर नारियों की अस्मत लुटी।

सच कहें तो वह एक तरह का तांत्रिक शिकारी ही है। इसके पास टोने–टोटकों का पूरा मायाजाल रचा बसा है। जिस तरह से तमाम पाखंड़ी धर्म की आड़ में अंधविश्वास का सहारा लेकर लोगों के साथ हिंसा करते हैं वैसे ही इस पाखंड़ी पंडित अशोक ने भी रिमोट–कंट्रोल वाले नकली सांप जैसी डरावनी वस्तु के सहारे अनेक पीडित महिलाओं को अपने जाल में फंसाया। मौका मिलते ही बारी बारी से उनकी अस्मत लुटी।

मजेदार तो ये है कि इस वहशी दरिंदें के आला दर्जे के वीआइपी भक्तों से भी सीधे संपर्क है। इस पाखंड़ी के वीआइपी भक्तों से न केवल संबंध है बल्कि उनकी काली करतूतें के राज भी है। काली करतूतों का राज कहीं खुल ना जाए उस डर के चलते वीआइपी भक्त भी डरे–सहमें से रहते हैं। घबराते हैं। खासकर महिलाएं। वीआइपी भक्त तो वीआइपी भक्त, राजनीतिक दलों से जुड़े नेता भी अशोक से डरे सहमे और घबराए से रहते हैं।

पर पंडित अशोक की सत्रह मार्च की गिरफ्तारी के बाद से कुछ बदलाव हुआ है। जो लोग डरें सहमें से थे वे कुछ राहत महसूस कर रहे हैं। इस राहत का कारण अशोक के एक से बढकर एक कारनामों का सामने आना हो सकता है।

हालाकि इस बीच तथाकथित बड़े–बडों से अशोक के संपर्को का पर्दाफास हुआ। कह सकते हैं कि उसकी तमाम करतूतें बेनकाब होने लगी है। मसलन, राजनीतिक संपर्क और बलात्कार की तमाम हरकतें। सनसनीखेज कुकृत्य भी।

दरअसल, अशोक के जिन बड़े–बड़े नेताओं से संपर्क होने की बातें सामने आई है उन्ही बड़े–बड़े संपर्कों के चलते वह कानून कायदों को धत्ता बताकर अपनी सरकार,

अपना राज चलाता रहा। निडर और बैखोफ।

ऐसा कोई कानून नही बचा जिसकी उसने धज्जियां ना उड़ाई हो। कानून का निषेध ना किया हो। उल्लंघन न किया हो। पंडित अशोक ने सत्ता शासकों की कमजोरियों को हथियार बनाकर हर एक वो पैंतरा अपनाया जो मानवता के खिलाफ था।

अशोक पर तो कालेजादू के चलते नरबलि तक के आरोप लगे हैं। वो कालेजादू के सहारे ही तो महिलाओं को नरक का भय दिखाता था। इसी जादू के सहारे वह कमजोर महिलाओं को नरक के दरवाजे तक ले जाता था ताकि मारे डर के स्त्रियां अपना सब कुछ सहज और सामान्य तरीके से पेश कर दें। समर्पित कर दें। सौंप दें।

डर का साम्राज्य खड़ा करके वह सीधे–साधे युवा बेरोजगारों को भी अपने चंगुल में फंसाता था। लोगों को नौकरी दिलाने या रोजमर्रा की जिंदगी से जुड़ी परेशानियों से निजात दिलाने के नाम पर गैर कानूनी हरकतें कराता था। खरात ने आम लोगों की मदद के लिए जो जाल बिछाया था, उसकी तमाम सेवाओं में डर और पाखंड शामिल था। पर वक्त के साथ पंडित अशोक का पाखंड भी धराशायी हो गया। राज खुल गया।

आपको बता दे कि जिस पीडित महिला की शिकायत पर पंडित अशोक की कारगुजारियों का राज खुला और गिरफ्तारी हुई, वह भी आम घटना जैसी ही है। बताते हैं कि जिस महिला ने अशोक की शिकायत दर्ज की थी वह खुद अपनी शादीशुदा जिंदगी के बारे में सलाह लेने गई थी। मगर वह भी उसके हवस की शिकार बन गई। ये महिला अशोक की हवस के घुटन में मरे जा रही थी। वह हवस के घुटन भरे जाल से निकलना चाहती थी।

काबिलेगौर हो कि ये महिला साल 2022 से ही उसकी हवस का शिकार बन गई थी। पंडित अशोक ने लगातार तीन साल तक उसे अपनी वासना का शिकार बनाया। खुद को अलौकिक शक्तियों वाला बाबा बताकर महिला को धमकाया और लगातार दैहिक शोषण करता रहा। महिला के विरोध करने पर पति की मौत और शादी टूट जाने जैसा डर बनाकर रेप करता रहा।

पंडित अशोक इतना शातिर बदमाश है कि जब उसकी हरकतों का राज पुलिस के सामने आने लगा तो वह पुलिस को भी अनेक मौकों पर गुमराह करते दिखाई दिया। याद रहे कि फरवरी में खरात के ही कहने पर उसके जाल में फंसी एक महिला ने पुलिस में झूठी शिकायत दर्ज कराई थी ताकि पुलिस का ध्यान भटकाया जा सके।

पर पुलिस को उसकी सब चालबाजियां समझ आने लगी थीं। पुलिस को यह विश्वास होने लगा था कि पंडित अशोक ही शातिर है। इसी के चलते पुलिस उसके खिलाफ सबूत इकट्ठा करने में जुट गई थी। मगर इस मामले में महाराष्ट्र की तर्कवादी संस्था अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति करीब–करीब दो दशक से खरात की हरकतों पर नजरें जमाएं हुई थी।

खुद के ईश्वर से सीधे संपर्क होने की बात करने वाला यह शातिर वैसे तो दिसंबर माह से ही लोगों की नजर में चढने लग गया था, पर जब भेद खुलने का सिलसिला शुरू होने लगा तो खुद ने पुलिस में एक शिकायत दर्ज कराई कि कुछ लोग उसके अश्लील वीडियो होने का दावा करके उससे पैसे वसूलने की कोशिश कर रहे हैं।

मजेदार बात तो ये है कि अशोक के ऑफिस में काम करने वाले लडके नीरज जाधव ने ही नासिक के कनाडा कॉर्नर स्थित दफ्तर में खुफिया कैमरे लगा दिए थे। नीरज जाधव ने अशोक की निगरानी का यह काम तब शुरू कर दिया था जब उसकी एक परिचित गर्भवती महिला ने उसे बताया कि खरात ने उसके साथ यौन उत्पीडन किया।

सच पूछा जाए तो कैमरें की निगरानी में आने के बाद से ही पंडित अशोक खरात की काली करतूतों और हरकतें सामने आने लगी थीं। इसके बाद ही उसके तांत्रिक पिटारे से अपराध की कड़ियां एक–एक कर खुलने लगी थीं।

इसके बाद जब एक गवाह सामने आया तो खरात की मुश्किलें और भी बढने लगी। गवाह के पास खरात और उससे संबंधित आठ महिलाओं के 35 वीडियो थे जो सामने आ गए।

इन वीडियो की पुख्ता जांच होने पर पुलिस ने खरात पर शिकंजा कसना शुरू कर दिया। देश छोडकर भागने पर रोक लगा दी। इसके साथ ही जांच के लिए एक विशेष जांच दल याने एसआइटी का गठन कर दिया। अब पंडित अशोक की गिरफ्तारी के साथ ही पीडितों के बयान भी होने लगे। मतलब साफ है कि एक गवाह के सामने आने के बाद से ही पंडित खरात के अपराध का कीला ध्वस्त होने लगा।

बहरहाल। अब आमजन में चर्चाएं इस बात को लेकर गर्म है कि जब अशोक अपने वीआइपी संबंधों के राज खोलेगा तो सत्ता के गलियारों में इसका क्या असर होगा। वैसे तो अशोक की पहली शिकारी एनसीपी महिला शाखा की अध्यक्ष रूपाली चाकणकर बन चुकी है। वह महाराष्ट्र की राज्य महिला आयोग प्रमुख थी।

रूपाली, पंडित अशोक से संपर्क रखने वाली वही वीआइपी है जो उसके पांव धोती थी। रूपाली तस्वीरों और वीडियो में पूरी श्रद्धा में डूबी नजर आती थी। रूपाली ने तो खरात की तुलना भगवान विठोबा तक से कर दी थी। खैर रूपाली तो उसके वीआईपी संपर्कों में एक प्यादी भर मानी जाती है। इससे भी बड़े–बड़े उसके संपर्क हैं।

विपक्षी दल तो अशोक के वीआईपी संपर्कों में सत्ताधारी महायुति के नेताओं पर भी उंगलियां उठा रहा है। शिवसेना (यूबीटी) की नेता सुषमा अंधारे ने तो पूर्व शिक्षा मंत्री दीपक केसरकर के अशोक के साथ संबंधों की जांच तक की मांग कर दी है। आपकी जानकारी कि लिए बता दें कि दीपक केसरकर वर्तमान उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे की शिवसेना में हैं। चिंताजनक बात तो यह है कि अंधारे ने उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के साथ भी खरात के संबंधों की बात कही है।

हालाकि इन आरोपों को लेकर नेताओं के बीच राजनीति भी तेज होने लगी है। राज्य के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस एक तरफ तो यह कहते है कि किसी से जान–पहचान होना ही सिर्फ कोई गुनाह नहीं है। वे कहते हैं कि इसलिए किसी पर केस नहीं चलाया जा सकता है कि खरात के साथ उनकी कोई फोटो है।

पर सच तो ये है कि फडणवीस के ऐसा कहने के पीछे मजबूरी है। कोई गहरा राज है। दरअसल, खरात के साथ भाजपा के भी अनेक बड़े नेताओं के साथ संबंध है। फोटो हैं। इनमें खुद फडणवीस से लेकर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह तक शामिल हैं। साल 2018 में भाजपा के एक मंत्री ने तो खरात के ट्रस्ट को धन तक दिया था। साल 2022 में कैबिनेट के एक बड़े मंत्री ने पंडित अशोक के मंदिर का अचानक दौरा भी किया था।

उद्धव ठाकरे की सरकार ने तो तमाम नियम–कायदों को दरकिनार कर अशोक को एक बांध से पानी दिया था। हालाकि अशोक से संबंधों के मामलें में सब एक दूसरे को बेकसूर बता रहे है पर सच तो अभी परदे के पीछे ही छुपा है। कह सकते है कि अभी तो हमाम में सब नंगें ही है। शायद इसी के चलते सच्चाई से अब तक पर्दा नही उठ पाया है। या जानबुझकर पर्दा नही हटने का प्रपंच रचा गया।

सच जो भी होगा वो देर–सवेर सामने आएगा ही पर इस बीच सीएम फड़णवीस अपने ही सहयोगियों पर मानसिक दबाव बनाने में पीछे नही हट रहे हैं। वे कह रहे हैं कि हम किसी को नहीं बचाएंगे। पर सवाल तो ये भी उठ रहे कि आखिर अशोक के साथ संबंध किससे नही थे।

क्या सत्ता शासक। क्या विपक्ष। सबके संबंध पाखंडी पंडित अशोक के साथ थे। फिर भी हर कोई दूध का धुला साबित करने पर क्यूं तुला है। अब देखना ये है कि वक्त के साथ–साथ अशोक क्या क्या राज खोलता है। किस नेता को अपना शिकार बनाता है। अशोक किसी खास नेता को नंगा न कर दे तब तक इन सफेद बगुलों की कारस्तानी का मजा लिजीए।

इसके साथ ही अपनी मां, बहन, बेटियों और बहुओं को साधुवेश में छुपे पंडित अशोक जैसे बलात्कारियों और दरिंदों से महफूज रखें। ■

₹6.78 की थाली : क्या देश का भविष्य इतना सस्ता है

डॉ. सत्यवान सौरभ
वरीय विचारक एवं स्तंभकार, आकाशवाणी व टीवी पेनालिस्ट, भिवानी, (हरियाणा)

भारत में शिक्षा को राष्ट्र–निर्माण की सबसे मजबूत नींव माना जाता है। बार–बार यह कहा जाता है कि बच्चे ही देश का भविष्य हैं और उनके विकास में किया गया निवेश ही सच्चा विकास है। लेकिन जब हम सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले करोड़ों बच्चों के लिए प्रति विद्यार्थी प्रतिदिन मात्र ₹6.78 (प्राइमरी) और ₹10.17 (अपर प्राइमरी) की कुकिंग कॉस्ट पर नजर डालते हैं, तो यह आदर्शवाद कठोर यथार्थ से टकराता हुआ दिखाई देता है।

स्वाभाविक रूप से यह प्रश्न उठता है–क्या वाकई इतने पैसों में बच्चों को पौष्टिक, पर्याप्त और सम्मानजनक भोजन उपलब्ध कराया जा सकता है, या फिर हम अनजाने में बच्चों के भविष्य के साथ एक सामूहिक मजाक कर रहे हैं?

मध्याह्न भोजन–योजना भारत की सबसे महत्वाकांक्षी और प्रभावशाली सामाजिक योजनाओं में से एक रही है। इसका उद्देश्य केवल बच्चों की भूख मिटाना नहीं था, बल्कि कुपोषण से लड़ना, विद्यालयों में उपस्थिति बढ़ाना और सामाजिक समानता को बढ़ावा देना भी था। विशेष रूप से गरीब, दलित, आदिवासी और वंचित वर्ग के बच्चों के लिए यह योजना कई बार दिन का एकमात्र सुनिश्चित भोजन बन जाती है। ऐसे में इस योजना के लिए तय की गई लागत का यथार्थवादी, संवेदनशील और मानवीय होना अत्यंत आवश्यक है।

आज का आर्थिक परिदृश्य किसी से छिपा नहीं है। महंगाई लगातार बढ़ रही है। सब्जियों के दाम रोज बदलते हैं, दालें और तेल आम आदमी की थाली से दूर होते जा रहे हैं, गैस सिलेंडर की कीमत हर घर को परेशान कर रही है और दूध जैसी बुनियादी पोषण सामग्री भी लगातार महंगी हो रही है। ऐसे में यह मान लेना कि कुछ ही रुपयों में एक बच्चे के लिए संतुलित और गुणवत्तापूर्ण भोजन तैयार किया जा सकता है, जमीनी सच्चाई से कोसों दूर प्रतीत होता है।

सरकारी आदेशों और दिशा–निर्देशों में कुकिंग कॉस्ट का जो विभाजन दिखाया जाता है, वह कागज पर भले ही संतुलित लगे, लेकिन व्यवहार में यह लगभग असंभव चुनौती बन जाता है। सब्जी, दाल, दूध, मसाले, तेल, गैस और अन्य आवश्यक खर्चों को जोड़ दिया जाए, तो तय राशि कई बार पहले ही दिन समाप्त हो जाती है। परिणामस्वरूप विद्यालयों को या तो भोजन की गुणवत्ता से समझौता करना पड़ता है, या मात्रा से– और कई बार दोनों से।

इसका सबसे बड़ा नुकसान बच्चों को उठाना पड़ता है। भोजन में विविधता की कमी, पोषक–तत्वों का अभाव और स्वादहीनता बच्चों की रुचि को भी प्रभावित करती है। कई बच्चे भोजन पूरा नहीं करते, कुछ की स्कूल में उपस्थिति कम होने लगती है और कुछ धीरे–धीरे पढ़ाई से भी कटने लगते हैं। यह प्रभाव तुरंत आँकड़ों में नहीं दिखता, लेकिन लंबे समय में यह बच्चों की सीखने की क्षमता, स्वास्थ्य और आत्मविश्वास को गहराई से प्रभावित करता है।

इस पूरी व्यवस्था का एक और अक्सर अनदेखा किया जाने वाला पहलू है–रसोइये और विद्यालय स्टाफ। बेहद कम मानदेय में काम करने वाले रसोइयों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे हर दिन सैकड़ों बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण भोजन तैयार करें। कई बार उन्हें स्थानीय स्तर पर उधार लेना पड़ता है, अपनी जेब से खर्च करना पड़ता है या फिर शिकायतों और आलोचनाओं का सामना करना पड़ता है। यह स्थिति न केवल अन्यायपूर्ण है, बल्कि योजना की मूल भावना के भी विरुद्ध है।

विडंबना यह है कि एक ओर हम "सुपोषित भारत", "नई शिक्षा नीति" और "मानव संसाधन विकास" जैसे बड़े–बड़े शब्दों का प्रयोग करते हैं, वहीं दूसरी ओर बच्चों के भोजन के लिए बजट तय करते समय अत्यधिक कंजूसी दिखाई देती है। क्या यह स्पष्ट विरोधाभास नहीं है? क्या हम सचमुच मानते हैं कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, गुणवत्तापूर्ण पोषण के बिना संभव है?

शोध और अनुभव–दोनों ही यह सिद्ध करते हैं कि शिक्षा और पोषण का गहरा संबंध है। भूखा या कुपोषित बच्चा न तो ध्यान केंद्रित कर सकता है और न ही सीखने में रुचि ले सकता है। यदि मध्याह्न भोजन–योजना कमजोर होगी, तो उसका सीधा असर सीखने के स्तर, उपस्थिति और ड्रॉपआउट दर पर पड़ेगा। यह केवल एक कल्याणकारी योजना का प्रश्न नहीं है, बल्कि राष्ट्रीय विकास और सामाजिक न्याय का मुद्दा है।

एक और गंभीर समस्या यह है कि कुकिंग कॉस्ट का निर्धारण अक्सर एकरूपता के आधार पर किया जाता है, जबकि देश के अलग–अलग हिस्सों में महंगाई और बाजार दरें अलग–अलग हैं। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में लागत का अंतर स्पष्ट है, फिर भी तय राशि लगभग समान रहती है। इससे कई क्षेत्रों में विद्यालयों के लिए इस योजना को प्रभावी ढंग से लागू करना और भी कठिन हो जाता है।

समय की मांग है कि सरकारें इस विषय को केवल प्रशासनिक औपचारिकता के रूप में न देखें, बल्कि इसे नैतिक और मानवीय जिम्मेदारी के रूप में स्वीकार करें। कुकिंग कॉस्ट का नियमित और स्वचालित पुनर्मूल्यांकन किया जाना चाहिए, जिसे महंगाई दर और स्थानीय बाजार मूल्यों से जोड़ा जाए। साथ ही निगरानी व्यवस्था को मजबूत किया जाए, ताकि बढ़ी हुई राशि वास्तव में बच्चों के भोजन पर ही खर्च हो।

यह भी आवश्यक है कि जमीनी स्तर पर काम करने वाले शिक्षकों, प्रधानाध्यापकों और रसोइयों की आवाज को नीति–निर्धारण की प्रक्रिया में शामिल किया जाए। वे रोज इस व्यवस्था की वास्तविक चुनौतियों का सामना करते हैं और उनके अनुभव किसी भी फाइल नोटिंग से कहीं अधिक मूल्यवान हैं।

सरकारों को यह समझना होगा कि मध्याह्न भोजन–योजना कोई बोझ नहीं, बल्कि भविष्य में किया गया निवेश है। आज अगर बच्चों की थाली मजबूत होगी, तो कल देश की अर्थव्यवस्था, समाज और लोकतंत्र भी मजबूत होंगे। लेकिन यदि हम आज भी बच्चों के भोजन को खर्च समझकर न्यूनतम बजट में चलाने की सोच रखते हैं, तो इसके दुष्परिणाम आने वाली पीढ़ियों को भुगतने पड़ेंगे।

अंततः प्रश्न वही है : क्या ₹6.78 या ₹10.17 में बच्चों का पोषण वास्तव में संभव है, या यह केवल आंकड़ों का खेल बनकर रह गया है? अब भी समय है कि नीति–निर्माता इस सच्चाई को स्वीकार करें और साहसिक निर्णय लें। क्योंकि यह बहस केवल भोजन की नहीं है : यह बच्चों के सम्मान, स्वास्थ्य और देश के भविष्य की है। ■

मधेसी के बेटे पहली बार बने नेपाल के प्रधानमंत्री

कौन हैं बालेन शाह ?

राहुल गुप्ता
ब्यूरो प्रमुख 'लोकचिन्तन' परसा (नेपाल)

मधेश प्रदेश के महोत्तरी जिले के एकडरा गांव पालिका वार्ड नंबर 1, एकडरा को अपना पुश्तैनी गांव मानने वाले बालेन शाह नेपाल के 43वें प्रधानमंत्री बने हैं।

काठमांडू के नरदेवी में विक्रम संवत 2047 बैशाख 14 को जन्मे शाह का परिवार वर्तमान में काठमांडू के तीनकुने गैहीगांव में रहता है।

शुक्रवार को राष्ट्रपति भवन शीतल निवास में राष्ट्रपति रामचंद्र पौडेल द्वारा शपथ दिलाए जाने के बाद बालेन नेपाल के 43वें प्रधानमंत्री बने।

फागुन 21 को हुए प्रतिनिधि सभा चुनाव में झापा क्षेत्र नंबर 5 से राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी (रास्वपा) के उम्मीदवार बने बालेन ने पूर्व प्रधानमंत्री और नेकपा एमाले के अध्यक्ष केपी शर्मा ओली को 50 हजार से अधिक मतों से हराकर जीत हासिल की।

इससे पहले 2079 के चुनाव में स्वतंत्र उम्मीदवार के रूप में बालेन काठमांडू महानगरपालिका के मेयर चुने गए थे।

कौन हैं बालेन शाह?

बालेन शाह का असली नाम बालेन्द्र शाह है। अपने संगीत करियर के दौरान उन्होंने "बालेन" नाम से पहचान बनाई। बाद में मेयर चुनाव के दौरान भी वे इसी नाम से प्रसिद्ध हुए। उनका जन्म 14 बैशाख 2047 को काठमांडू के नरदेवी में हुआ था। वर्तमान में वे तीनकुने, गैह्रीगांव के निवासी हैं।

बालेन्द्र शाह के पिता आयुर्वेदिक डॉक्टर थे। स्वर्गीय डॉ. राम नारायण शाह और ध्रुवा देवी शाह के पुत्र बालेन्द्र का पुश्तैनी घर मधेश प्रदेश के महोत्तरी जिले में है।

उन्होंने एसएलसी तक की पढ़ाई काठमांडू के नरदेवी स्थित जलजला स्कूल से की। उच्च माध्यमिक शिक्षा तीनकुने के वीएस निकेतन से प्राप्त की। इसके बाद व्हाइट हाउस इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी से सिविल इंजीनियरिंग में स्नातक और भारत के कर्नाटक स्थित विश्वेश्वरय्या प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय से स्ट्रक्चरल इंजीनियरिंग में स्नातकोत्तर किया। वे सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहे हैं।

2072 के भूकंप के बाद वे देश के विभिन्न हिस्सों में पुनर्निर्माण कार्यों में शामिल हुए। उन्होंने "बालेन कंसल्टिंग एंड कंस्ट्रक्शन प्रा. लि." नामक कंपनी भी स्थापित की। भूकंप और कोविड महामारी के दौरान काम करते हुए उन्होंने महसूस किया कि नेतृत्व खुद करना जरूरी है, जिसके बाद उन्होंने मेयर पद के लिए चुनाव लड़ा।

बालेन शाह एक रैप गायक भी हैं। वे नेपाली रैप बैटल के दूसरे लीग के विजेता रह चुके हैं और लंबे समय से इस क्षेत्र में सक्रिय हैं। उन्होंने 2012 में अपना पहला गीत "सड़क बालक" गाया, जिसे उन्होंने कक्षा 9 में लिखा था। वे बचपन से ही संगीत और कविता में रुचि रखते थे। उनके देश–विदेश में भी कई प्रशंसक हैं।

उन्होंने 2074 के स्थानीय चुनाव के समय ही राजनीति में आने का विचार बनाया था। उस समय उनकी उम्र 27 वर्ष थी। हालांकि बाद में वे चुनाव नहीं लड़े। उन्होंने फेसबुक पर लिखा था कि वे भविष्य में खुद चुनाव लड़ेंगे और देश का विकास करेंगे : और आज वे वही कर रहे हैं।

बालेन्द्र एक समृद्ध परिवार से आते हैं। वे कम उम्र में ही आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो गए थे। 25 वर्ष की उम्र में उन्होंने अपनी कमाई से कार खरीदी। उनके पास पुश्तैनी संपत्ति भी है और उन्होंने रैप व इंजीनियरिंग से अच्छी कमाई की है। उनके दादा अपने गांव के जमींदार थे।

बालेन्द्र शाह ने सबीना काफ्ले से विवाह किया है, जो पेशे से जनस्वास्थ्यकर्मी हैं। उनके बड़े भाई एसीसीए हैं। उनका पूरा परिवार पेशेवर और अपने–अपने क्षेत्र में सफल है। बचपन से साहित्य में रुचि रखने वाले बालेन कविता भी लिखा करते थे अर्थात वे एक कवि भी हैं। ■

सारण में नए डिग्री कॉलेज खुलने से ग्रामीण क्षेत्रों में उच्च शिक्षा को लगेंगे पंख
जिले में 24 नए कॉलेज खोलने की युद्ध स्तर पर चल रही तैयारी

डॉ॰ सुनील प्रसाद
(सहायक प्राध्यापक, राजेन्द्र कॉलेज, छपरा)
ब्यूरो प्रमुख 'लोकचिन्तन' सारण (छपरा)

गंगा, गंडक और घाघरा नदियों से घिरे सारण की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं शैक्षणिक विरासत अत्यंत गौरवपूर्ण रही है। यह धरती महान साहित्यकारों और स्वतंत्रता सेनानियों की जननी है। देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद, कौमी एकता के प्रतीक मौलाना मजहरुल हक, भोजपुरी– साहित्य को नई ऊंचाइयों पर ले जाने वाले भिखारी ठाकुर, 'दूसरी आजादी' के प्रणेता लोकनायक जयप्रकाश नारायण और प्रख्यात संगीत साधक महेंद्र मिश्र जैसी महान विभूतियों की जन्म एवं कर्मस्थली रहा यह संपूर्ण क्षेत्र इतिहास, धर्म और शिक्षा का एक अनूठा संगम है, जो भारतीय संस्कृति को गहराई से संजोए हुए है।

बिहार सरकार द्वारा राज्य में उच्च शिक्षा को बढ़ावा देने और दूरदराज के क्षेत्रों में शिक्षा का विस्तार करने के लिए सारण प्रमंडल सहित पूरे राज्य में 211 नए डिग्री कॉलेजों की स्थापना की जा रही है। इसी कड़ी में सारण जिले के 24 नए डिग्री कॉलेजों में आगामी जुलाई सत्र से पढ़ाई शुरू करने हेतु, राज्य सरकार के निर्देश पर जयप्रकाश विश्वविद्यालय (जेपी विवि) द्वारा युद्ध स्तर पर तैयारियां प्रारंभ कर दी गई हैं। कुलपति प्रो. परमेंद्र कुमार वाजपेयी के निर्देशन में एक विशेष कमेटी का गठन कर सभी नए कॉलेजों में प्रभारी प्राचार्यों की नियुक्ति की प्रक्रिया भी शुरू कर दी गई है।

बिहार सरकार की 'सात निश्चय–3' योजना के चौथे निश्चय 'उन्नत शिक्षा– उज्जवल भविष्य' के तहत राज्य के उन प्रखंडों को प्राथमिकता दी जा रही है, जहाँ वर्तमान में एक भी डिग्री कॉलेज नहीं हैं। सरकार के इस कदम से सारण जिले के उन हजारों छात्र–छात्राओं (विशेषकर छात्राओं) को सीधा लाभ होगा, जिन्हें स्नातक स्तर की पढ़ाई के लिए मीलों दूर जिला मुख्यालय या अन्य शहरों का रुख करना पड़ता था।

सारण जिले के 9 प्रमुख प्रखंडों– एकमा, लहलादपुर, मकेर, इसुआपुर, मढ़ौरा, मशरक, पानापुर, तरैया और दरियापुर– में कॉलेज खोलने की प्रक्रिया अत्यंत तेज है। इन प्रखंडों में इसी साल जुलाई से स्नातक स्तर की कक्षाएं अस्थायी भवनों या स्थानीय साधन–संपन्न स्कूलों में शुरू करने की तैयारी की गई है।

प्रथम चरण की मुख्य बातें :

सत्र की शुरुआत : आगामी जुलाई महीने से।

संकाय : प्रथम चरण में केवल कला संकाय (Arts Faculty) की पढ़ाई शुरू होगी।

विषय : इसके तहत कुल 6 विषयों की पढ़ाई होगी– हिंदी, अंग्रेजी, राजनीति विज्ञान, इतिहास, अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र।

बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की दूरदर्शी सोच को धरातल पर उतारते हुए, सरकार का ग्रामीण क्षेत्रों में उच्च शिक्षा का अलख जगाने का यह प्रयास एक ऐतिहासिक शैक्षणिक कदम साबित होगा, जिससे आने वाले समय में खासकर छात्राओं को आगे बढ़ने के असीम अवसर मिलेंगे।■

केसरिया (पूर्वी चम्पारण) में हुई विश्व के सबसे बड़े शिवलिंग की स्थापना

डॉ॰ नम्रता कुमारी
(सहायक प्राध्यापक, बी.एन.कॉलेज, पटना)
ब्यूरो प्रमुख 'लोकचिन्तन' पूर्वी चम्पारण।

पूर्वी चंपारण जिले के केसरिया (कल्याणपुर प्रखंड) में स्थित विराट रामायण मंदिर परिसर में पिछले दिनों भव्य धार्मिक अनुष्ठान के साथ विश्व के सबसे बड़े शिवलिंग की स्थापना संपन्न हुई। इस ऐतिहासिक अवसर पर हजारों श्रद्धालु, संत–महात्मा और गणमान्य लोग उपस्थित रहे। यह शिवलिंग लगभग 33 फीट ऊंचा तथा अत्यंत विशाल परिधि वाला है, जिसे एक ही काले ग्रेनाइट पत्थर (Mono & crystalline stone) से तराशा गया है। लगभग 210 टन

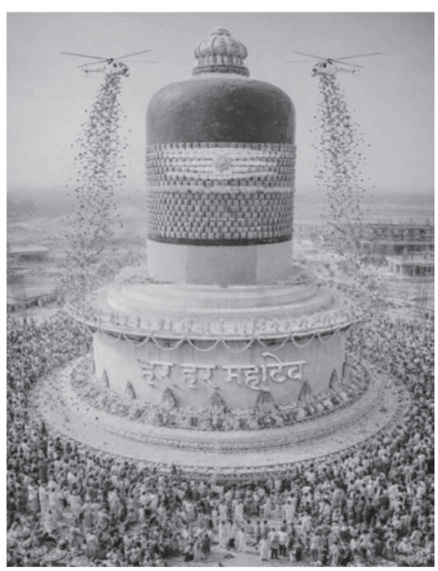

वजनी इस शिवलिंग को विशेष तकनीक के माध्यम से तमिलनाडु से बिहार लाया गया। इसे लाने के लिए 96 पहियों वाले एक विशेष ट्रक का उपयोग किया गया, जिसने करीब 2500 किलोमीटर की लंबी यात्रा तय की।

स्थापना समारोह 17 जनवरी 2026 को वैदिक मंत्रोच्चार, पूजा–अर्चना और धार्मिक विधि–विधान के साथ संपन्न हुआ। इस दौरान पूरे क्षेत्र में भक्ति और उत्साह का अद्भुत माहौल देखने को मिला।

यह शिवलिंग विराट रामायण मंदिर परियोजना का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसे भविष्य में विश्व के सबसे भव्य मंदिरों में गिना जाएगा। इस स्थापना से न केवल धार्मिक आस्था को नई ऊंचाई मिली है, बल्कि पूर्वी चंपारण की एक प्रमुख धार्मिक पर्यटन स्थल के रूप में पहचान मिलने की संभावना भी बढ़ गई है।

विश्व के सबसे बड़े शिवलिंग की यह स्थापना बिहार के लिए गौरव का विषय है। यह न केवल श्रद्धा और आस्था का प्रतीक है, बल्कि भारतीय कला, संस्कृति और आधुनिक इंजीनियरिंग कौशल का भी एक अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत करता है। अब केसरिया बौद्ध स्तूप के साथ–साथ यहाँ स्थापित यह महा–शिवलिंग भी केसरिया को विश्व पटल पर एक नई और विशिष्ट पहचान दिला रहा है।■

जेल से रिहाई के बाद भी लद्दाख में सोनम वांगचुक द्वारा संविधान की छठी अनुसूची के लिए आंदोलन जारी

ज्योति सिंह
ब्यूरो प्रमुख 'लोकचिन्तन' लेह–लद्दाख।

लेह–लद्दाख की जनता और प्रसिद्ध पर्यावरणविद् और शिक्षा सुधारक सोनम वांगचुक द्वारा 2025 में पदयात्रा और शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन के माध्यम से सरकार से बातचीत करने की जो लगातार मांग हो रही थी उसके तहत लद्दाख की अद्वितीय संस्कृति पर्यावरण और संसाधनों की रक्षा करना और वहां के निवासियों के लिए संवैधानिक और प्रशासनिक अधिकार सुरक्षित करना साथ ही वहां के नागरिकों की मांगे थी इनको लेकर 2026 की जो स्थिति है उसमें यहां के नागरिक और लीडर का कहना है कि सितंबर 2025 में हिरासत में लिए जाने के बाद ''14 मार्च 2026'' को रिहा होने के बाद उन्होंने सरकार के साथ अर्थपूर्ण बातचीत (meaningful dialogue) का आवाहन किया।

लेकिन साथ ही उन्होंने स्पष्ट किया कि अगर इस बार हमारी मांगे पूरी नहीं हुई तो हम शांत नहीं बैठेंगे हमारा उग्र रूप 'अहिंसक आंदोलन' के लिए सरकार तैयार रहे।

यह आंदोलन 2021 से किया जा रहा है इसमें सोनम वांगचुक अनशन पर बैठकर सरकार से अपनी मांगों को लेकर सामने आते रहे किंतु वर्तमान स्थिति अप्रैल 2026 और इससे पहले सितंबर 2025 में उन्हें हिंसक विरोध प्रदर्शनों में देखा गया और अपनी बातों को लेकर आज भी वह सरकार से निर्णय हेतु अडीग है।।

संविधानिक सुरक्षा की मांग लद्दाख के लोग और सोनम वांगचुक चाहते हैं कि लद्दाख को संविधान की छठवीं अनुसूची में शामिल किया जाए क्योंकि लद्दाख में 97ः से अधिक आदिवासी आबादी है, वे अपनी अधिकारों की रक्षा के लिए इस सूची के तहत अपने को सुरक्षित करना चाहते हैं।

इसके साथ ही संस्कृति और पर्यावरण संरक्षण के सन्दर्भ में कहना है कि, लद्दाख की नाजुक पारिस्थितिकी (पर्यावरण) ग्लेशियरों अनूठी संस्कृति और आदिवासी पहचान को बड़े उद्योगों और अनियंत्रित पर्यटन से बचाने के लिए जरूरी पहल किया जाए।

स्वायत जिला परिषदें– छठी अनुसूची के तहत, लद्दाख में स्वायत जिला परिषद का गठन किया जाए, जिससे स्थानीय लोगों को अपनी भूमि, वनों, शिक्षा और सामाजिक रीति–रिवाजों और कानून बनाने का स्वयं अधिकार हो।

इसके साथ ही भाजपा सरकार को फटकार लगाते हुए वांगचुक ने कहा, है 2019–20 में उन्होंने वादा किया था उसे आज निभाने से क्यों पीछे हट रहे हैं ?

भाजपा ने 2020 की पहाड़ी परिषद चुनाव में लद्दाख को छठी अनुसूची में शामिल करने का वादा किया था। और इसमें कहा था कि लद्दाख एक केंद्र शासित प्रदेश (UT) से पूर्ण राज्य का दर्जा प्राप्त करेगा ताकि उसके पास अपनी विधानसभा हो।

लोकसभा सीट में और कारगिल के लिए अलग–अलग संसदीय सीट भी दिया जाएगा।

स्थानीय युवाओं के लिए नौकरियों में आरक्षण की भी छूट दी जाएगी।

सोनम वांगचुक ने इन मांगों के समर्थन में 2024 में 21 दिनों का जलवायु उपवास (क्लाइमेट फास्ट) भी किया था।

उन्होंने दिल्ली तक पदयात्रा के दौरान 'दल्ली चलो' का भी नेतृत्व किया और केंद्र सरकार से बातचीत फिर से शुरू करने की मांग की।

इन सभी के बाद वांगचुक का स्पष्ट कहना है की छठी अनुसूची लद्दाख के अस्तित्व पर्यावरण पहचान की सुरक्षा के लिए जरूरी है वह चाहते हैं कि लद्दाख के लोगों को दिल्ली से नहीं बल्कि लेह और कारगिल से अपना शासन चलाने का अधिकार मिले।■

स्काउट-गाइड जम्बूरी: वंचित बच्चों की आह के बीच बिछा दिखावे का मेला

अनीता साइलेस
ब्यूरो प्रमुख 'लोकचिन्तन'
आजमगढ़ मंडल (उत्तर प्रदेश)

लखनऊ में आयोजित स्काउट–गाइड जम्बूरी की तस्वीरों ने एक कड़वी सच्चाई सामने ला दी– स्काउटर, गाइडर और ट्रेनरों का ऐसा जमावड़ा मानो चापलूसों की पूरी सेना एक जगह जुट आयी हो। सिद्धांत, चरित्र– निर्माण और भाईचारे की बात दूर–दूर तक दिखाई नहीं देती। ऐसा लगता था मानो हर कोई अपना–अपना उल्लू सीधा करने में लगा हो।

बेडेन–पावेल की वह आत्मा, जिसने जीवन भर विश्वभाईचारे और सेवा–भाव को जगाने का काम किया, शायद आज कहीं आंसू बहा रही होगी। जिन मूल सिद्धांतों पर संगठन खड़ा था, उनका एक बार भी जिक्र नहीं– यही हमारी आदत है। जो हमें पहचान देता है, उसे ही हम जड़ से काट देते हैं; और फिर आश्चर्य करते हैं कि हम आगे क्यों नहीं बढ़ते।

धीरे–धीरे इस पवित्र संस्था पर प्राइवेट समूहों का कब्ज़ा हो गया। वही लोग आगे नज़र आए, जबकि जिन गरीब बच्चों के लिए यह पूरी व्यवस्था है, उनका कहीं कोई नामोनिशान नहीं। सरकार हर साल वंचित बच्चों को भागीदारी के लिए बजट देती है, ताकि वे सरकारी खर्च पर प्रतिभाग कर सकें; पर हुआ क्या?

प्राइवेट लोग अपने खर्च से कपड़े खरीदकर चले गए, और जो सरकारी राशि गरीब बच्चों के लिए थी, वही जिले से जिले और प्रदेश से प्रदेश में 'भेज दी गई'– बस कागज़ों पर। और जो आयी उसका बंदरबांट हो गया ऐसे में भैय्या जै कैसे नहीं निकलेगी?

यह जम्बूरी नहीं थी, वंचित बच्चों की चिता पर लग चुका एक मेला था।

बच्चों की आंखों में सूनी नमी थी– न कोई हाथ पकड़ने वाला, न कोई आवाज़ उठाने वाला।

प्रदेश और जिला दोनों संस्थाओं को दया न आयी। मंच पर लम्बे–लम्बे भाषण देने वाले लोग– सरकारी अधिकारी, शिक्षक नेता– सब बच्चों के अधिकार की लड़ाई लड़ने में ऐसे मौन हो जाते हैं, जैसे यह मुद्दा उनका नहीं।

अपनी पेंशन और अपने लाभ के लिए आंदोलन करने वाले, बच्चों के हक की बात आने पर इतने शांत क्यों हो जाते हैं?

यही बच्चों की आह है जो आज हमारे समाज के कानूनों में दिखाई देती है।

अब भी समय है– बच्चों को उनका अधिकार दिलाया जाए। तभी भारत की तस्वीर बदलेगी।

अन्यथा, हम आने वाली पीढ़ी को मानसिक गुलाम और स्वार्थी नागरिक बनाने की दिशा में धकेलते रहेंगे।

पार्टी के नेता भी सवाल नहीं करते कि सरकारी पैसा सही जगह लगा या किसी की जेब में।

देश को सुधारने की बात करने वाले– सांसद, विधायक बनने की इच्छा रखने वाले जब गरीब बच्चों का न्याय नहीं दिला पाते, तो किस लोकतंत्र का गर्व किया जाए?

अन्याय आपके समाज के ही लोग कर रहे हैं, क्योंकि उन्हें इन बच्चों पर राज करना है, न कि उन्हें ऊपर उठाना।

अब वक्त है– इस अन्याय को रोका जाए, और उन बच्चों की पुकार सुनी जाए जिनके सपनों को रौंदकर हम जश्न मनाते फिरते हैं। आखिर कैसे? ■

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के युग में युवाओं का नैतिक संकट

संजीत कुमार
निदेशक, गांधी स्मृति और दर्शन समिति
(राजघाट, नई दिल्ली)

तकनीकी प्रगति, डिजिटल संस्कृति और मानवीय मूल्यों की चुनौतियाँ

वर्तमान समय विज्ञान, तकनीक और डिजिटल क्रांति का युग है। मानव सभ्यता ने जितनी तीव्र गति से विकास पिछले कुछ दशकों में किया है, उतना शायद पूरे इतिहास में कभी नहीं हुआ। इंटरनेट, स्मार्टफोन, सोशल मीडिया, रोबोटिक्स और Artificial Intelligence ने जीवन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है। शिक्षा, चिकित्सा, व्यापार, संचार, प्रशासन, कला और मनोरंजन– सभी क्षेत्रों में तकनीक ने नए आयाम स्थापित किए हैं। आज का युवा इस परिवर्तन का सबसे बड़ा भागीदार है। वह तकनीक के साथ जीता है, सीखता है और अपनी पहचान निर्मित करता है।

निस्संदेह तकनीकी प्रगति ने मानव–जीवन को सरल, सुविधाजनक और आधुनिक बनाया है। आज ज्ञान प्राप्त करना पहले की अपेक्षा कहीं अधिक आसान हो गया है। दुनिया के किसी भी कोने की जानकारी कुछ ही क्षणों में प्राप्त की जा सकती है। ऑनलाइन शिक्षा, डिजिटल पुस्तकालय, वर्चुअल मीटिंग और कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित प्रणालियों ने कार्य करने के तरीकों को बदल दिया है। लेकिन इस चमकदार तकनीकी विकास के पीछे एक गहरी चिंता भी छिपी हुई है– युवाओं का नैतिक और मानवीय संकट।

आज का युवा तकनीकी रूप से अत्यंत कुशल है, परंतु धीरे–धीरे संवेदनहीनता, अधैर्य, अकेलेपन और नैतिक भ्रम की ओर बढ़ता दिखाई दे रहा है। आधुनिकता और प्रगति की दौड़ में मानवीय मूल्य पीछे छूटते जा रहे हैं। सत्य, करुणा, अनुशासन, सहिष्णुता, आत्मसंयम और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्य कमजोर पड़ते जा रहे हैं। यह स्थिति केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक और राष्ट्रीय चिंता का विषय बन चुकी है।

सोशल मीडिया ने युवाओं के जीवन को सबसे अधिक प्रभावित किया है। आज व्यक्ति की पहचान उसके चरित्र या ज्ञान से नहीं, बल्कि उसकी डिजिटल उपस्थिति से आँकी जाने लगी है। लाइक्स, फॉलोअर्स और वर्चुअल लोकप्रियता ने युवाओं को एक ऐसे मानसिक दबाव में डाल दिया है जहाँ वे वास्तविक जीवन से अधिक आभासी दुनिया को महत्व देने लगे हैं। दिखावे और तुलना की संस्कृति ने आत्मसंतोष को समाप्त कर दिया है। परिणामस्वरूप अवसाद, चिंता, असुरक्षा और मानसिक तनाव जैसी समस्याएँ तेजी से बढ़ रही हैं।

इसके अतिरिक्त, सोशल मीडिया पर फैलने वाली भ्रामक सूचनाएँ और फेक न्यूज़ समाज में वैचारिक भ्रम पैदा कर रही हैं। Artificial Intelligence के माध्यम से तैयार किए गए डीपफेक वीडियो और कृत्रिम चित्र सत्य और असत्य के बीच की सीमा को मिटा रहे हैं। युवा कई बार बिना सत्यापन के किसी भी सूचना को स्वीकार कर लेते हैं, जिससे सामाजिक तनाव, नफरत और असहिष्णुता को बढ़ावा मिलता है। यह स्थिति लोकतंत्र और सामाजिक सौहार्द दोनों के लिए चुनौती बनती जा रही है।

तकनीकी निर्भरता का प्रभाव शिक्षा पर भी स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है। आज विद्यार्थी स्वयं अध्ययन और चिंतन करने के बजाय तैयार उत्तरों और कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित साधनों पर अधिक निर्भर हो रहे हैं। इससे उनकी रचनात्मकता और स्वतंत्र सोचने की क्षमता प्रभावित हो रही है। ज्ञान का उद्देश्य केवल सूचना प्राप्त करना नहीं, बल्कि विवेक और समझ विकसित करना होता है। यदि शिक्षा केवल तकनीकी दक्षता तक सीमित रह जाएगी, तो समाज में नैतिक नेतृत्व का अभाव उत्पन्न हो सकता है।

आज युवाओं में धैर्य और आत्मअनुशासन की कमी भी एक गंभीर समस्या बन चुकी है। तकनीक ने प्रत्येक कार्य को त्वरित बना दिया है। भोजन, मनोरंजन, खरीदारी और संवाद– सब कुछ तुरंत उपलब्ध है। इस त्वरित संस्कृति ने युवाओं को संघर्ष और प्रतीक्षा से दूर कर दिया है। वे शीघ्र सफलता चाहते हैं, परंतु परिश्रम और संयम का महत्व कम समझते हैं। यही कारण है कि असफलता की स्थिति में कई युवा मानसिक रूप से टूट जाते हैं।

Artificial Intelligence का प्रभाव केवल व्यक्तिगत जीवन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक संबंधों को भी प्रभावित कर रहा है। परिवारों में संवाद कम हो रहा है। एक ही घर में रहने वाले लोग भी मोबाइल स्क्रीन में व्यस्त रहते हैं। रिश्तों में भावनात्मक निकटता कम

होती जा रही है। मानवीय संवेदनाएँ धीरे– धीरे कृत्रिम व्यवहार में बदलती दिखाई दे रही हैं।

ऐसी स्थिति में यह प्रश्न अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है कि क्या तकनीकी प्रगति ही वास्तविक विकास है? यदि समाज आर्थिक रूप से समृद्ध हो जाए, लेकिन नैतिक रूप से कमजोर हो जाए, तो क्या उसे प्रगतिशील कहा जा सकता है? वास्तव में विकास वही है जिसमें विज्ञान और मानवता दोनों का संतुलन बना रहे।

आज आवश्यकता इस बात की है कि युवाओं को केवल तकनीकी ज्ञान ही नहीं, बल्कि नैतिक शिक्षा भी प्रदान की जाए। विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में चरित्र निर्माण, मानवीय संवेदनाओं, सामाजिक उत्तरदायित्व और नैतिक मूल्यों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्त करना नहीं, बल्कि एक अच्छे और जिम्मेदार नागरिक का निर्माण करना भी होना चाहिए।

परिवार की भूमिका भी इस संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण है। माता–पिता यदि बच्चों के साथ संवाद बनाए रखें, उन्हें संस्कार और नैतिकता का महत्व समझाएँ, तो युवा तकनीक का संतुलित उपयोग करना सीख सकते हैं। समाज और मीडिया को भी सकारात्मक और प्रेरणादायक वातावरण तैयार करना होगा।आज समाज में कई घटनाएं सामने आती हैं जिससे युवाओं में घटते नैतिक मूल्यों का आभास होता है जो चिंतित करनेवाला है।

महात्मा गांधी ने सदैव सत्य, अहिंसा, आत्मसंयम और नैतिकता पर बल दिया। उनका मानना था कि विज्ञान और तकनीक तभी उपयोगी हैं जब वे मानवता की सेवा करें। आज गांधीजी के विचार पहले से अधिक प्रासंगिक प्रतीत होते हैं। यदि तकनीक मानव मूल्यों से जुड़ी रहेगी, तभी वह समाज के लिए कल्याणकारी सिद्ध होगी।

आज दुनिया को केवल "डिजिटल रूप से स्मार्ट" युवाओं की आवश्यकता नहीं है, बल्कि ऐसे युवाओं की आवश्यकता है जो नैतिक रूप से भी सशक्त हों। युवा पीढ़ी को यह समझना होगा कि तकनीक केवल एक साधन है, जीवन का उद्देश्य नहीं। मानवता, करुणा, सत्य और संवेदनशीलता के बिना कोई भी तकनीकी प्रगति अधूरी है। हमारी भारतीय संस्कृति का सार भी यही है।

अंततः कहा जा सकता है कि Artificial Intelligence और आधुनिक तकनीक मानव–सभ्यता के लिए महान उपलब्धियाँ हैं, किंतु यदि इनका उपयोग नैतिक मूल्यों से विमुख होकर किया गया, तो यही उपलब्धियाँ मानवता के लिए संकट का कारण बन सकती हैं। युवाओं के हाथों में देश और विश्व का भविष्य सुरक्षित है। यदि वे तकनीक को विवेक, नैतिकता और मानवीय मूल्यों के साथ अपनाएँगे, तो आने वाला समय अधिक शांतिपूर्ण, संवेदनशील और समृद्ध होगा और हम सभी युवा पीढ़ी से यही अपेक्षा रखते हैं।■

सोशल मीडिया पर मकड़जाल की तरह फैलता चिकित्सा, तांत्रिक तथा सौंदर्य उपायों का ज्ञान: तथ्य या मिथक? जन-जागरण ज़रूरी

चित्रा घोटे 'अधिवक्ता'
ब्यूरो प्रमुख 'लोकचिन्तन' भोपाल (मध्य प्रदेश)

आज के डिजिटल युग में सोशल मीडिया केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं रह गया है, बल्कि यह स्वास्थ्य, सौंदर्य तथा तांत्रिक उपायों की भ्रामक जानकारियों का एक बड़ा स्रोत बन चुका है। Instagram, YouTube vkSj Facebook जैसे मंचों पर रोज़ाना हज़ारों वीडियो, पोस्ट और घरेलू नुस्खे साझा किए जाते हैं। कोई त्वचा को गोरा करने का दावा करता है, तो कोई बिना डॉक्टरी सलाह के दवाइयों के सेवन की वकालत करता है। ऐसे में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि यह जानकारी वास्तव में तथ्य है या केवल एक भ्रम और मिथक?

सोशल मीडिया का सबसे बड़ा लाभ यह है कि इससे लोगों तक स्वास्थ्य संबंधी जानकारियाँ तेज़ी से पहुँचती हैं। कई योग्य डॉक्टर और विशेषज्ञ भी ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से लोगों को जागरूक कर रहे हैं। खान–पान, व्यायाम, मानसिक स्वास्थ्य और त्वचा की देखभाल जैसे विषयों पर उपयोगी सामग्रियाँ उपलब्ध हैं, जिससे लोगों में स्वास्थ्य के प्रति सजगता बढ़ी है।

किन्तु दूसरी ओर, अप्रमाणित और भ्रामक जानकारियाँ भी बड़ी मात्रा में फैल रही हैं। कई तथाकथित "इन्फ्लुएंसर" केवल लोकप्रियता और कमाई के लिए बिना किसी वैज्ञानिक आधार के उपचार बताने लगते हैं। उदाहरण के लिए– घरेलू पदार्थों का त्वचा पर मनमाना प्रयोग, बिना चिकित्सकीय सलाह के सप्लीमेंट लेना, चमत्कारी तांत्रिक इलाजों का दावा, गलत तरीके से एक्सरसाइज करना या जिम के बढ़ते चलन के बीच विज्ञापनों के प्रभाव में आकर प्रोटीन का अत्यधिक उपयोग करना। क्या यह सब सही है? क्या इन वीडियो में बताई गई मात्रा वास्तव में सुरक्षित होती है? निश्चित रूप से, इनके प्रस्तुतकर्ताओं के खोखले दावे लोगों के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक सिद्ध हो सकते हैं। कई बार लोग सोशल मीडिया की सलाह पर खुद ही दवाइयाँ (Self & medica-tion) लेना शुरू कर देते हैं, जिसके गंभीर दुष्प्रभाव होते हैं।

विशेष रूप से युवाओं में सौंदर्य–संबंधी मिथकों और शॉर्टकट के जरिये प्रगति या प्रेम–प्रसंगों में सफलता का झांसा देकर उन्हें बरगलाया जा रहा है। इसी प्रकार, युवा पीढ़ी की तंत्र–मंत्र में बढ़ती लिप्तता समाज के लिए एक गंभीर चिंता का विषय है। डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर उपलब्ध 'फ़िल्टर' और संपादित ;म्कपजमकद्ध तस्वीरों के कारण अवास्तविक सुंदरता का मानसिक दबाव बढ़ रहा है। इससे युवाओं में आत्मविश्वास की कमी, तनाव और अवसाद जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं और लोग प्राकृतिक सुंदरता की बजाय कृत्रिम उपायों की ओर आकर्षित हो रहे हैं।

ऐसी स्थिति में व्यापक जन–जागरण अत्यंत आवश्यक है। लोगों को यह समझना होगा कि सोशल मीडिया पर दिखाई देने वाली हर चीज़ सत्य नहीं होती। किसी भी चिकित्सकीय या स्वास्थ्य संबंधी सलाह को अपनाने से पहले योग्य डॉक्टर या विशेषज्ञ से परामर्श अवश्य करना चाहिए। इसके साथ ही सरकार, शिक्षण संस्थानों और मीडिया को भी डिजिटल साक्षरता बढ़ाने के लिए अभियान चलाने चाहिए।

सोशल मीडिया पर फैलते अज्ञानता एवं अंधविश्वास के इस खेल पर नकेल कसने के लिए सख्त नीतियां अपनाना अब अनिवार्य हो गया है। सीधे–सादे और मासूम लोग अक्सर इस इंद्रजाल को समझ नहीं पाते और इसमें फँसते चले जाते हैं। कई असामाजिक तत्वों ने इसे कमाई का जरिया बनाकर लोगों को ठगने का धंधा शुरू कर दिया है। अतः सरकार को इस गोरखधंधे का संज्ञान लेकर इस पर कड़ी कार्रवाई करनी चाहिए। जनता को भटकाने वाले ये अमानक चिकित्सा उपाय लोगों के जीवन के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। इस मामले में विश्व स्वास्थ्य संगठन ॅ;भ्व्द्ध को भी हस्तक्षेप कर कुछ वैश्विक मानक नियम तैयार करने चाहिए, ताकि कुकुरमुत्तों की तरह उगते इन कथित उपचारों पर प्रतिबंध लगाया जा सके। साथ ही, समाज में बाढ़ की तरह फैलते अंधविश्वास और तंत्र–मंत्र के भ्रामक उपायों पर भी स्थानीय प्रशासन को ध्यान केंद्रित करना होगा। बिना उचित सत्यापन (Verification) के कोई भी भ्रामक विषय–वस्तु सोशल मीडिया पर पोस्ट करने पर सख्त पाबंदी होनी चाहिए।

निष्कर्ष : अंततः यह कहा जा सकता है कि सोशल मीडिया सूचना और ज्ञान का एक उपयोगी माध्यम तो है, लेकिन बिना सत्यापन के इस पर आँख मूँदकर विश्वास करना बेहद जोखिमपूर्ण है। सही जानकारी, सतर्कता और जागरूकता ही समाज को इन मिथकों के जाल से बचाकर एक स्वस्थ दिशा दे सकती है।■

आखिर कब बदलेगा बिहार का भाग्य

शम्भू शरण सत्यार्थी
औरंगाबाद (बिहार)

बिहार की धरती गरीब नहीं है; यह बात सबसे पहले गाँठ बाँध लेनी चाहिए। यहाँ की मिट्टी इतनी उपजाऊ है कि साल में दो–तीन फसलें देना इसके लिए कोई बड़ी बात नहीं है। नदियों का जाल ऐसा है कि यदि आप मानचित्र देखें तो लगेगा जैसे पानी ने स्वयं इस राज्य को आशीर्वाद दिया हो। गाँव–गाँव में तालाब हैं, खेतों में धान लहलहाता है, मक्का झूमता है और सब्जियाँ इतनी होती हैं कि मंडियाँ भर जाएँ। मिथिला का मखाना दुनिया में नाम कमा चुका है, मुजफ्फरपुर की लीची का स्वाद अपनी अलग पहचान रखता है, वहीं हाजीपुर का केला, चंपारण का मक्का और कोसी की हरी सब्जियाँ– हर क्षेत्र की अपनी एक शान है। फिर भी, जब हम बाजार में जाते हैं तो पैकेटों पर लिखा मिलता है: 'प्रोसेस्ड इन गुजरात', 'मेड इन महाराष्ट्र', 'पैक्ड इन तमिलनाडु'। यहीं से सवाल उठता है कि उगाया हमने, तो कमाया किसने? खेत हमारी मेहनत से लहलहाए, लेकिन ब्रांड किसी और का बना। पसीना हमारा बहा, और मुनाफ़ा किसी और की जेब में गया। यही बिहार की आर्थिक कहानी का सबसे बड़ा और कड़वा सच है।

बहुत से लोग कहेंगे कि बिहार की मुख्य समस्या बेरोजगारी है; कुछ राजनीति को दोष देंगे, तो कुछ शिक्षा को। परंतु यदि जड़ में जाकर देखें, तो सबसे बड़ी समस्या 'वैल्यू एडिशन' (मूल्य संवर्धन) की कमी है। हम उत्पादन तो करते हैं, लेकिन तैयार माल (फिनिश्ड गुड्स) नहीं बनाते। हम कच्चा माल बेच देते हैं और वही चीज़ जब प्रोसेस और पैक होकर एक चमकदार ब्रांड के रूप में वापस आती है, तो उसे महँगे दामों में खरीदते हैं। यह ठीक वैसा ही है जैसे कोई किसान अपना सारा दूध बेच दे और फिर बाजार से महँगे दाम पर घी खरीदकर लाए।

मिथिला का मखाना इसका जीता–जागता उदाहरण है। देश का लगभग पूरा मखाना उत्पादन इसी क्षेत्र से होता है। किसान तालाब में उतरता है, कीचड़ से फल निकालता है, उसे सुखाता है और बेच देता है; बदले में उसे बेहद सीमित दाम मिलते हैं। वही मखाना जब आधुनिक मशीनों से साफ होकर, सुंदर पैकेटों में बंद होकर बड़े ब्रांड के नाम से बाजार में आता है, तो उसकी कीमत

कई गुना बढ़ जाती है। फर्क खेत में नहीं है, फर्क फैक्ट्री में है। फर्क पैकेजिंग, प्रोसेसिंग और ब्रांडिंग का है; असली पैसा वहीं बनता है।

यही कहानी लीची, केले और आलू की भी है। मुजफ्फरपुर की लीची का नाम विदेशों तक प्रसिद्ध है, लेकिन लीची का जूस, पल्प और कैंडी बड़े पैमाने पर राज्य से बाहर तैयार होते हैं। अगर यहाँ कोल्ड स्टोरेज और प्रोसेसिंग की मजबूत व्यवस्था हो, तो लीची सिर्फ एक मौसम की चीज़ नहीं रहेगी, बल्कि साल भर बिकेगी। हाजीपुर में केला प्रचुर मात्रा में होता है, लेकिन केले के चिप्स दक्षिण भारत से आते हैं। आलू हम उगाते हैं, लेकिन चिप्स के बड़े ब्रांड बाहर के हैं। इसका सीधा सा मतलब है कि हमारे यहाँ कृषि तो है, लेकिन उद्योग नहीं।

बिहार में नदियाँ और तालाब हैं, फिर भी मछली बाहर से आती है; क्योंकि जहाँ से वह आती है, वहाँ वैज्ञानिक मत्स्यपालन होता है। वहाँ फीड फैक्ट्रियां हैं, कोल्ड चेन है और एक संगठित बाजार है। यहाँ संसाधन तो हैं, लेकिन ढांचा बिखरा हुआ है। डेयरी के क्षेत्र में 'सुधा' ने निश्चित ही सराहनीय काम किया है, पर अभी भी माँग के मुकाबले उत्पादन कम है। पोल्ट्री और अंडा उत्पादन में भी हम काफी पीछे हैं।

अब सवाल उठता है कि यहाँ उद्योग क्यों नहीं लगे? इसके कई ऐतिहासिक और सामाजिक कारण हैं। झारखंड के अलग होने के बाद भारी उद्योगों का एक बड़ा हिस्सा हाथ से चला गया और खनिज आधारित उद्योग समाप्त हो गए। लंबे समय तक कानून–व्यवस्था की छवि खराब रही, जिससे निवेशक यहाँ आने से डरते रहे। स्थानीय पूँजी की भी कमी रही और हर साल आने वाली बाढ़ का खतरा उद्योगों के लिए एक बड़ा जोखिम बना रहा। इसके अलावा एक सामाजिक मानसिकता भी आड़े आई– यहाँ नौकरी की तलाश ज्यादा और उद्यमिता (बिजनेस) की सोच कम रही है।

एक कड़वी सच्चाई यह भी है कि बिहार की सबसे बड़ी निर्यात वस्तु यहाँ का श्रम है– पंजाब के खेतों से लेकर गुजरात की फैक्ट्रियों तक, दिल्ली के निर्माण कार्यों से लेकर मुंबई की मिलों तक, हर जगह बिहारी मजदूर मिलेंगे। वे मेहनती हैं, ईमानदार हैं, लेकिन उन्हें अपने घर में काम नहीं मिल पा रहा। उनका पसीना दूसरे राज्यों की अर्थव्यवस्था को मजबूत कर रहा है, जबकि उनके अपने गाँव खाली होते जा रहे हैं।

यह कहना आसान है कि सारी गलती सरकार की है; सरकार की जिम्मेदारी तो है ही। पिछले दशकों में यहाँ वैसी औद्योगिक क्रांति नहीं आई जैसी आनी चाहिए थी। लेकिन यह भी सच है कि हाल के वर्षों में सड़कें सुधरी हैं, बिजली की स्थिति बेहतर हुई है और बुनियादी ढांचे में सकारात्मक बदलाव आया है। परंतु उद्योग सिर्फ सड़क और बिजली के भरोसे नहीं आते; उन्हें भरोसा, स्थिर नीति, त्वरित प्रशासनिक व्यवस्था और समाज में जोखिम लेने की संस्कृति चाहिए।

बिहार 12 करोड़ की आबादी वाला एक विशाल बाजार है, यहाँ हर चीज़ बिकती है। यही वजह है कि बाहर की कंपनियाँ इसे केवल एक 'बाजार' के रूप में देखती हैं, 'उत्पादन केंद्र' के रूप में नहीं। उन्हें यहाँ माल बेचना आसान लगता है, फैक्ट्री लगाना कठिन। जब तक यह सोच नहीं बदलेगी, तब तक राज्य की तस्वीर नहीं बदलेगी।

लेकिन समाधान असंभव नहीं है। हर जिले की प्रमुख फसल के आधार पर 'प्रोसेसिंग यूनिट्स' लगाई जा सकती हैं। कोल्ड स्टोरेज का एक मजबूत जाल बिछाया जा सकता है। मत्स्यपालन और पोल्ट्री को वैज्ञानिक ढंग से बढ़ावा दिया जा सकता है। युवाओं को सुलभ ऋण और तकनीकी प्रशिक्षण देकर 'मेड इन बिहार' को एक वैश्विक ब्रांड बनाया जा सकता है। मखाना, लीची और केला– ये सिर्फ उत्पाद नहीं, बल्कि बिहार की अस्मिता और पहचान बन सकते हैं।

यह बदलाव सिर्फ सरकार के स्तर से नहीं आएगा और न ही सिर्फ नारों से आएगा। बदलाव तब आएगा जब यहाँ का युवा नौकरी माँगने के साथ–साथ व्यवसाय करने की सोचेगा। किसान मिलकर सहकारी संगठन बनाएंगे, बैंक जोखिम लेने को तैयार होंगे और प्रशासन अपनी प्रक्रियाओं को सरल करेगा। हमें कच्चा माल बेचने की मानसिकता से बाहर निकलकर तैयार माल बनाने की दिशा में बढ़ना होगा।

राजद के गोह विधानसभा क्षेत्र के विधायक अमरेंद्र कुमार ने सही कहा है कि बिहार कोई डंपिंग यार्ड नहीं है, यह असीम संभावनाओं का प्रदेश है। समस्या संसाधनों की कमी नहीं, बल्कि संरचना की कमजोरी है; समस्या मेहनत की नहीं, सही दिशा की है। जिस दिन बिहार अपने खेत की उपज को अपने ही उद्योगों में बदलना शुरू कर देगा, उसी दिन यहाँ के आर्थिक स्वाभिमान और सम्मान की वास्तविक शुरुआत होगी।

सवाल आज भी वही खड़ा है कि क्या हम हमेशा केवल मजदूर सप्लाई करने वाला प्रदेश बने रहेंगे या एक उत्पादक राज्य बनकर आत्मसम्मान के साथ खड़े होंगे? यह फैसला सिर्फ राजनेताओं का नहीं, बल्कि पूरे समाज का है। अगर हमारा सामूहिक इरादा बदल जाए, तो बिहार का इतिहास और भूगोल दोनों बदल सकते हैं। ■

भोजपुरी की शान: पार्श्व गायिका सुश्री प्रियंका सिंह से लोकचिन्तन की प्रतिनिधि गुड़िया तिवारी की बातचीत

गुड़िया तिवारी
गोपालगंज (बिहार)

दोस्तों और मित्रों! मैं गुड़िया तिवारी, बिहार प्रांत के गोपालगंज जनपद से हूँ। आइए, आज आप सभी को एक विशेष, बहुत ही खास और उम्दा कलाकार, लेकिन बेहद साधारण व्यक्तित्व से मिलाती हूँ, जो बिहार के गोपालगंज जनपद से ही हैं। इन्हें 'बिहार की लता मंगेशकर' के नाम से भी जाना जाता है और इन्होंने विगत कुछ वर्षों से लगातार 'बेस्ट फीमेल प्लेबैक सिंगर' का अवॉर्ड अपने नाम किया है।

तो आइए, पहेलियों का सिलसिला खत्म करते हुए शुरू करते हैं भोजपुरी की शान, पार्श्व गायिका सुश्री प्रियंका सिंह से मुलाकात की कुछ बेहतरीन बातें:–

एक मुलाकात के दौरान मैंने यूँ ही बातों–बातों में उनसे पूछ लिया...

प्रश्न 1: आपके जीवन में संगीत के सफर की शुरुआत कैसे हुई? उन दिनों के संघर्ष का कोई सबसे यादगार पल, जो आप हमसे साझा (Share) करना चाहें?

उत्तरः (बड़ी ही सहजता से कहती हैं) संगीत के सफर की शुरुआत तो बचपन में ही हो गई थी, जब मैं महज तीसरी या चौथी कक्षा की छात्रा रही हूँगी।

उन्होंने उस दौरान की एक छोटी सी, बेहद दिलचस्प याद हमारे साथ साझा की, जिसे सुनाते–सुनाते उनके चेहरे पर वही बचपन वाला रंग उभर आया था। हुआ यूँ कि एक बार लंच ब्रेक में मैं अपने दोस्तों के साथ गुनगुना रही थी। उसी समय हमारे प्रिंसिपल सर के भाई– जो अक्सर दोनों हाथ पीछे किए छड़ी लेकर घूमते रहते थे और जो भी बच्चा शैतानी करते दिखता था, उसे डंडे मारते थे– उन्होंने मुझे गाते हुए सुन लिया। वे पास आए और पूछने लगे, "कौन गा रहा था?" हम सभी डर के मारे चुप हो गए। फिर उन्होंने कड़े लहजे में पूछा, "बताओ, कौन गा रहा था?"

मैंने डरते–डरते कहा, "सर, मैं गा रही थी।" वह कहने लगे, "तुम कोई भी गाना ऐसे ही सुनकर गा सकती हो?" मैं बोली, "हाँ सर!" फिर उन्होंने मुझे एक गाना याद करने के लिए कहा– 'ऐ मेरे वतन के लोगों'। मैंने वह गाना याद किया और उन्हें सुनाया। बस, यहीं से मेरी श्रद्धा संगीत को समर्पित हो गई और मेरी गायकी की शुरुआत भी। इसके बाद मैंने स्टेज पर यही गाना 'ऐ मेरे वतन के लोगों' गोपालगंज शहर के अंबेडकर भवन में गाया। उसके बाद जो तालियों की गड़गड़ाहट शुरू हुई, वह काफी देर तक गूंजती रही!

(मुस्कुराते हुए) वह तालियाँ न दीदी, आज तक भी मेरे कानों में गूंजती हैं और मुझे एक नई ऊर्जा, उत्साह तथा कुछ नया करते रहने की स्फूर्ति दे जाती हैं। तो यही है मेरे संगीत के सफर की शुरुआत।

प्रश्न 2: प्रियंका जी! क्योंकि आप बिहार से हैं, तो बिहार की परंपरा (Tradition) को इस मायानगरी में कैसे जीती हैं? क्या एक बिहारन होने के कारण आपको यहाँ मुंबई में इस क्षेत्र में अपने पाँव जमाने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ा?

उत्तरः (फिर तो वे बेबाक अंदाज में बोल पड़ीं) हाँ, मैं बिहार से हूँ और मुझे बिहारी होने पर गर्व है। आप सब ने सोशल मीडिया पर देखा ही होगा, मैं अपने बिहारी अंदाज में ही रहती हूँ। बिहार मेरी आत्मा है, मेरा घर है और बिहारीपन मेरे रग–रग में है। इसलिए यहाँ मुंबई में भी मैं अपनी संस्कृति को नहीं भूल पाई और यहाँ बेहिचक अपनी संस्कृति का पालन करते हुए इस इंडस्ट्री में अपनी पहचान बनाई है।

रही बात मेरे संघर्ष की, तो मैं बताना चाहूंगी कि 'सुर संग्राम' रियलिटी शो में तीसरा स्थान हासिल करने के बाद भी मुझे लगभग 10 साल तक संघर्ष करना पड़ा। उस वक्त फिल्मों में आसानी से काम नहीं मिलता था, बल्कि पूरा दिन स्टूडियो, म्यूजिक डायरेक्टर्स या कंपनियों के चक्कर लगाते–लगाते बीत जाता था, पर कहीं काम नहीं मिलता था। इस वजह से मैं कई दफा हतोत्साहित होकर अपने शहर गोपालगंज लौट गई। मैं जब भी घर गई, मेरी मनोदशा भ्रमित ही रही। उस दौरान मैं सोचती थी कि अब पढ़ाई जारी रखूंगी और फिर कोई अच्छी सी जॉब कर लूंगी। तब मैं भी वैसे ही सोचती थी, जैसे आम लड़कियाँ सोचती हैं।

मुंबई छोड़कर जाने का एक कारण यह भी था कि इस प्लेटफॉर्म से जुड़े लोगों को मेरा 'रिजर्व' (सीमित बातचीत करना) रहना पसंद

नहीं आता था। कुछ लोग बोलते भी थे कि तुम लोगों से मिलती–जुलती नहीं हो, न बातचीत करती हो। मेरा पहनावा भी बिल्कुल सीधा–साधारण रहता था, शायद इसलिए भी मुझे नापसंद किया जाता था। पर मैंने यह ठान लिया था कि काम मिले या न मिले, मैं अपने नियमों और संस्कारों को कभी नहीं छोड़ूँगी। खैर! मुझे लगता है कि यह मेरे जीवन में संगीत के क्षेत्र में कामयाबी हासिल करने के लिए एक बेहतरीन टर्निंग पॉइंट था।

प्रश्न 3: आपको संगीत विरासत में मिला या संगीत आपका कोई पसंदीदा विषय था, जिसमें आगे चलकर आपने अपना भविष्य बना लिया?

उत्तरः (इस प्रश्न के उत्तर में चेहरे पर मुस्कान लाते हुए प्रियंका जी कहती हैं) दीदी! मेरी माँ बहुत ही अच्छा गाती हैं। पहले ही नहीं, आज भी वह उम्र के इस पड़ाव पर बेहद सुरीला गाती हैं। मेरे दादाजी 'आल्हा' (बिहार, उत्तर प्रदेश, बुंदेलखंड और मध्य प्रदेश का अत्यंत लोकप्रिय वीर रस प्रधान लोकगीत) के बहुत बड़े गायक थे। वे हमारे क्षेत्र के एक नामी कलाकार हुआ करते थे। मेरे पिताजी भी अच्छा गाते थे और उन्हें वाद्य यंत्र जैसे ढोलक आदि

बजाना भी आता था। इसलिए यह कहना बिल्कुल भी गलत नहीं होगा कि संगीत मुझे विरासत में मिला है।

मैंने पहले ही बताया कि मेरी गायकी स्कूल के दिनों से ही स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस के आयोजनों में गाते हुए शुरू हो चुकी थी, वह भी सुर–साम्राज्ञी लता जी के गाने सीखकर। फिर धीरे–धीरे मेरी माताजी से मेरे स्कूल के शिक्षक और रिश्तेदार कहने लगे कि प्रियंका को संगीत की शिक्षा दिलवाओ। इसके बाद माँ–पापा ने एक म्यूजिक टीचर रखा और मुझे क्लासिकल म्यूजिक की शिक्षा दिलवाई।

लेकिन तब मैंने यह नहीं सोचा था कि आगे चलकर इसी को प्रोफेशन बनाना है। संगीत तो मैंने इसलिए सीखा था कि मुझे इसका ज्ञान हो, मैं सुरीला गा सकूं और मेरा स्वर और बेहतर हो सके। इसके लिए मेरे माता–पिता ने मुझे कई संगीत गुरुओं से शिक्षा दिलवाई। रही बात संगीत में भविष्य तलाशने की, तो मैंने कभी ऐसा नहीं सोचा था और न ही मेरे माता–पिता के मन में कभी ऐसा ख्याल आया था। यह शायद मेरे भाग्य में ही था, जो मुझे इस क्षेत्र में ले आया। मेरा 'सुर संग्राम' में भाग लेना, वहाँ असफल हो जाना, फिर अपने ही लोगों के ताने सुनकर इरादा मजबूत करना और इसी क्षेत्र में खुद को स्थापित करना– यह सब मेरे माता–पिता के आशीर्वाद और महादेव व माँ आदिशक्ति की कृपा की बदौलत ही संभव हो सका है।

प्रश्न 4: प्रियंका जी, यह बताइए कि ख्वाब संजोने वाली प्रियंका और अपने सपनों को जीने वाली प्रियंका को आप कैसे देखती हैं?

उत्तरः (तब वह एक बच्ची की भाँति चहकते हुए कहती हैं) हाँ, मेरा बचपन से ही ख्वाब था कि मैं अपने पैरों पर खड़ी हो सकूं और एक प्रतिष्ठित नौकरी करूं। यह सब इसलिए था ताकि मैं अपने माता–पिता का आर्थिक संबल बन सकूं और हमारी आर्थिक तंगी के कारण पिताजी को तकलीफ न उठानी पड़े।

अब रही बात सपने की, तो हाँ, मेरा सपना थोड़ा कठिन था। कठिन इसलिए कहूंगी क्योंकि वह सपना IAS-IPS बनने का था। लेकिन बचपन से ही स्कूलों में गाते–गुनगुनाते दिल में गायकी के लिए भी एक जगह बन गई थी और वह जगह धीरे–धीरे स्थाई हो रही थी। एक प्रचलित बात है कि हम बिहारियों का जब दिल टूटता है, तो बिहारी आईएएस–आईपीएस ही बनता है। मेरा भी पहला सपना यही था। गायकी के क्षेत्र में आना मेरा फैसला नहीं था, यह तो ऊपर वाले की मर्जी थी। अगर 'सुर संग्राम' से बाहर होने के बाद मैं दोबारा गायकी में नहीं आई होती, तो पक्का यह बिहारन आज एक IAS ऑफिसर होती।

साल 2008 के रियलिटी शो 'सुर संग्राम' ने– जो भोजपुरी सिनेमा टीवी चौनल पर प्रसारित होता था– मुझे एक नई दिशा दी। भोजपुरी के इस लोकप्रिय गायन रियलिटी शो में मनोज तिवारी, दिनेश लाल यादव 'निरहुआ' और कल्पना जी जैसे भोजपुरी के दिग्गज कलाकार सर्वश्रेष्ठ जज और मेंटर के रूप में शामिल थे। मुझे इस क्षेत्र में पाँव जमाने में 10 साल संघर्ष करना पड़ा, जिसके बाद किस्मत को भी मेरे सामने घुटने टेकने पड़े। अब पिछले लगातार 9 सालों से बेस्ट फीमेल प्लेबैक सिंगर का अवॉर्ड मुझे मिलता आ रहा है। तो मैं कह सकती हूँ कि– ''मैंने जो ख्वाब संजोया था, अब उन ख्वाबों और सपनों को मैं जीने लगी हूँ।''

मेरे मन में एक और जिज्ञासा उठ रही था, तो मैंने पूछा :–

प्रश्न 5: आमतौर पर देखने को मिलता है कि भोजपुरी गीतों में प्रसिद्धि पाने के लिए अधिकतर अश्लीलता परोसी जाती है। आप अपने साफ–सुथरे और सहज गानों के माध्यम से इस प्रकार के लेखकों और संगीतकारों को क्या संदेश देना चाहती हैं?

उत्तरः (बड़ी ही गंभीरता के साथ कहती हैं) हाँ, भोजपुरी पर अश्लीलता परोसने का आरोप लगता है और यह सिर्फ आरोप नहीं, बल्कि एक कड़वी सच्चाई है। जब मैं इस इंडस्ट्री में आई, तो यही सच्चाई मेरे सामने एक चुनौती के रूप में खड़ी थी कि मैं यहाँ इन द्विअर्थी (Double meaning) गानों वाली इंडस्ट्री में अपनी एक अलग पहचान कैसे बनाऊँ? क्योंकि इंडस्ट्री के सीनियर्स का कहना था कि यहाँ यही चलता है। वे कहते थे कि तुम अच्छा गाती हो, पर काम किसी के पास नहीं होता था। इसलिए मेरा संघर्ष 10 साल तक चला, क्योंकि मैं अच्छे गानों में अपना भविष्य तलाशती थी। मुझे द्विअर्थी गानों के जरिए रातों–रात चमकने का कोई शौक नहीं था।

मुझे ऐसी गायकी करनी थी जिसे पूरे परिवार के साथ बैठकर सुना जा सके और मेरे गानों को सुनकर किसी को शर्मिंदगी महसूस न हो। लगातार प्रयासों के बाद भी जब मुझे काम नहीं मिला, तो मैंने निर्णय लिया कि मैं अपनी आवाज 'फॉल्क' (लोकगीतों) के जरिए लोगों तक पहुँचाऊँगी। इसके बाद मैंने इंडस्ट्री का पहला फोक–फ्यूजन सॉन्ग 'बदरिया' बनाया।

इसका सीधा और सकारात्मक प्रभाव इंडस्ट्री में देखने को मिला और मुझे धीरे–धीरे काम मिलने लगा। साथ ही साथ मैंने कई ऐसे गाने बनाए, जिन्हें बाद में इंडस्ट्री के स्थापित लोगों ने भी फॉलो किया। भले ही उन लोगों ने मुझे सामने से स्वीकार (Accept) न किया हो, लेकिन मुझे स्पष्ट रूप से दिख रहा था कि मेरा प्रयास अब रंग ला रहा है, जिसका मुझे बेसब्री से इंतजार था। इस प्रकार इंडस्ट्री में एक सार्थक और स्वस्थ बदलाव आया।

भोजपुरी इंडस्ट्री में तब 'सॉफ्ट आवाज' को स्वीकार नहीं किया जाता था। मैं यह बात बड़े फक्र से कहती हूँ कि यह शैली इस इंडस्ट्री में मेरे जरिए स्थापित की गई। फोक, फ्यूजन, इलेक्ट्रॉनिक म्यूजिक, ट्रांस म्यूजिक, डबस्टेप और विभिन्न विधाओं में भोजपुरी को मैंने ही इंट्रोड्यूस किया। इसका नतीजा यह हुआ कि बाकी इंडस्ट्रीज भी मुझसे जुड़ने लगीं और नेशनल व इंटरनेशनल लेवल पर भी भोजपुरी का प्रतिनिधित्व होने लगा। मैं सौभाग्य से पहली ऐसी आर्टिस्ट हूँ, जिसने भोजपुरी में यह शुरुआत की।

गुड़िया तिवारीः जी बिल्कुल, यह हम बिहार वासियों और खासकर गोपालगंज के लिए भी फक्र की बात है कि हमारी बेटी ने भोजपुरी को एक नया मुकाम दिया।

प्रश्न 6: फिल्मफेयर और फेमिना द्वारा पुरस्कृत होने के बाद, पार्श्व गायिका प्रियंका को अपनी दिनचर्या में क्या बदलाव करना पड़ा है? अपने आप को और बेहतर साबित करने के लिए...

उत्तरः लगातार 9 वर्षों से मुझे बेस्ट फीमेल प्लेबैक सिंगर का अवॉर्ड मिल रहा है, जिससे मुझ पर और भी बड़ी जिम्मेदारी आ जाती है कि मेरे हर कार्य का स्तर उच्च कोटि का हो। इसके लिए मुझे रियाज और अपनी आवाज पर बहुत ज्यादा फोकस करना पड़ता है, ताकि मैं लोगों के भरोसे और विश्वास को बनाए रख सकूं। रही बात दिनचर्या की, तो एक गायिका की दिनचर्या में सबसे ज्यादा वक्त रियाज का ही होता है, बाकी के कार्य तो आराम से होते रहते हैं। शूटिंग करना, लोगों से मिलना–जुलना, यह सब तो अब रोजमर्रा का काम है।

प्रश्न 7ः आप बिहार की बेटी हैं। अगर आपको मौका मिले, तो आप बिहार के लिए क्या करना चाहेंगी?

उत्तरः हाँ! (मुस्कुराते हुए) मैं गौरवशाली बिहार की धरती से हूँ। मेरा जन्म माँ थावेवाली की गोद में हुआ है, इसलिए मैं अपने आपको बहुत भाग्यशाली मानती हूँ। हमारा बिहार भारत की प्राचीन सभ्यता, ज्ञान और आध्यात्मिकता का उद्‌गम स्थल रहा है। यहीं पर विश्व का प्रथम लोकतांत्रिक गणराज्य (लिच्छवी गणराज्य) स्थापित हुआ। यह धरती चंद्रगुप्त मौर्य, सम्राट अशोक जैसे महान शासकों और चाणक्य जैसे महान राजनीतिज्ञों की है। इसकी ख्याति का कोई अंत नहीं है, मैं इसकी महानता का क्या ही गुणगान कर सकती हूँ!

मैं ऐसी धरती के लिए– जो मेरी महतारी (माँ) है, जिसने मुझे यहाँ तक पहुँचाया और इतना कुछ दिया– क्या ही कर सकती हूँ! लेकिन हाँ, अगर मुझे अपनी माटी के लिए कुछ करने का मौका मिले, तो मेरा पुरजोर प्रयास रहेगा कि इस धरती की मान–मर्यादा बनाए रखूँ और इसकी गरिमा को एक नया आयाम दूँ। मैं अपने फील्ड से जुड़े ऐसे प्रतिभावान कलाकारों को उचित स्थान और सम्मान दिलाना चाहूंगी, जो पहचान और पहुँच के अभाव में योग्यता रखते हुए भी आगे नहीं आ पाते। मैं यह इसलिए कह रही हूँ, क्योंकि मैं खुद इसका एक बड़ा उदाहरण हूँ।

प्रश्न 8ः आप गोलोकवासी सुर–साम्राज्ञी लता मंगेशकर जी से प्रेरित हैं। आपको 'गोपालगंज की लता मंगेशकर' भी कहा जाता है। इस नाम से पुकारा जाना ही अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है। इस विषय में कुछ कहना चाहेंगी?

उत्तरः हाँ, यह मेरा परम सौभाग्य है कि सुरों की देवी माँ सरस्वती की असीम कृपा प्राप्त भारत रत्न आदरणीया लता मंगेशकर जी के नाम से मुझे पुकारा जाता है और 'छोटी लता' भी कहा जाता है। यह मेरे लिए दुनिया के सभी अवॉर्डों से बढ़कर है। इसके लिए मैं गोपालगंज की जनता की तहे दिल से शुक्रगुजार हूँ। मैं आजीवन उनकी आभारी रहूँगी कि उन्होंने मुझे इस काबिल समझा और इतने ऊंचे मुकाम पर पहुँचाया।

प्रश्न 9ः आपकी जिंदगी से जुड़ा कोई खास यादगार लम्हा, जो दिल के बेहद करीब हो और जिसे आप शेयर करना चाहें?

उत्तरः मेरे जीवन का सबसे यादगार लम्हा वह है, जब 'सुर संग्राम' रियलिटी शो के मंच पर एलिमिनेशन राउंड में मुझसे पूछा गया था– 'अगर आज आप इस शो से बाहर हो गईं, तो आपको सबसे ज्यादा किस बात का दुख होगा?' तब मैं रोने लगी थी और मैंने कहा था कि मैं इस रियलिटी शो में जीत या हार के लिए नहीं आई हूँ; मैं यहाँ अपने पिताश्री के घर बनवाने के सपने को पूरा करने के लिए आई हूँ।

और आपको पता है? उस दिन मेरा एलिमिनेशन नहीं हुआ और आगे चलकर मैं फीमेल विनर बनी! जब मुझे मेरे हाथ में प्राइज मनी का चेक दिया गया, वह मात्र एक चेक नहीं था, वह मेरे सपनों के महल को खड़ा करने का जरिया था। उस एहसास को बयां करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। मैं उस वक्त और उस भावुक पल को कभी नहीं भूल सकती।

प्रश्न 10ः आपकी कामयाबी का श्रेय किसको जाता है—कोई पारिवारिक व्यक्ति, मित्र या कोई खास?

उत्तरः (मुस्कुराते हुए) नहीं, अभी ऐसा कोई 'खास' मेरे जीवन में नहीं है। मेरी सफलता का पूरा श्रेय मेरे माता–पिता को जाता है। साथ ही साथ मैं अपने उन गुरुजनों को भी इसका श्रेय देना चाहूंगी, जिन्होंने मुझे रास्ते की कठिनाइयों से लड़ना सिखाया और मुझे इस इंडस्ट्री में टिकने का हुनर दिया, जिसके बदौलत मैं आज आगे बढ़ती जा रही हूँ और उनके आशीर्वाद से हमेशा प्रगति करती रहूँगी।

माता–पिता और गुरुजनों के बाद, मैं विशेष रूप से अपने बिहार की जनता की आभारी हूँ, जिन्होंने मेरी आवाज को पहचाना, सराहा और अपना भरपूर आशीर्वाद दिया। इसके अलावा, मैं म्यूजिक डायरेक्टर विनीत जी को भी धन्यवाद देना चाहूंगी, जिन्होंने मुंबई के शुरुआती दिनों में मेरे संघर्ष के समय मेरा साथ दिया और मेरा मार्गदर्शन किया, जिससे यह सफर सरल और सफल हो सका।■

कविता

गदहे आजकल खूब ही चालाक हो गए हैं!

जनार्दन मिश्र
ब्यूरो प्रमुख 'लोकचिन्तन' आरा (बिहार)

गदहे आजकल खूब ही चालाक हो गए हैं
अब वे किसी का बोझ नहीं ढोते
या ढोते हैं तभी तक ही
जबतक उनका काम
नहीं संपन्न होता

अपना निजी स्वार्थ किसी से साधने के लिए
वे किसी की अंतड़ी में भी प्रवेश कर जाते हैं

इनकी खाल मोटी होती है
वे हर मौसम का लुफ्त
उठा लेते हैं

अब इनके लिए कोई भी कार्य असंभव नहीं
समय पर अपना रूप बदलते हैं
और अपने विचार को हर दिन
पहिरावा की तरह
बदलते हैं

वे समय की नब्ज
जनता की नब्ज
पहचानने में
बहुत ही
माहिर हैं

गदहे आजकल सर्वज्ञानी हो गए हैं
हवा की रुख पर अपनी रीति और नीति
बदलने के कुशल कारीगर हैं
तभी तो वे आज हर जगह अव्वल हैं !!

नाट्यशास्त्र: परंपरा, पुनर्पाठ और आधुनिक मंच

डॉ॰ तेजस्वरूप त्रिवेदी
सम्पादक 'संगना'
संगीत नाटक अकादेमी, नई दिल्ली

"ऋग्वेदात् पाठ्यमादाय सामभ्यो गीतमेव च।
यजुर्भ्यश्चेवाभिनयं अथर्वणो रसात्मकम्" अर्थात, ब्रह्मा ने ऋग्वेद से पाठ्य, सामवेद से गीत, यजुर्वेद से अभिनय और अथर्ववेद से रस लेकर नाट्य की रचना की। भारतीय कलाओं के विस्तृत आकाश में नाट्यशास्त्र केवल एक प्राचीन ग्रंथ नहीं, बल्कि एक सुसंगठित संहिता है जो नाटक, नृत्य और संगीत के रूप, रचना और रस–सिद्धि को एकाग्रतः विन्यस्त और व्याख्यायित करती है। भरतमुनि का यह विधान कलाओं को केवल तकनीक की सूची में नहीं बांधता। यह उस आंतरिक अनुभव–व्यवस्था का मानचित्र भी प्रस्तुत करता है जिसमें सौंदर्य, नैतिकता, सामाजिक अनुभव और आध्यात्मिक संवेदना एक–दूसरे को अर्थ देती हैं। इसीलिए ब्रह्मा द्वारा पंचम वेद के रूप में इसके प्रतिपादन का मिथक केवल गौरवगान नहीं, बल्कि एक दार्शनिक उद्घोषणा है कि कला लोक की है, लोक के लिए है, और लोकानुभव ही उसका सर्वोच्च सत्य है। भरतमुनि का आग्रह स्पष्ट हैः नाट्य–व्यवस्था का केन्द्र रस है, और रस तक पहुँचने का एकमात्र मार्ग है– अभिनय के चारों आयामों का समन्वय, समय और लय की शुद्ध साधना, तथा मनुष्य के भावलोक की सूक्ष्म समझ।

रस, अभिनय और समय–लय की एकात्म दृष्टि

भरतमुनि आधुनिक सौंदर्यशास्त्र के भाष्यकार के रूप में भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने कि एक शास्त्रकार के रूप में। उनका मूल प्रस्ताव सरल तर्क देता है कि रचना की अंतिम कसौटी दर्शक में जगने वाला अनुभव है। "विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः" अर्थात, विभाव, अनुभाव और संचारी–भावों की रचनात्मक समष्टि से रस की निष्पत्ति। यह केवल सूत्र वाक्य नहीं, दर्शक–कलाकार संवाद का जीवंत प्रोटोकॉल है। इसीलिए नाट्यशास्त्र बार–बार उस समन्वय पर लौटता है जहाँ आंगिक (देह–भाषा), वाचिक (स्वर–शब्द), सात्त्विक (अंतरंग आवेग) और आहार्य (वेश–भूषा, रंग–रचना) अभिनय मिलकर एकीकृत नाट्य–देह निर्मित करते हैं। यह नाट्य–देह ही वह माध्यम है जो दर्शक में रसाभास को उद्बोधित कर रसानुभूति तक ले जाता है। कपिला वात्स्यायन भी तो यही कहती हैं, "रस ही वह सूत्र है जो नृत्य, संगीत और नाटक को एक ही कलात्मक अनुभव में पिरो देता है।"

नृत्य के लिए नृत्य–नृत्त–नाट्य का त्रय, तथा लास्य–तांडव की द्विधारा असल में गति और अर्थ के द्वंद्वात्मक संयोग की तकनीक है। तांडव की उर्जा और लास्य की कोमलता, दोनों मिलकर ऐसा स्पेक्ट्रम रचते हैं जिसमें वीर से करुण और रौद्र से शांत तक, भाव के सभी आयाम गति, मुद्रा, दृष्टि और देह–संयम से संप्रेषित होते हैं। संगीत के संदर्भ में राग– ताल–लय का अनुशासन नाट्यात्मक समय– निर्माण का ही विस्तृत रूप हैः समय को संवेदना में, और संवेदना को श्रोता के भीतर दीर्घतर अनुभव–प्रवाह में बदलने की विधि।

मंच–रचना और दर्शक–ग्रहण की सूक्ष्मता नाट्यशास्त्र के शक्तिशाली, किन्तु अक्सर कम याद किए गए, पक्ष हैं। यह ग्रंथ स्पष्ट करता है कि मंच केवल दृश्य संयोजन नहीं, अर्थ–संयोजन भी है। आकाश–भ्रम, प्रवेश–निर्गम, नेपथ्य–ध्वनि, सभी मिलकर नाट्यार्थ का ध्वनित क्षेत्र निर्मित करते हैं। दर्शक भी निष्क्रिय नहीं, रस–ग्रहण का सह–निर्माता है। इस सह–निर्माण को संभव बनाती है वही समुचित दूरी, जिसे नाट्यधर्मिता कहते हैं, जो वास्तविकता का हू–ब–हू अनुकरण नहीं, बल्कि उसके सार का मंच–धर्म में रूपांतरण करती है।

नाट्यधर्मिता, लोकधर्मिता और मंच का यथार्थ

आधुनिक भारतीय रंग–चिंतन ने नाट्यशास्त्र को स्मारक नहीं, संसाधन की तरह पढ़ा है। विशेष रूप से देवेन्द्र राज अंकुर ने नाट्यधर्मिता और लोकधर्मिता के वैचारिक भेद को समकालीन संदर्भ में अत्यंत सूक्ष्मता से उजागर किया है। उनके लिए यह भेद विरोध नहीं, अनुपूरकता है– एक पक्ष मंच–निर्मित सत्य का व्याकरण देता है, दूसरा समाज–जीवन के स्पंदन से उस सत्य को ऊर्जा देता है। अंकुर स्पष्ट करते हैं कि मंच पर प्रस्तुत "यथार्थ" फोटोग्राफिक नकल नहीं होता। वह जीवन का प्रयासपूर्ण सार है, जिसे शारीरिक, वाचिक और भाव–व्यवहार की शास्त्रीय प्रशिक्षण–संस्कृति आकार देती है। वह यह भी कहते हैं कि "रंगमंच का सच पाठ में नहीं, देह में टंका होता है– श्वास, दृष्टि और लय के अनुशासन में।"

"भरतमुनि का नाट्यधर्म किसी कठोर यथार्थ की हू–ब–हू पुनरावृत्ति नहीं, बल्कि मंच के लिए रचा गया वह 'दूसरा यथार्थ' है जिसमें जीवन का रस रहता है, पर उसकी छाया नहीं। और लोकधर्म वह सजीव प्रवाह है जिससे नाट्यधर्म अपना रक्त प्राप्त करता है।" देवेन्द्र राज अंकुर का यह कथन न केवल भरत के सूत्रों की आधुनिक व्याख्या है, बल्कि रंग–अभ्यास की व्यावहारिक दिशा भी तय करता है। जब अभिनेता 'लोक' की सांस अपनी देह में उतारता है, तभी नाट्यधर्मिता की शैलीगत विशिष्टता जीवंत हो पाती है। यही वह संधि–स्थल है, जहाँ पर नाट्यशास्त्र की परंपरा आधुनिकता से हाथ मिलाती है– शैलियाँ बदलें, माध्यम बदले, पर रस–संप्रेषण की केन्द्रीयता और अभिनय के चतुष्पाद (आंगिक–वाचिक–सात्त्विक–आहार्य) का समन्वय शाश्वत बना रहता है। यही है– आङ्गिकं वाचिकं चौव सात्त्विकं च तथैव च। आहार्यं चाभिनयः प्रोक्तश्चतुर्विधः ।।

भारतीय नृत्य–चिंतन की अग्रणी विदुषी कपिला वात्स्यायन बार–बार इस बात पर जोर देती रही हैं कि नाट्यशास्त्र को "रूढ़ व्याकरण" समझने की भूल यहीं से होती है जहाँ हम उसके ऐतिहासिक विधान को जीवित परंपराओं के भीतर चल रही रचनात्मक वार्ता से काट देते हैं। उनके शब्दों में, परंपरा स्थिर शब्दकोश नहीं, गतिशील संदर्भ है। और नाट्यशास्त्र उसी गतिशीलता का सुसंगत व्याकरण है। उन्हीं के शब्दों में कहें तो "परंपरा का अर्थ जड़ता नहीं। वह एक जीवित, क्रमिक और संदर्भ–संवेदी स्मृति है। नाट्यशास्त्र उस स्मृति का व्याकरण है, न कि उसकी परिधि।" इसी धारा में रुक्मिणी देवी अरुंडेल का आग्रह भी महत्वपूर्ण है। भरतनाट्यम के पुनरुत्थान में उनकी भूमिका केवल शास्त्रीय 'रूप' को पुनर्स्थापित करना नहीं थी। वह उस भाव–संस्कार को भी पुनर्जीवित कर रही थीं जिसमें मुद्रा, दृष्टि और देह–रेखाएँ केवल सजावट नहीं, अर्थाभिव्यक्ति के संगठित उपकरण बन जाती हैं। उनके लिए नाट्यशास्त्र वह आधार है जो नृत्य की शाखाओं को नवाचार का विस्तार देता है, पर जड़ों का रस कभी सूखने नहीं देता। अरुंडेल का मानना है कि "जब तक नृत्य की जड़ें नाट्यशास्त्र में बनी रहती हैं, तब तक उसकी शाखाएँ जितनी भी फैलें, उनका रसात्मक स्वभाव भारतीय ही बना रहता है।"

देह–व्याकरण से अर्थ–विस्तार तक

नृत्य में नाट्यशास्त्र का प्रभाव सबसे पहले देह–व्याकरण में दिखता है– करनियों का संयोजन, हस्त–मुद्राओं के अर्थ–कोश, दृष्टि–बेध, गति के व्यवस्थात्मक आयाम, और ताल–लय का शरीरगत संवेदन। भरतनाट्यम के अड़ावों से लेकर कथक के तत्कार और चौक, ओडिसी की त्रिभंगी से लेकर कूचिपूडी की तरंग तक– प्रत्येक शास्त्रीय शैली अपने–अपने तकनीकी सूक्ष्मताओं में बद्ध रहते हुए भी नाट्यशास्त्रीय अर्थ–निरूपण की साझा भूमि पर खड़ी है। आंगिक अभिनय यहाँ केवल सजावटी नहीं वह अर्थ–संरचना का मूल माध्यम है। उदाहरण के लिए, श्रृंगार की स्थायी–भावभूमि में हंस्या–ऊर्ध्व दृष्टि, मंद स्मित और हृदय–प्रदेश की सूक्ष्म स्पर्श–मुद्राएँ उस भाव–दृश्य को जन्म देती हैं जिसे शब्दों की जरूरत नहीं पड़ती। वहीं वीर–रस में दृढ़ पद–संचालन, वक्ष–प्रदेश का विस्तारण, :–भंगिमा की तीक्ष्णता और दृष्टि की अपरिवर्त्य रेखा एक भीत–भंग शक्ति का संचार करती है।

लास्य–तांडव की द्विधारा आधुनिक नृत्य–प्रयोगों में नये रूप ग्रहण करती है। चन्द्रलेखा जैसी कोरियोग्राफरों ने परंपरा की गति–शृंखला को समकालीन देह–राजनीति, लैंगिक अनुभव और श्रमानुभव के साथ जोड़ा, परंतु नृत्यीय वाक्य–निर्माण में मुद्रा, दृष्टि और देह–रैखिकता की वही नाट्यशास्त्रीय सुसंगति कायम रखी। कथक में गुरुओं ने गत–भाव और ठाठ को रसाभिव्यक्ति का केन्द्र बनाया। मुख–चन्द्रिका, नयनों की सायास लय और कर–तल की सूक्ष्म परिक्रमाओं से भाव–चित्र निर्मित हुए। ओडिसी में केलुचरण महापात्र की सौंदर्य–दृष्टि ने मन्दोदरी, सावित्री, द्रौपदी जैसे चरित्रों के भाव–संयम को मुद्रा–वर्णन, कटि–भंग और दृष्टि–न्यास के माध्यम से वह नाट्य–देह दी जो दृश्य को गीतिका में बदल देती है।

यहाँ सात्त्विक अभिनय की भूमिका निर्णायक है। कंप, स्वेद, अश्रु, स्तंभ, स्वरा–भंग– यह सभी 'दर्शनीय' से अधिक 'अनुभवीय' आयाम हैं। इनका संबंध शरीर की मांसपेशियों से नहीं, तंत्रिका–संवेग और श्वास–विन्यास से है। नृत्य–शिक्षा की परंपरा इसलिए श्वास और दृष्टि–न्यास के अभ्यास पर विशेष बल देती है।

राग–रस, समय–देह और ध्वनि का अभिनय

भारतीय शास्त्रीय संगीत का भाव–केन्द्र नाट्यशास्त्र की रस–दृष्टि से अलग करके नहीं समझा जा सकता। राग केवल स्वरों का क्रम नहीं वह भावों की देह है। प्रत्येक राग का मानस उसकी वक्रता, आरोह–अवरोह, विशिष्ट स्वर–संबंध और वर्जितध्अंग–स्वर द्वारा रचा जाता है। यमन का प्रशांत उजास, दरबारी का गभीर शोक, बिहाग का प्रफुल्ल श्रृंगार, मल्हार का मेघ–उल्लास आदि 'गुन' राग–लक्षण के व्याकरण से नहीं, राग–रस के नाट्य से आते हैं। आलाप का विस्तार वस्तुतः समय का नाट्य हैः धीमी लय में स्वरचर्या श्रोता के भीतर अपेक्षा (विभाव) रचती है। मींड और गमक अनुभाव का स्थान ले लेते हैं। और जैसे–जैसे तानों की तीव्रता बढ़ती है, संचारी भाव श्रोता के भीतर रसाभास से रसानुभूति में बदलने लगता है।

ताल, विशेष रूप से चक्राकार ताल–प्रणाली, नाटकीय समय का मंच है। विलंबित खयाल में एक सम के लिए दीर्घ यात्रा, द्रुत में उसी सम का चुम्बकीय आकर्षण – यह सब श्रोता को 'कथानक' के समय से जोड़ता है। ध्रुपद में स्थिर पद–संरचना और धमार–चौतीताल की नाद–शक्ति वीर और शांत रस के लिए साक्षात मंच है। वहीं ठुमरी–दादरा की अवकाश–सम्पन्न लय–साधना श्रृंगार और करुण के सुकुमार संचरण का मार्ग प्रशस्त करती हैं। कर्नाटक संगीत में आलापना–तानम्–पल्लवी की त्रयी नृत्य के नृत्त–नृत्य–नाट्य की सी समवर्ती बन जाती है। आलापना में रूप–निर्माण, तानम् में समय की देह, और पल्लवी में पाठ्य का प्रवेश ही प्रधान होता है।

यहाँ वाचिक अभिनय केवल शब्द–उच्चार नहीं। वह ध्वनि के नर्तन का विज्ञान है। स्वर–उच्चारण के सूक्ष्म बाना, मात्रा–प्रबंधन, आघात की दिशा और नासिका कंठ मूलाधार के मेल से बनती ध्वनि–देह श्रोता के भीतर जिस प्रकार का कंप उत्पन्न करती है, वह सीधे–सीधे सात्त्विक अभिनय से जुड़ती है। इसीलिए गुरु–परंपरा भाव–गायन पर विशेष बल देती हैः स्वर की शुद्धता, लय की व्यवस्था, और शब्दार्थ की स्पष्टता तभी रस देती है जब भीतर की चित्तवृत्ति उसी भाव–संस्कार का संधान कर रही हो।

रंग–कला में दृश्य–व्याकरण

नाटक में नाट्यशास्त्र का उपयोग केवल वर्गीकरण तक सीमित नहीं है। यह चरित्र–रचना, दृश्य–व्याकरण, आहार्य संयोजन और दर्शक–ग्रहण की समग्र रणनीति है। मंच पर आयामों का शिष्ट विन्यास, जैसे कि प्रवेश–दिशा, ऊँच–नीच, दूरी और नजदीकी आदि अर्थ के उप–पाठ का सृजन करते हैं। उदाहरण के लिए, उभयाक्षप्रवेश का आशय, वाम से प्रवेशित करुणा और दक्षिण से प्रवेशित वीर–रौद्र का संकेत आदि केवल प्रथाएँ नहीं, दर्शक की अवचेतन देह–पाठ की स्थापित संहिता हैं। दिग्दर्शक जब दृश्य–संयोजन बनाता है, तो वह नाट्यशास्त्रीय ध्वनि–चित्र योजना को नेपथ्य–ध्वनि, मौन का विराम, प्रकाश का क्रम आदि को किसी वाक्य–विधान की ही तरह बरतता है। यही कारण है कि मौन भी मंच पर 'बोलता' है। यह व्यंजना का उच्चतम उपकरण बन जाता है।

समकालीन भारतीय रंगमंच में हबीब तनवीर की लोक–आधारित शैली ने नाट्यशास्त्रीय नाट्यधर्मिता को लोक के शरीर में पुनःप्रतिष्ठित किया। छत्तीसगढ़ी कलाकारों की देह–भाषा, बोली की संगीतात्मकता, और मंच पर उनके सहज व्यवहार को उन्होंने नाट्य–व्याकरण के भीतर रखा, इसलिए वहाँ यथार्थवाद 'स्वभाव' बना और नाट्यधर्म 'रूप'। रतन थियम ने मणिपुरी रंग–परंपरा के देह–निबद्ध अनुशासन, मुखाभिनय और मौन के दीर्घाक्षरों से रस की एक दीर्घ लिपि विकसित की, फलतः मंच उनके यहाँ 'दृश्य–अनुष्ठान' बन जाता है, जहाँ दर्शक का रस–ग्रहण धीरे–धीरे एक सामूहिक ध्यान में रूपांतरित हो जाता है। कूटियाट्टम और कथकलि की गुरु–परंपराओं ने नाट्यशास्त्रीय हस्त–मुद्राओं, नेत्र–साधना और मुखाभिनय की जो अप्रतिम सूक्ष्मता विकसित की, वह आज अभिनय–प्रशिक्षण में मानक बन चुकी है। उनके 'नवरस साधना' जैसे अभ्यास इसी शास्त्रीय आयाम को आधुनिक रंग–शिक्षा में विधिवत स्थापित करते हैं।

देवेन्द्र राज अंकुर ने नाट्य–प्रशिक्षण की इसी कड़ी को पकड़ा और उसे समकालीन अभिनय के अभ्यास से जोड़ा। उनका जोर इस बात पर है कि अभिनेता के पास 'लोक' का भंडार तभी खुलता है जब उसके शरीर में शास्त्रीय अनुशासन का भजन हो चुका हो, अर्थात श्वास, दृष्टि, देह–संतुलन और शब्द–प्रक्षेप का प्रयत्नसिद्ध अनुशासन। वह सचेत करते हैं कि केवल पाठ–व्याख्या से नाट्य नहीं बनताय नाट्य का मूल देहज्ञान है। उनके अनुसार, "रंगमंच का सच पाठ में नहीं, देह में टिका होता हैः श्वास, दृष्टि और लय के अनुशासन में। पाठ उसे दिशा देता है, देह उसे सत्य बनाती है।"

यहाँ आहार्य अभिनय की वेशभूषा, रंग–योजना, वस्त्र–रेखा और आभूषण– सजावट नहीं, अर्थ–संकेत हैं। वस्त्र के रंग और रेखा से लेकर मुख–रंग और अलंकरण तक सब कुछ चरित्र की आंतरिक अवस्था का दृश्यानुवाद हैं। नाट्यशास्त्र का आग्रह यही है कि यह सब अभिनय के अन्य आयामों के साथ तादात्म्य में हो, वरना मंच पर 'देखने' और 'समझने' के बीच एक दरार पैदा हो जाती है।

व्याकरण से अभ्यास, अभ्यास से अनुभव

नाट्यशास्त्र का सबसे दीर्घजीवी योगदान उसकी शिक्षण–परंपरा है। गुरुकुलों, आचार्यों और संस्थानों में जो अभ्यास–क्रम विकसित हुए, वे मूलतः भरत की ही विधियों का समकालीन अनुवाद हैं। नृत्य–शिक्षा में मुद्रा–विन्यास, देह–रेखाओं का अनुशासन, दृष्टि–न्यास, और ताल–समझय संगीत–शिक्षा में स्वरसाधना, लय–संचार, आलाप–विकास और नाट्यशिक्षा में काया–सिद्धि, वाणी–साधना, और भाव–संस्कार सब रस–संप्रेषण की अंतिम कसौटी तक पहुँचने के क्रमिक चरण ही हैं।

समकालीन मंच और सभागारों में बदलाव (ब्लैक बॉक्स, रोशनी की उन्नत तकनीक, ध्वन्यांकन के उपकरण) के बावजूद रचनाकारों को जब स्थायी, संचारी और सत्व–प्राधान्य भावों का आर्किटेक्चर चाहिए होता है, वे अनायास भरतमुनि के व्याकरण की तरफ लौटते हैं। यह लौटना नॉस्टेल्जिया नहीं। यह कार्य का विवेक है। जहाँ भी कलाकृति को 'अनुभव' में बदलना हो, वहाँ नाट्यशास्त्र का अनुशासन ही समय, देह और ध्वनि के बीच एक स्वच्छ, लचीला और विश्वसनीय सेतु प्रस्तुत करता है।

दूसरी ओर, परंपरा के भीतर से उभरती आलोचनाएँ (स्त्री–देह की वस्तुनिष्ठता, जाति–आधारित रूपकों की समस्या, या 'नायिका–भेद' की सीमाएँ) समकालीन रचनाकारों को पुनर्पाठ के लिए प्रेरित करती हैं। यहीं आधुनिकता नाट्यशास्त्र से संवाद करती है, उसके कुछ हिस्सों में बदलाव करती है, कुछ को पुनर्लेखित करती है और कुछ को नये सन्दर्भों में नया अर्थ देती है। यह संवाद परंपरा के विरुद्ध नहीं परंपरा के अस्तित्व के लिए आवश्यक है। भरतमुनि का व्याकरण यदि जीवित है, तो इसलिए कि वह अपने भीतर विमर्श का अवकाश रखता है।

नाट्यशास्त्र का आधुनिक उपयोग तभी सार्थक है जब उसे हम स्मारक नहीं, संसाधन की तरह देखें। एक ऐसे संसाधन के रूप में जो कलाकार को तकनीक का अनुशासन, दर्शक को अनुभव का विस्तार, और दोनों को अर्थ की साझी भाषा देता है। देवेन्द्र राज अंकुर का यह आग्रह कि नाट्यधर्मिता और लोकधर्मिता विरोधी नहीं, परस्पर अनुपूरक हैं– समकालीन कला–चिंतन को एक व्यावहारिक दिशा देता है मंच पर 'दूसरा यथार्थ' तभी जन्म लेता है जब वह समाज के 'पहले यथार्थ' से अपना रक्त ले, और शास्त्रीय अनुशासन से अपना कंकाल। कपिला वात्स्यायन हमें स्मरण दिलाती हैं कि परंपरा तब जीवित रहती है जब वह संदर्भ–संवेदी और क्रमिक रहे। रुक्मिणी देवी अरुंडेल बताती हैं कि जड़ों पर ही शाखाओं का सौष्ठव निर्भर करता है।

आज जब हम नृत्य में देह–राजनीति और भंगिमाओं के नए अर्थ, संगीत में राग–रस के ताजा पाठ, और नाटक में दृश्य–व्याकरण के साहसी प्रयोग देखते हैं, तब भी मंच पर एक अदृश्य व्याकरण काम कर रहा होता है। रस, अभिनय और समय–लय का वही सूक्ष्म समन्वय जिसे भरतमुनि ने सहस्राब्दियों पहले विन्यस्त किया था। तकनीक बदलेगी, माध्यम बदलेंगे, प्रेक्षागृह और सभागार बदलेंगे। पर कलाकार और दर्शक के बीच जो स्पन्दन–सेतु है, उसकी रूप–रेखा नाट्यशास्त्र देता रहेगा, क्योंकि यह केवल अतीत की पुस्तक नहीं, वर्तमान भारतीय कला का शरीर है।

नाट्यशास्त्र एक जीवंत परंपरा है, जो समय के साथ बदलते हुए भी अपनी आत्मा को अक्षुण्ण रखती है। नृत्य की गति, संगीत का स्वर और नाटक का संवाद– जब नाट्यशास्त्रीय सिद्धांतों से आलोकित होते हैं, तब वह केवल प्रस्तुति नहीं, अनुभव बन जाते हैं। यही इस ग्रंथ की अमरता है। यही कारण है कि यूनेस्को ने भी नाट्यशास्त्र की महत्ता को स्वीकार किया है और इसे विश्व स्मृति रजिस्टर में स्थान दिया है।■

कविता

हाशिए की पंक्ति

रानी सिंह
ब्यूरो प्रमुख 'लोकचिन्तन' पूर्णिया।

उन्होंने कहा अगर लम्बी हो तो
एक पंक्ति लिखो
और अगर हो छोटी तो दो
मैंने दो पंक्तियाँ लिखना स्वीकारा

पहली पंक्ति में कटती उम्र
बीतती जिंदगी को लिखा
दूसरी पंक्ति में रखा
हाशिए पर बसर करते लोगों का संघर्ष

उन्होंने कहा
इससे नहीं बनेगी बात
हो सके तो एक और पंक्ति लिखिए
हो जिसमें कुछ हास्य, कुछ व्यंग्य का पुट

मैंने सोचा
फिर पूछा
हास्य–व्यंग्य तो नहीं
क्या मैं प्रेम लिखूँ ?
इजाज़त मिली
लिखा मैंने प्रेम–गंध में लिपटी तीसरी पंक्ति

परिणाम देख अचंभित हूँ
पहली और तीसरी पंक्ति की गई हाईलाइट
और हमेशा की तरह
दूसरी पंक्ति में लिखी
हाशिए के लोगों के संघर्ष को
छोड़ दिया गया हाशिए पर
सबकी नजरों से बचाकर।

गरीब बच्चों के भविष्य पर भारी पड़ता सीबीएसई का फेल सिस्टम

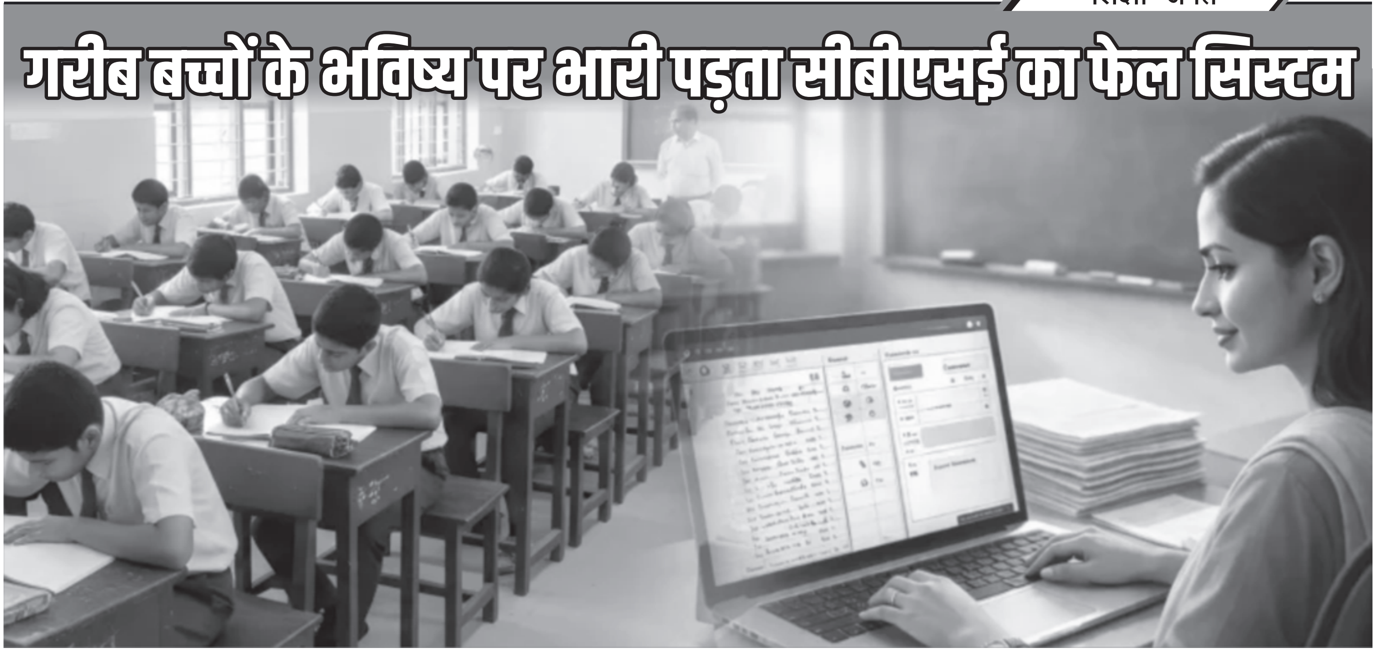

अंजनी सक्सेना
भोपाल (मध्यप्रदेश)

रिजल्ट आने के बाद बच्चे प्रश्नपत्र पर नहीं, अपनी ही उत्तर पुस्तिका पर शक कर रहे हैं। 12वीं बोर्ड परीक्षा 2025-26 में ऑन स्क्रीन मार्किंग यानी ओएसएम को पारदर्शिता का पुल बताया गया था पर बोर्ड की लापरवाही, जल्दबाजी और तकनीकी चूकों ने उस पुल को ही ढहा दिया है।

परीक्षा का डर बच्चों के लिए नया नहीं है। मगर इस बार केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड यानी सीबीएसई ने डर की नई इबारत लिख दी है। रिजल्ट आने के बाद बच्चे प्रश्नपत्र पर नहीं, अपनी ही उत्तर पुस्तिका पर शक कर रहे हैं। 12वीं बोर्ड परीक्षा 2025–26 में ऑन स्क्रीन मार्किंग यानी ओएसएम को पारदर्शिता का पुल बताया गया था पर बोर्ड की लापरवाही, जल्दबाजी और तकनीकी चूकों ने उस पुल को ही ढहा दिया है। नतीजा यह है कि 4,04,319 छात्र, यानी हर चौथा बच्चा, बोर्ड से अपनी कॉपी मांग रहा है। यह वह सामूहिक अविश्वास है,जिसने सीबीएसई के प्रति विश्वास की सारी हदें पार कर दी हैं। यह अविश्वास बच्चों में गंभीर तनाव, मानसिक दबाव और सिस्टम से नफरत पैदा कर रहा है। यह नफरत उनके कॉलेज, करियर और पूरे भविष्य के लिए नुकसानदेह है।

इस साल 12वीं में 17,68,962 छात्र बैठे। रिजल्ट के बाद 22.85 प्रतिशत छात्रों ने 11,31,960 स्कैन कॉपियों के लिए आवेदन किया। इससे पहले के वर्षों में यह आंकड़ा 2–3 प्रतिशत रहता था। इस आंकड़े का इस वर्ष 22 प्रतिशत से ऊपर पहुंचना बताता है कि इस बार कुछ बहुत गलत हुआ है।

इस संकट की जड़ ओएसएम को लागू करने की हड़बड़ी में है। कापियां स्कैन करने की वजह से इस बार मूल्यांकन एक महीने की देरी से शुरू हुआ। समय कम बचा तो दबाव बढ़ा। शुरुआत में पोर्टल भी धीमा चला। टारगेट पूरा करने के लिए शिक्षकों को रोज 12 से 15 कॉपियां जांचनी पड़ीं।

नियम था कि धुंधली यानी ब्लर स्कैन कॉपी रिजेक्ट कर दोबारा स्कैन कराई जाए। मगर दो दिन का काम बचाने के लिए कई केंद्रों पर ब्लर कॉपी ही जांच दी गई। ऐसी कॉपी पर छात्रों को शून्य अंक मिले, या बहुत कम अंक, या परीक्षक ने अंदाज से नंबर दे दिए। दो दिन बचाने के लिए किसी किसी बच्चे का पूरा साल बर्बाद कर दिया गया। इस गफलत में कई बच्चों को पूरा पेपर हल करने के बाद भी नंबर कम मिले।

ओएसएम से पहले तीन स्तरीय मैन्युअल क्रॉस–चेक था। दो इवैल्यूएटर आपस में कॉपियां बदलकर जांचते थे। फिर असिस्टेंट हेड एग्जामिनर और हेड एग्जामिनर रैंडम चेक करते थे। गलती की गुंजाइश नहीं बचती थी। नई व्यवस्था में यह सुरक्षा कवच हटा दिया गया। कंप्यूटर तय कर रहा है कि कॉपी किसे मिलेगी। डबल वेरिफिकेशन बंद। तकनीक पर आंख मूंदकर भरोसा किया गया और मानवीय विवेक को बाहर कर दिया गया। इसका नतीजा यह हुआ कि कई बच्चों की कापियां ही ढंग से नहीं जांची जा सकी,बच्चों ने जब पुनर्मूल्यांकन के लिए अपनी स्कैन कापियां मांगी तो उन कापियों में ऐसी ऐसी गलतियां सामने आयीं जिनकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। कई ब्लर कापियों में अंदाज से नंबर दिए गए तो कहीं शून्य नंबर दे दिया गया। वहीं एक होनहार छात्र वेदांत श्रीवास्तव की तो पूरी उत्तर पुस्तिका ही बदल दी गयी।

12वीं के छात्र वेदांत ने एक्स पर लिखा : "I am a CBSE Class 12 student- After receiving uneÛpectedly low marks in Physics] we applied for photocopies--- Today we received the copies- And I am shattered because the Physics answer sheet uploaded by CBSE is not mine"-

वेदांत ने सीबीएसई को ईमेल किया, एक्स और इंस्टाग्राम पर वीडियो डाला। पोस्ट वायरल हुई तो उसे न्याय नहीं, गालियां मिलीं। वेदांत के भाई सिद्धांत कहते हैं, 'कई लोगों ने हमें बहुत ट्रोल किया। हमें पाकिस्तानी तक कह दिया। कई न्यूज़ एंकर ने बिना वेरीफ़ाई किए हमें पाकिस्तानी कहना शुरू कर दिया।' सोचिए, एक बच्चा अपनी कॉपी मांग रहा है और जवाब में उसे 'एंटी नेशनल' कहा जा रहा है। और तो और दूरदर्शन के न्यूज एंकर अशोक श्रीवास्तव तो इस बच्चे को पाकिस्तानी कहने से भी नहीं चूके। यह मानसिक प्रताड़ना किसी भी किशोर को तोड़ने के लिए काफी है, जबकि उसकी तो कहीं कोई गलती भी नहीं थी।

आखिरकार सीबीएसई को गलती माननी पड़ी। बोर्ड ने वेदांत को जवाब दिया : "Dear Vedant] Thank you for bringing your concern regarding your Physics answer

book to our attention- Upon review] the matter has been eÛamined] and the correct copy of your answer book has been sent to your registered email address- Necessary action for updating your result---"

वेदांत को न्याय मिल गया। पर वह पहली गलत कॉपी किसकी थी? उस दूसरे अज्ञात छात्र का क्या हुआ? क्या उसे भी न्याय मिला? सीबीएसई की एक गलती दो बच्चों का भविष्य एक साथ खराब कर सकती थी। एक को तो न्याय मिल गया पर जब तक बोर्ड उस दूसरे बच्चे को ढूंढकर सार्वजनिक रूप से न्याय नहीं देता, संशय बना रहेगा और उन दूसरे बच्चों के मन में तो असमंजस ही बना रहेगा जिन्होंने बोर्ड से अपनी कापी नहीं मंगवाई।

यह व्यवस्था गरीब बच्चों के लिए तो और क्रूर है। सीबीएसई से जवाहर नवोदय विद्यालय के वे बच्चे भी परीक्षा देते हैं जो बस्तर, लद्दाख, अरुणाचल के दूरदराज गांवों से आते हैं। पिता खेतिहर मजदूर, मां मनरेगा में काम करती है। महीने की कमाई 4–5 हजार रुपये। रिजल्ट के बाद जब उन्हें लगता है कि अंक गलत हैं, तो बोर्ड कहता है,100 रुपये प्रति विषय दो, तब कॉपी दिखाएंगे। पांच विषय के 500 रुपये। (यह भी तब हुआ जब सीबीएसई की गलती को बच्चों ने पकड़ना शुरू किया और दनादन पुनर्मूल्यांकन के आवेदन आने लगे तथा भारी मूल्यांकन फीस का विरोध होने लगा) इससे पहले यह शुल्क 700 रुपए प्रति विषय था और पांच विषय के लिए कुल 3500 रुपए सिर्फ स्कैन्ड कापी के।

जब कापियों में व्यापक स्तर पर गड़बड़ियां सामने आ रही हैं तब यह प्रश्न पूछना तो आवश्यक है कि क्या न्याय सिर्फ उनके लिए है जिनके पास 500 रुपये हों? सुप्रीम कोर्ट कह चुका है कि उत्तर पुस्तिका सूचना है और आरटीआई में 2 रुपये प्रति पेज पर मिलनी चाहिए। फिर 100 रुपये भी क्यों? यह शुल्क नहीं, गरीब के भरोसे पर लगाया गया जुर्माना है। यह शुल्क बच्चों में व्यवस्था के प्रति गुस्सा और नफरत पैदा कर रहा है।

तकनीकी तौर पर बोर्ड लाख सफाई दे और वह सही भी हो सकता है पर जब 4 लाख बच्चे शक कर रहे हों तो सिर्फ सफाई से भरोसा नहीं लौटता। बोर्ड 2025 में खुद मान चुका है कि पुनर्मूल्यांकन के बाद 4632 मामलों में अंक बढ़े और 214 शिक्षकों पर कार्रवाई हुई। हर साल 12,000 से 13,000 छात्रों के अंक बढ़ते हैं। ये सिर्फ वे हैं जिन्होंने फीस देकर अपील की लेकिन जिनकी आर्थिक स्थिति अपील करने की नहीं थी उनका क्या?

होना तो यह चाहिए कि रिजल्ट के साथ हर छात्र को डिजीलॉकर पर निशुल्क स्कैन्ड कॉपी मिले। यह उनका अधिकार है। खासकर नवोदय, केवी और सरकारी स्कूलों के बच्चों के लिए लेकिन 11लाख 31 हजार आवेदन बता रहे हैं कि भरोसा टूट चुका है।

दूसरा, तकनीक रहे पर मानवीय विवेक भी रहे। ओएसएम में डबल चेक सिस्टम तुरंत बहाल हो। कंप्यूटर गलती कर सकता है, बारकोड बदल सकता है। दो शिक्षकों का क्रॉस–चेक वेदांत जैसे केस रोक देगा।

तीसरा, शिक्षकों पर अमानवीय दबाव बंद हो। एक महीने की देरी के बाद 15 कॉपी रोज का कोटा मूल्यांकन की हत्या है। ब्लर कॉपी रिजेक्ट करने का नियम जमीन पर लागू हो।

चौथा और सबसे जरूरी जवाबदेही तय हो। तकनीकी गड़बड़ी कहकर पल्ला झाड़ना बंद हो। जिसने ब्लर कॉपी जांची, जिसने बच्चों की कापियां बदली उस पर सख्त कार्रवाई हो।

सीबीएसई ने आधुनिक बनने की कोशिश की। मगर तकनीक जब मानवीय जवाबदेही को खा जाए तो वह विकास नहीं, विनाश बन जाती है। ओएसएम का मकसद गति और निष्पक्षता था। पर जल्दबाजी और क्रॉस–चेक खत्म करने से 4 लाख बच्चों को तनाव, अवसाद और सिस्टम से नफरत मिली है। यह नफरत उनके भविष्य के लिए जहर है।

22.85 प्रतिशत छात्र गलत नहीं हो सकते। आज हर चौथा बच्चे ने कॉपी दिखाने के लिए आवेदन किया है, तो आसानी से समझा जा सकता है कि व्यवस्था कितनी बीमार है। 17 लाख 68 हजार बच्चों का भरोसा तब लौटेगा जब दिल्ली से दंतेवाड़ा तक के हर उस बच्चे को अपनी कॉपी देखने को मिले,जिसने यह परीक्षा दी है,वह भी बिना किसी शुल्क के। साथ ही यह भी सुनिश्चित हो कि बच्चे को न्याय मांगने पर अशोक श्रीवास्तव और उनके जैसे लोगों की गाली न खानी पड़े।

हमारी संस्कृति और हमारे देश में विद्यालय को शिक्षा का मंदिर माना जाता है,पर यह मंदिर तभी तक पवित्र है जब तक वहां हर बच्चे के लिए न्याय की घंटी एक जैसी बजे। वरना तकनीक कितनी भी उन्नत हो, भरोसे की इमारत ढह जाएगी और उस मलबे में सबसे पहले दबेगा वेदांत जैसे लाखों बच्चों का भविष्य।■

(लेखिका सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं शैक्षणिक विषयों पर विगत तीस वर्षों से सार्थक लेखन में सक्रिय हैं।)

कविता

दिव्य-दीप्त चम्पारण्य

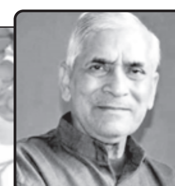

मन्त्र मुदित

साहित्य सम्पादक 'लोकचिन्तन'

स्वर्ण शिखर सोमेश्वर, सदानीरा सिकरहना, तेज–तीर्थ त्रिवेणी।
हरित–भरित भूमि, इक्षुदण्ड–समृद्ध, शस्य–सम्पूरित।
भोजपुरी भाषी, सरल–सज्जन समुदाय, ललित लोक।
आदिकवि वाल्मीकि की रामायण–सर्जन–भूमि, पर्यटकप्रिय व्याघ्र–अभयारण्य।
गाँधी की अहिंसा–प्रयोगभूमि, पण्डित राजकुमार शुक्ल का निलहों से संघर्ष, कमलनाथ तिवारी की काला पानी–यन्त्रणा।
लौरिया का अशोक–स्तम्भ, केसरिया में बौद्ध स्तूप, भितिहरवा आश्रम।
प्राकृतिक झील सरेयाँ मन, मोतिहारी की मनोरम मोतीझील, जॉर्ज ऑरवेल–जन्मभूमि।
गाँधी संग्रहालय–वाचनालय, सोमेश्वरनाथ महादेव, पटजिरवा माई स्थान।
चन्द्रशेखरधर मिश्र, गोपाल सिंह 'नेपाली', सरयू सिंह 'सुन्दर' की साधनाभूमि।
भाषा–भण्डार भरते सुधी साहित्यकार, लेखनी के धनी लेखकगण, शत–शत सुकवि।
'सुन्दर–सुभूमि', निसर्ग का नेहिल अंचल, दिव्य–दीप्त चम्पारण्य!

विश्व में क्रिकेट खेल का बदलता स्वरूप और बढ़ती लोकप्रियता

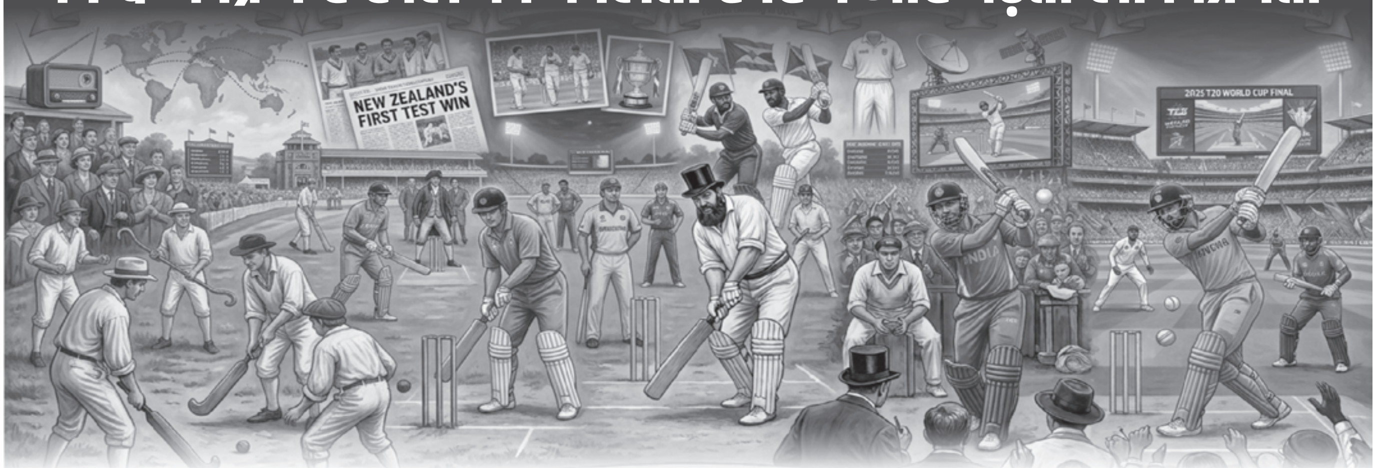

इंदु शेखर त्रिपाठी
वरीय खेल समीक्षक
कोंडापुर, हैदराबाद (तेलंगाना)

मानव जीवन में खेलों का महत्व प्राचीन काल से ही रहा है। जब मानव आदिम अवस्था में ही जंगलों और मैदानों में दौड़–भाग जीवन की आवश्यकता की पूर्ति करता रहा है। सभ्यता का विकास होने पर टीमगत खेलों का उद्भव हुआ। आंतरिक और बाह्य खेलों का क्रमिक विकास हुआ है। इसी के अंतर्गत ब्रिटेन में 19 वीं सदी में क्रिकेट की उत्पत्ति हुई। यह जेंटलमैन (भद्रपुरुष) वाला खेल विकसित हुआ।बस सफेद ड्रेस में क्रिकेट की परंपरागत लाल गेंद से खेला जाता था। सर्वप्रथम क्रिकेट तीन दिवसीय प्रथम श्रेणी मैच और पांच दिवसीय टेस्ट मैच खेला जाता था। फिर ब्रिटेन ने जहां–जहां अपने उपनिवेश स्थापित किया वहीं क्रिकेट को अपने टाइम पास के लिए खेलने लगे और वहां के स्थानीय निवासियों को भी क्रिकेट से जोड़ने लगे। इस प्रकार क्रिकेट ब्रिटेन से निकल कर एशिया, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया और वेस्टइंडीज में लोकप्रिय होने लगा। प्रारंभ में यह खेल धीमा और रोमांचरहित था।इस कारण से यह खेल अमेरिका और यूरोप में लोकप्रिय नहीं हो पाया। बल्कि फुटबॉल, हाकी, बेसबाल, रग्बी, बास्केटबॉल और वालीबाल विश्व में बहुत जल्दी लोकप्रिय हो गये क्योंकि सभी टीमगत मैच परिणाम के साथ कुछ घंटे में संपन्न हो जाते हैं जबकि क्रिकेट टेस्ट मैच पांच दिवसीय खेला जाता था और कभी–कभी मैच का निर्णय भी नहीं होता था।

बीसवीं शताब्दी में क्रिकेट की संस्था अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट काउंसिल की स्थापना ब्रिटेन में की गई। और ब्रिटेन के अतिरिक्त वेस्टइंडीज, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, दक्षिण अफ्रीका, भारत और श्रीलंका में आपस में प्रथम श्रेणी मैच और टेस्ट मैच संपन्न होने लगे। 1947 में भारत–विभाजन के बाद पाकिस्तान का निर्माण होने से क्रिकेट में शामिल हो गया और 1971 में बंगलादेश भी स्वतंत्र होकर क्रिकेट देश बना। यही नहीं, अफ्रीका में स्वतंत्र राष्ट्र जिम्बाब्वे ने भी क्रिकेट को अपनाया। इस क्रिकेट को विश्व में स्थापित करने में डान ब्रैडमैन, डब्लू सी ग्रेस,गैरी सोबर्स, विवियन रिचर्ड्स, एलेन बार्डर, ग्राहम पोलाक, कर्नल सीके नायडू, सुनील गावस्कर, ग्रेग चौपल, ब्रायन लारा और इमरान खान की भूमिका प्रमुख रही है।

बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भी क्रिकेट खेलने वालों की संख्या सीमित थी। क्रिकेट की कोई अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता नहीं होती थी बस आपस में टेस्ट मैच खेला जाता था। इसी बीच आस्ट्रेलिया के धनाढ्य कैरी पैकर्स ने एक प्रयोग क्रिकेट में किया जिसमें सफेद ड्रेस के बजाय रंग–बिरंगी ड्रेस और सफेद क्रिकेट की गेंद का प्रयोग किया गया। यह विश्व क्रिकेट श्रृंखला स्टेडियम में दूधिया रोशनी में 1977 से 1979 तक खेली गई और खिलाड़ियों को बहुत अच्छी धनराशि भी दी गई। उस काल में क्रिकेट खिलाड़ियों को अंतर्राष्ट्रीय मैच खेलने पर बहुत कम फीस दी जाती थी। लेकिन जिन खिलाड़ियों ने अपने देश से नाता तोड़ कर कैरी पैकर्स की विश्व क्रिकेट श्रृंखला में भाग लिया उन्हें अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट काउंसिल ने प्रतिबंधित कर दिया और क्रिकेट खेलने पर बंदिश लगा दी जिससे उनका क्रिकेट कैरियर समाप्त हो गया। कैरी पैकर्स की विश्व क्रिकेट श्रृंखला 1979 के बाद असफल होकर बंद हो गई।

अब समय आ गया था कि क्रिकेट में भी तेज खेल का प्रयोग किया जाये जिसमें बल्लेबाज, गेंदबाज और क्षेत्ररक्षण की भूमिका प्रमुख मानी गई और क्रिकेट में आलराउंडर खिलाड़ी (बल्लेबाजी और गेंदबाजी का मिश्रण) का प्रयोग किया जाने लगा। अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट काउंसिल ने सभी टेस्ट वाले संघों की मदद से एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट टूर्नामेंट को इंट्रोड्यूस किया जिसमें दोनों टीमें सीमित 50–50 ओवर का मैच खेलने लगी। प्रथम विश्व कप क्रिकेट टूर्नामेंट 1975 में प्रूडेंशियल कप के नाम से इंग्लैंड में खेला। जिसे पहली बार वेस्टइंडीज ने विश्व चौंपियन का खिताब जीता। दूसरा खिताब भी वेस्टइंडीज ने ही हासिल किया जबकि वेस्टइंडीज लगातार तीसरा खिताब जीतने में कामयाब नहीं हो पायी क्योंकि भारत ने अजित वाडेकर के नेतृत्व में वेस्टइंडीज को फाइनल में हराकर विश्व चौंपियन का खिताब पहली बार जीता।उसके बाद यह विश्व कप क्रिकेट टूर्नामेंट इंग्लैंड के बाहर भी खेला जाने लगा। रोमांचक और लोकप्रिय प्रतियोगिता हर चार वर्ष में संपन्न होती है। अब तक 14 संस्करण खेले जा चुके हैं जिसमें आस्ट्रेलिया छह बार, वेस्टइंडीज और भारत दो–दो बार और पाकिस्तान, श्रीलंका, इंग्लैंड एक–एक बार विश्व चौंपियन बन चुका है। भारत ने दूसरी बार विश्व चौंपियन 2011 में एम एस धोनी के नेतृत्व में जीता है।

अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट काउंसिल ने क्रिकेट को फुटबॉल, हाकी, बेसबाल, रग्बी और बास्केटबॉल की तरह लोकप्रिय और रोमांचक बनाने के लिए सीमित 20–20 ओवर (टी 20) का सफल आयोजन किया जोकि इक्कीसवीं शताब्दी में बहुत सफल रहा। जिसमें हर टीम रंगीन पोशाक और सफेद गेंद का उपयोग किया जाता है। यह मैच चार–पांच घंटे में शाम को दूधिया रोशनी में ही संपन्न किया जाता है। और पहला विश्व कप क्रिकेट टूर्नामेंट 2007 में दक्षिण अफ्रीका में आयोजित किया गया जिसमें भारत ने पाकिस्तान को हराकर विश्व कप जीता। अब तक आठ संस्करण विश्व कप क्रिकेट टूर्नामेंट खेले जा चुके हैं जिसमें भारत, इंग्लैंड और वेस्टइंडीज ने दो–दो, आस्ट्रेलिया, और पाकिस्तान ने एक–एक बार विश्व

चौंपियन का खिताब जीता है। पिछला विश्व कप क्रिकेट टूर्नामेंट 2024 में वेस्टइंडीज और संयुक्त राज्य अमेरिका में संपन्न हुआ जिसमें भारत ने दक्षिण अफ्रीका को पराजित कर विश्व चैंपियन का खिताब जीता चुका है।

अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट काउंसिल ने स्कूलों और कालेजों में क्रिकेट को प्रोत्साहित करने के लिए विश्व स्तर पर विश्व कप क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन प्रारंभ किया गया। जिससे खिलाड़ियों की कमी न पड़े। इसलिए 1988 में 19 वर्ष से कम युवा क्रिकेट खिलाड़ियों का विश्व कप टूर्नामेंट आरंभ हुआ लेकिन उसके बाद दस साल बाद नियमित प्रतियोगिता 1998 से प्रारंभ हुई जो कि प्रति दो साल के अंतराल से आयोजित होती है। अब तक 16 संस्करण विश्व कप क्रिकेट टूर्नामेंट के खेले जा चुके हैं। जिसमें भारत ने छह बार, आस्ट्रेलिया चार बार, पाकिस्तान दो बार और इंग्लैंड, वेस्टइंडीज, दक्षिण अफ्रीका, बंगलादेश ने एक– एक बार चैंपियनशिप जीती है। इस वर्ष 2026 में भारत ने इंग्लैंड को पराजित कर विश्व चौंपियन का खिताब जीता है। भारत के चौदह वर्षीय वैभव सूर्यवंशी ने आक्रामक बल्लेबाजी करके सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज बना। सबसे बड़ी बात यह है कि युवराज सिंह, मोहम्मद कैफ, विराट कोहली, रोहित शर्मा, शुभमन गिल, सुरेश रैना, शिखर धवन और यशस्वी जैसवाल ने युवा क्रिकेट टूर्नामेंट में श्रेष्ठ प्रदर्शन कर सीनियर भारतीय टीम में सेवायें दी है।

2026 की विश्व कप क्रिकेट पुरुष टी 20 टूर्नामेंट जोकि भारत और श्रीलंका में खेला गया उसके पूर्व बंगलादेश टीम ने सुरक्षा कारणों से भारत में खेलने से इंकार कर दिया और अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट काउंसिल से मांग की कि उसे भी पाकिस्तान की तरह श्रीलंका में खेलने की अनुमति दी जाये। लेकिन आई.सी.सी. ने अनुरोध रद्द कर टूर्नामेंट से बाहर का रास्ता दिखा दिया और उसकी जगह स्काटलैंड को खेलने की अनुमति दे दी। वहीं पाकिस्तान बांग्लादेश को बहिष्कार का समर्थन कर रही थी और टूर्नामेंट में भाग लेने को तैयार हो गई लेकिन 15 मार्च को भारत के विरुद्ध मैच खेलने से इंकार किया। तब अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट काउंसिल ने धन जुर्माना लगाने की सख्ती दिखाई तब दोनों का मैच संपन्न हुआ। इससे पाकिस्तान और बांग्लादेश ने टूर्नामेंट में सौहार्दपूर्ण वातावरण को नष्ट करने की असफल कोशिश की। दोनों देशों को सही तरीके से निर्णय लेकर टूर्नामेंट में बांधा को समाप्त किया।

2026 की विश्व कप क्रिकेट पुरुष टी20 टूर्नामेंट वर्तमान में भारत और श्रीलंका में आयोजित किया गया है। जिसमें टेस्ट टीम सहित संयुक्त राज्य अमेरिका, अफगानिस्तान, ओमन, स्काटलैंड, नेपाल, आयरलैंड, जिम्बाब्वे, नामीबिया, कनाडा, इटली, संयुक्त अरब अमीरात और नीदरलैंड 20 टीमों ने भाग लिया। करीब एक महीना आयोजन शानदार तरीके से भारत और श्रीलंका में किया गया। जिसे सभी स्टेडियम के अतिरिक्त रेडियो और टेलीविजन के माध्यम से सौ करोड़ से अधिक दर्शकों ने क्रिकेट मैच का आनंद लिया। समूह मैचों में केवल पूर्व विश्व चौंपियन आस्ट्रेलिया को जिम्बाब्वे ने पराजित कर सुपर आठ में पहुंचने से रोक दिया। सुपर आठ के मुकाबले भी बहुत रोमांचक रहे जिसमें भारत को दक्षिण अफ्रीका ने हराकर रोकने की असफल कोशिश की लेकिन भारतीय टीम ने अच्छे अंतर से वेस्टइंडीज और जिम्बाब्वे को हरा कर सेमीफाइनल में पहुंच गई।

अब सेमीफाइनल में न्यूजीलैंड ने दक्षिण अफ्रीका को बड़ी आसानी से पराजित किया जबकि भारत ने इंग्लैंड को अप्रत्याशित रूप से पराजित कर फाइनल में जाने से मजबूत ढंग से रोका। अब फाइनल मुकाबला अहमदाबाद में एक लाख से अधिक क्षमता वाले नरेंद्र मोदी स्टेडियम में खेला गया जिसमें टास हारकर भी भारत के प्रमुख बल्लेबाज अभिषेक शर्मा, संजू सैमसन, हार्दिक पांड्या और शिवम दुबे की धुंआधार बल्लेबाजी से विशाल 255 रन का स्कोर बना दिया फिर तेज गेंदबाज बुमराह ने चार और अक्षर पटेल ने तीन विकेट हासिल कर न्यूजीलैंड टीम को 159 पर सीमित कर 96 रन से सुपर जीत कर तीसरी बार सूर्य कुमार यादव के नेतृत्व में विश्व चौंपियन का खिताब जीता है। इसलिए तेज गेंदबाज बुमराह को सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी का खिताब दिया गया और सर्वाधिक तीन बार (वेस्टइंडीज, इंग्लैंड और न्यूजीलैंड) अर्धशतक बना कर टूर्नामेंट का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी का खिताब जीता।

इक्कीसवीं शताब्दी आते–आते विश्व क्रिकेट में बहुत सुधार हुआ। पहले क्रिकेट परंपरागत खेल ही माना जाता था। पहले केवल आठ टेस्ट टीम ही टूर्नामेंट में भाग लेती थी जो कि ब्रिटेन के उपनिवेशित क्षेत्र थे। लेकिन आज 86 देशों की टीमें विश्व कप क्रिकेट के लिए प्रतियोगी बन रही हैं। अब तो अमेरिका महाद्वीप ही नहीं यूरोपीय देशों की टीमें उत्साह से भाग ले रही हैं।

फुटबॉल, हाकी और बेसबाल की तरह क्रिकेट में दर्शकों की संख्या बढ़ती जा रही है। हजारों की क्षमता वाले बड़े–बड़े अंतरराष्ट्रीय स्टेडियम बन गए हैं। भारत में ही 40 बड़े अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम हैं। रेडियो और टेलीविजन के माध्यम से दर्शकों की संख्या करोड़ों में हो गई है। जिसके कारण विज्ञापन और स्पांसरशिप की भरमार हो गई है। जिससे अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट काउंसिल को अरबों डॉलर की कमाई होती है। अब तो भाग लेने वाली टीम को भी अनिवार्य रूप से पर्याप्त धन दिया जाता है। कहा जाता है कि भारतीय क्रिकेट नियंत्रक बोर्ड विश्व का सबसे धनी बोर्ड है। विश्व कप क्रिकेट टी20 टूर्नामेंट जोकि भारत और श्रीलंका में संपन्न हुआ उसका इनाम बजट 120 करोड़ रुपए है। जिसमें विश्व विजेता भारतीय टीम को कप के साथ 27 करोड़ रूपए प्राप्त हुए हैं।

यह वर्ष फीफा विश्व कप फुटबॉल का भी है। क्रिकेट ने अपनी लोकप्रियता सिद्ध कर दी है और फाइनल मैच को विश्व में 100 करोड़ दर्शकों ने बेहद उत्साहित होकर देखा। भारत और न्यूजीलैंड का मुकाबला बहुत रोमांचकारी रहा और बल्लेबाजी, गेंदबाजी और क्षेत्ररक्षण का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया गया फिर भारत के महानगर अहमदाबाद में एक लाख से अधिक क्षमता वाले अंतरराष्ट्रीय नरेंद्र मोदी क्रिकेट स्टेडियम में भव्य क्रिकेट का आयोजन बहुत सफल रहा। ■

कविता

वक्त का मिजाज...!

आशीष कुमार 'अकिंचन'
ब्यूरो प्रमुख 'लोकचिन्तन'
दरभंगा (बिहार)

वक्त का भला कौन रख सकता है हिसाब।
कब, कहाँ और कैसे बदल जाये इसका मिजाज।।
कभी ये पल भर में ही ढेर सारी खुशियां दे जाता
तो कभी सामने दुखों का पहाड़ खड़ा कर देता।।
वक्त तो वक्त है, ये तो है अपने मर्जी का मालिक।
चलता अपने रफ्तार लिए,अपने मन माफिक।।
है लाज़िमी कि वक्त के साथ ही चलना होगा।
जब जैसा आये वक्त आये उसमें रमना होगा।।
वैसे आश की प्यास तो लगी ही रहती है सबको।
पर है ये इक मृगतृष्णा ही, यह भी समझो।।
हाँ यह सच है कि वक्त हमें बहुत कुछ सिखला जाता है।
अच्छे–बुरे और अपने–पराये की पहचान करवा जाता है।।
वैसे वक्त बुरा हो या भला,सब सहना होता है।
आखिर वक्त के सामने सबको ही झुकना होता है।।
इसलिए कभी भी नहीं घबड़ाना है वक्त के व्यवहार से।
क्योंकि वक्त लेता ही है... अग्निपरीक्षा परीक्षा, जीवन में हर प्रकार से।।

धुरंधर 2: राष्ट्रवाद का उत्कर्ष या संवेदना का क्षरण

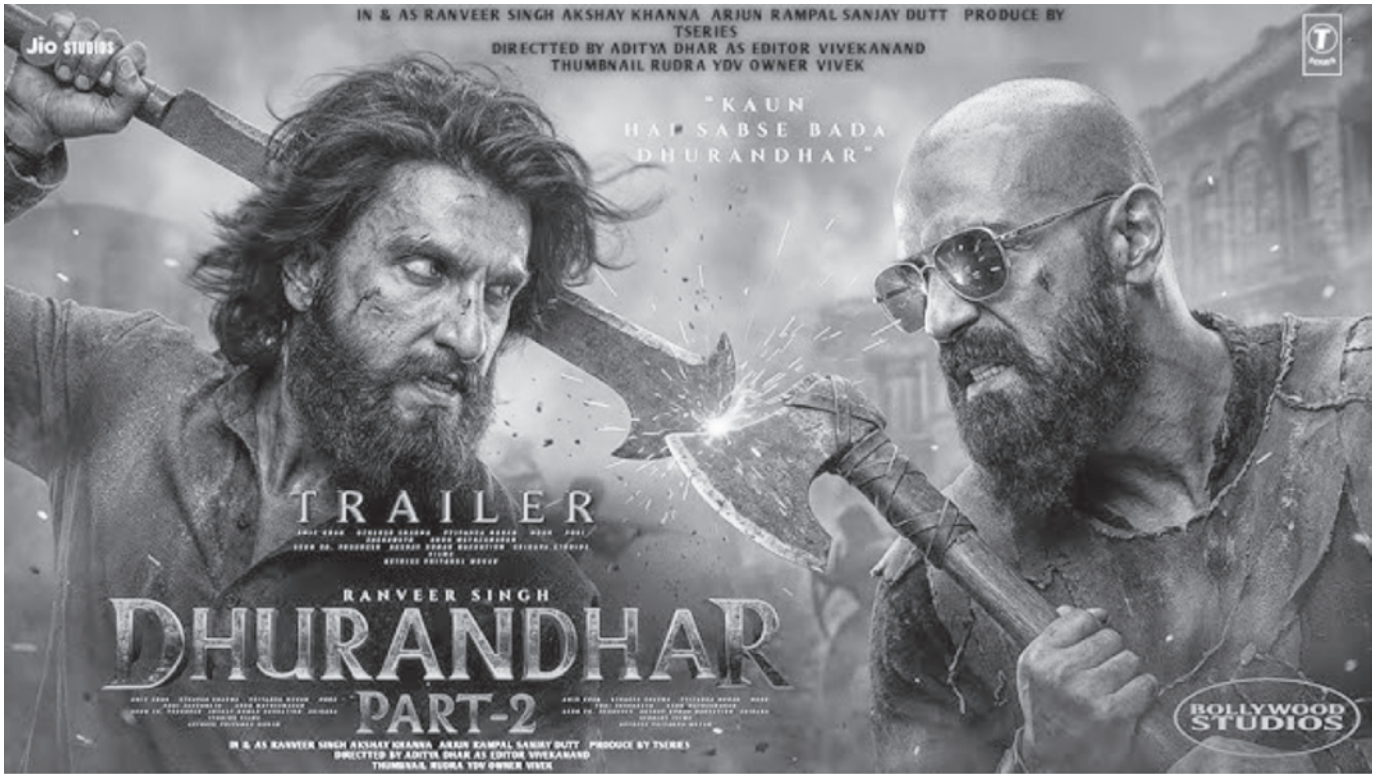

डॉ॰ सिन्धु कुमारी
ब्यूरो प्रमुख 'लोकचिन्तन' पटना प्रमण्डल।

भारतीय सिनेमा के वर्तमान परिदृश्य में एक नई प्रवृत्ति तेज़ी से उभर रही है– जहाँ देशभक्ति केवल एक भाव नहीं, बल्कि प्रदर्शन बनती जा रही है; और युद्ध केवल सीमा पर नहीं, बल्कि परदे पर भी लड़ा जा रहा है। 'धुरंधर 2 : द रिवेंज' इसी प्रवृत्ति का सबसे सशक्त और साथ ही सबसे विवादास्पद उदाहरण बनकर सामने आई है।

निर्देशक आदित्य धर, जिन्होंने 'उरी द सर्जिकल स्ट्राइक' के माध्यम से राष्ट्रवाद को एक नई सिनेमाई ऊर्जा दी थी, इस बार उसे और अधिक तीव्र, आक्रामक तथा व्यापक रूप में प्रस्तुत करते हैं। फिल्म की पृष्ठभूमि कंधार हाईजैक और 26/11 जैसे घटनाक्रमों से प्रेरित है, जो दर्शकों की स्मृतियों में पहले से ही संवेदनात्मक रूप से गहरे अंकित हैं। यही कारण है कि यह फिल्म केवल मनोरंजन नहीं रह जाती, बल्कि एक वैचारिक हस्तक्षेप बन जाती है।

नायक का चरित्र और वैचारिक द्वंद्व को फिल्म का नायक, जिसे रणवीर सिंह ने अत्यंत सशक्त रूप में निभाया है, एक ऐसे भारतीय एजेंट का प्रतीक है जो प्रतिशोध को ही न्याय का पर्याय मान बैठता है। यह चरित्र केवल एक व्यक्ति नहीं, बल्कि उस सामूहिक मानस का प्रतिनिधि है जो आक्रोश और आघात के बीच न्याय की तलाश करता है। परंतु यक्षप्रश्न यह है कि क्या प्रतिशोध की आग में न्याय की लौ सुरक्षित रह पाती है?

यहीं से फिल्म का वास्तविक द्वंद्व शुरू होता है :

एक ओर यह आतंकवाद के विरुद्ध कठोर और निर्णायक कार्रवाई का पुरज़ोर समर्थन करती है।

वहीं दूसरी ओर, अनजाने में यह हिंसा को एक सामाजिक वैधता भी प्रदान करती प्रतीत होती है।

बार–बार दोहराए गए संवाद और क्रूर दृश्य एक ऐसी मानसिकता का निर्माण करते हैं जहाँ 'मारना' ही एकमात्र आवश्यक और उचित विकल्प बन जाता है। यह प्रवृत्ति विशेष रूप से चिंताजनक है, क्योंकि सिनेमा केवल समाज का दर्पण नहीं होता, बल्कि उसकी दिशा भी तय करता है।

अभिनय और तकनीकी पक्ष

फिल्म में आर. माधवन, अक्षय खन्ना, संजय दत्त और अर्जुन रामपाल जैसे अनुभवी कलाकारों की उपस्थिति कथा को गहराई देती है, किंतु उनके पात्रों को जिस प्रकार एकांगी (One & dimensional) रूप में प्रस्तुत किया गया है, वह कहानी की जटिलता को सीमित कर देता है। विशेषकर विरोधी पात्रों का अमानवीकरण, फिल्म को यथार्थ से दूर ले जाकर एक :प्रचारात्मक स्वर' प्रदान करता है।

तकनीकी मूल्यांकन : फिल्म का तकनीकी पक्ष निस्संदेह प्रभावशाली है। भव्य दृश्यांकन, तीव्र पार्श्व संगीत (Background Score) और कसावट भरी संपादन शैली दर्शकों को अंत तक बाँधे रखती है। 229 मिनट की लंबी अवधि के बावजूद फिल्म अपनी गति नहीं खोती। किंतु यही भव्यता कई बार अतिशयोक्ति में बदल जाती है, जहाँ संवेदना की जगह केवल उत्तेजना शेष रह जाती है।■

रीवा के उत्खनन से बदलेगा छत्तीसगढ़ का प्राचीन इतिहास

डॉ॰ लोकेश कुमार शरण
(इतिहासकार, शोधार्थी एवं लेखक)
ब्यूरो प्रमुख, 'लोकचिन्तन' सीतामढ़ी (बिहार)

- **1790 में पहली बार रीवा के पुरातात्विक महत्व के होने की जानकारी मिली**
- **ब्रिटिश इतिहासकार अलेक्जेन्डर कनिंघम ने की थी आरंग की यात्रा**
- **उत्खनन में प्रागैतिहासिक काल से लेकर मध्ययुगीन तक की पुरा सामग्री मिली**
- **छत्तीसगढ़ में पहला 'रिंग वेल' रीवा के उत्खनन में मिला**
- **छत्तीसगढ़ के पुरातात्विक इतिहास में पहली बार पुरा सामग्रियों के एएमएस**
- **रेडियोकार्बन-14 पद्धति से वैज्ञानिक परीक्षण के लिए अमेरिका भेजा गया**

भौगोलिक स्थिति– छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर जिला मुख्यालय से लगभग 25 किमी पूरब आरंग तहसील का एक समृद्ध प्राचीन गांव है 'रीवा'। यह अक्षांस 210 उत्तर देशांतर 810 830 पूर्व में राष्ट्रीय राजमार्ग–53 के समीप अवस्थित है। आरंग से रीवा की दूरी लगभग 8 किमी है। 'रीवा' नामकरण के संबंध में माना जाता है कि 'रीवा' संभवतः उस शब्द से लिया गया है जिसका अर्थ है– गुप्त और अनुष्ठानिक स्थान का प्रवाह। रीवा गांव कोल्हान नाला व महानदी के मध्य में बसा हुआ है। कोल्हान नाला का उद्‌गम नवा रायपुर के खरखराडीह में स्थित है। यह सिमगा के समीप खारुन नदी में मिलकर शिवनाथ नदी में समाहृत हो जाती है। यह आरंग को मल्हार, सिरपुर व राजिम से जोड़ती थी। छत्तीसगढ़ की एक प्रमुख नदी 'महानदी' की दूरी यहां से लगभग 14 किमी है। उल्लेखनीय है कि विश्व की किसी भी सभ्यता अथवा संस्कृति के विकास में नदियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। नदियों के किनारे बसा यह इलाका प्राचीन काल में वाणिज्य व्यापार में महत्वपूर्ण स्थान रखता था। आरंग मंदिरों व दानी राजा मोरध्वज के नाम से ही नहीं, बल्कि तालाबों के लिए भी सुविख्यात रहा है। आरंग को मंदिरों और तालाबों का नगर भी कहा जाता है। मंदिर धार्मिक आस्था के, तो तालाब जल संरक्षण के केन्द्र हुआ करते थे। यह स्थल 'रीवा गढ़' के नाम से भी प्रसिद्ध रहा है। प्रचलित किंवदंतियों के मुताबिक प्राचीन नगरों में छह कोरी छह आगर अर्थात 126 तालाब होते थे जिसकी चर्चा आज भी प्रबुद्ध लोग करते हैं। परंतु वर्तमान में लगभग 50 तालाब ही अस्तित्व में हैं। आरंग से जुड़ी किंवदंतियों अथवा लोकगाथाओं का भी अपना विशिष्ट स्थान है। जिस प्रकार हीर–रांझा, रोमियो–जूलियट, लैला–मजनू, शिरी–फरहाद की प्रेम गाथाएं प्रसिद्ध हैं उसी तरह यहां ढोला–मारू व लोरिक–चंदा की अमर प्रेम गाथाएं आरंग की सांस्कृतिक धरोहर है। रीवा को लोकप्रिय बनाने में 'लोरिक चंदा' के गीत का महत्वपूर्ण स्थान माना जाता है। उत्तर भारत में विभिन्न अवसरों पर इनकी प्रेम गाथाएं आज भी लोक कलाकारों द्वारा नाटकों के माध्यम से मंचित किए जाते हैं। माना जाता है कि ये प्रेम गाथाएं 1100 से 1500 ई. के मध्य की है। यहां के साहित्यकार व लोक कलाकार लोरिक और चंदा का आरंग से गहरा रिश्ता मानते हैं। प्राचीन चंडी मंदिर के समीप विशाल 'बंधवा तालाब' के समीप लगभग 75 एकड़ के विस्तृत भू–भाग में फैले मिट्टी के किले के अवशेष आज भी देखे जा सकते हैं। ये खाई और प्राचीरों से घिरा हुआ है। प्राचीरों और खाई के भीतर हजारों साल पुरानी मानव बसाहट के अवशेष विशाल टीले के रुप में पाए गए। यहां दो विधियों– 'उर्ध्वाधर उत्खनन विधि (वर्टिकल एक्सकेवेशन मैथड) और 'क्षैतिज उत्खनन विधि (होरिजेंटल एक्सकेवेशन मैथड) से उत्खनन कार्य संपन्न कराये गए हैं। उत्खनन में यहां छह विभिन्न सांस्कृतिक चरणों के विकसित होने की पुष्टि हुई। यहां यह उल्लेखनीय है कि हम सभी छत्तीसगढ़ के गौरवशाली इतिहास के रुप में सिरपुर के वैभव को जानते है, जबकि रीवा के समृद्ध इतिहास का प्रारंभ सिरपुर से लगभग 1700 वर्ष पूर्व हुआ था।

रीवा में हुए उत्खनन में बड़ी संख्या में विभिन्न कालखडों के सिक्कों के मिलने से यहां एक साथ मानव के विभिन्न संस्कृतियों के विकसित होने की पुष्टि हुई है। हजारों वर्षों से उन्नतशील संस्कृति को अपने गर्भ में समेटे रीवा की धरती से मिले पुरावशेषों ने छत्तीसगढ़ के प्राचीन इतिहास के पटल पर एक नये आयाम को प्रतिष्ठापित किया है। यहां प्रागैतिहासिक काल से लेकर मध्ययुगीन काल तक की असंख्य प्राचीन वस्तुएं प्राप्त हुई है, जिसने हमारी समृद्ध सनातन संस्कृति को भी रेखांकित किया है। रीवा में 800 से 400 ई. पू. पूर्व के बीच मानव बस्ती के आबाद होने के पुख्ता प्रमाण मिले है और इसकी निरंतरता लगभग 700 ई. तक रही। उत्खनन के सह निर्देशक डॉ. वृषोत्म साहू ने बताया कि रीवा उत्खनन में अलग–अलग स्थानों से विभिन्न सांस्कृतिक कालखंडों के पुरावशेष प्राप्त हुए हैं। हाथी दांत से निर्मित पशु व मानव के खिलौने आदि मौर्य, मघ, सातवाहन, कुषाण, शरभपुरीया, कलचुरि व मराठा कालीन पुरावशेष प्राप्त हुए है। एन. बी.पी.डब्ल्यू.

(उत्तरीकाले पॉलिशदार मृदभांड), सूक्ष्मपाषाण उपकरण, पासा, हाथी के जबड़े का जीवाश्म, मौर्य और जनपदकालीन पंचमार्क सिक्के अत्यंत महत्वपूर्ण पुरावशेष हैं। कुषाणकालीन ताम्र मुद्रा निधि, रिंग वेल व मिट्टी निर्मित बौद्ध स्तूप के अवशेष छत्तीसगढ़ के इतिहास एवं पुरातत्व में नवीन अध्याय का सृजन करेंगे। मल्हार प्रतीक चिन्ह युक्त ताम्रसिक्के भी छत्तीसगढ़ के इतिहास में नवीन अध्याय जोड़ने वाले हैं।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि– छत्तीसगढ़ का भारत के सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान हैं। प्राचीनकाल में यह क्षेत्र कोसल और महाकोसल के नाम से जाना जाता था। इस क्षेत्र में मंदिर, स्तूप, किले, गढ़ व पुरातात्विक स्थल काफी संख्या में मौजूद हैं जो हमारी प्राचीन सांस्कृति कला और वास्तुकला का प्रतिनिधित्व करते हैं। आरंग के पौराणिक व ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को भी जानना यहां प्रासंगिक प्रतीत होता है। विभिन्न स्रोतों से मिली जानकारी के मुताबिक दक्षिण कोसल क्षेत्र की उत्पत्ति एक महाकाव्य से जुड़ी है। कोसल के राजकुमार राम को उनकी पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण के साथ वनवास दिया गया था। वे अयोध्या से दक्षिण की ओर प्रयाग तक गए, फिर दक्षिण–पश्चिम में नर्मदा घाटी की ओर बढ़े, जिसके बाद वे उस क्षेत्र में पहंचे जिसे छत्तीसगढ़ राज्य के रूप में पहचाना जा सकता है। वे वहां लगभग दस वर्षों तक रहे और राम के बाद कोसल राज्य उनके दो पुत्रों लव और कुश के बीच विभाजित हो गया। लव को उत्तर कोसल प्राप्त हुआ और उन्होंने श्रावस्ती से शासन किया, जबकि कुश को दक्षिण कोसल प्राप्त हुआ और उन्होंने विध्य पर्वतमाला के निकट कुसवती या कुसस्थलीपुरा नगर की स्थापना की। पद्म पुराण में भी यही परंपरा दर्ज है। महाभारत में जरासंध के आतंक के कारण पूर्वी कोसल के लोगों के बड़े पैमाने पर दक्षिण की ओर पलायन का वर्णन है। इतिहासकार पॉजिटर का दावा है कि ये प्रवासी छत्तीसगढ़ में बस गए थे। पुराणों मे वर्णित उत्कल, कलिंग, ओड्रा और कोसल की उत्पत्ति ऐतिहासिक से अधिक पौराणिक प्रतीत होती है। लेकिन यह तथ्य कि दक्षिण कोसल का विकास कोसल से पलायन करने वाले लोगों के बसने से हुआ, इस क्षेत्र की उत्पत्ति के लिए यह एक तर्कसंगत परिकल्पना प्रस्तुत करता है। महाकाव्य में कोसल– दक्षिण कोसल को दक्षिणापथ में शामिल नहीं किया गया है। परंतु इलाहाबाद के समुद्रगुप्त स्तंभलेख में कोसल का उल्लेख दक्षिणपथ के क्षेत्रों के साथ किया गया है इसे महाकांतरा और कलिंग क्षेत्र के राज्यों से जोड़ा गया है। इतिहासकार एच. सी. राय चौधरी इलाहाबाद स्तंभलेख में वर्णित इस कोसल की पहचान आधुनिक बिलासपुर, रायपुर और संबलपुर जिलों के क्षेत्र से करते हैं। जबकि इतिहासकार राजकुमार शर्मा इलाहाबाद स्तंभलेख में वर्णित इस कोसल की पहचान दक्षिण कोसल से करते हैं।

दक्षिण कोसल की उत्पत्ति से संबंधित पारंपरिक कथाएं एक अप्रकाशित पांडुलिपि, कोसल खंड में दर्ज है। कथा के अनुसार विंध्य पर्वतमाला के दक्षिण में स्थित एक देश पर कोसल नाम का शक्तिशाली राजा शासन करता था। इस देश की राजधानी नागपट्टन थी। राजा कोसल के शासनकाल के बाद इस देश का नाम उनके नाम पर रखा गया। कुछ पीढ़ियों बाद, राजा भानुमंत की पुत्री कौशल्या का विवाह अयोध्या के राजा दशरथ से हुआ। भानुमंत की मृत्यु के बाद उनके दामाद दशरथ को राज्य का उत्तराधिकार प्राप्त हुआ। तब से कोसल को दक्षिण कोसल और अयोध्या उत्तर कोसल के नाम से जाना जाने लगा। भारत के प्राचीन ब्राह्मी शिलालेखों में महाकोसल या दक्षिण कोसल नाम का कहीं उल्लेख नहीं है। वन पर्व में कोसल के तीर्थ स्थलों का वर्णन है जैसा कि ऋषभतीर्थ, कलातीर्थ और बदरिकातीर्थ, जो छत्तीसगढ़ क्षेत्र में स्थित हैं। गुंजी शिलालेख में ऋषभतीर्थ का उल्लेख है, हालांकि कोसल नाम का उल्लेख नहीं है। वन पर्व से यह ज्ञात होता है कि कोसल का क्षेत्र विदर्भ राज्य से अलग था। महाकाव्य में नल, जो अपनी पत्नी दमयंती के साथ विंध्य वन में विचरण कर रहे थे – विदर्भ कोसल के मार्ग की ओर इशारा करते हुए कहते हैं– यह मार्ग विदर्भ की ओर जाता है और वह मार्ग कोसल की ओर। उसके आगे दक्षिण में दक्षिणापथ है। कोसल की राजधानी का सही–सही पता नहीं चल पाया है। समुद्रगुप्त के इलाहाबाद स्तंभ लेख में भी कोसल की राजधानी का उल्लेख नहीं मिलता है। इसे लेकर इतिहासकारों में मत भिन्नता है। महाभारत में चेदि राजधानी को सुक्तिमती नदी के किनारे स्थित बताया गया है, जिसका नाम स्वयं सुक्तिमाता पर्वतमाला से पड़ा है, जहां से यह निकलती है। सुक्तिमाता भारत की सात पर्वतमालाओं में से एक थी, परंतु इसकी पहचान अब तक नहीं हो पायी है। ब्रिटिश इतिहासकार अलेकजेन्डर कनिंघम का मानना है कि सुक्तिमती नदी ही 'महानदी' होनी चाहिए, क्योंकि महाकोसल या चेदि देश वास्तव में ऊपरी महानदी और उसकी सहायक नदियों की पूरी घाटी में फैला हुआ था। इसलिए सुक्तिमती पर्वतमाला सिहावा और काकेर के दक्षिण में स्थित ऊँची पर्वतमाला से मेल खाती है, जहां से महानदी, पैरी और शिवनाथ नदियां निकलती है। ये छत्तीसगढ़ और बस्तर के बीच सीमा बनाती है। उनका दावा है कि बांधोगढ़ क्षेत्र शक्तिशाली महाकोसल साम्राज्य का हिस्सा था।

बताते हैं कि छठी से बारहवीं शताब्दी के बीच शरभपुरिया, पांडुवंशी, कलचुरी और नागवंशी (फणीनाग– कवर्धा/छिन्दकनाग– बस्तर) शासकों ने इस क्षेत्र पर अपना प्रभुत्व जमाया। छत्तीसगढ़ का दक्षिण खोसला कला सहित सांस्कृतिक विरासत और पुरातात्विक स्मारकों से समृद्ध रहा है। मध्यप्रदेश से अलग होकर बने छत्तीसगढ़ की एक विशिष्ट भौगालिक व सास्कृतिक पहचान है, जो इसके आसपास के छह राज्यों– उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश के साथ साझा की जाती है। समुद्रगुप्त के इलाहाबाद स्तंभ शिलालेख में भारत में एक शाही संरचना के निर्माण के लिए आर्यावर्त और दक्षिणपथ दोनों में उनके अभियान का स्पष्ट उल्लेख है। छत्तीसगढ़ में उत्खनन स्थल देवरी, सिरपुर, मल्हार, पचराही, महेशपुर, मदकुद्वीप, डमरु, तारीघाट, राजिम, जमराव और रीवा हैं। दक्षिण कोसल जो वर्तमान छत्तीसगढ़ की सीमा से लगता है न केवल अपने प्रभावशाली किलों के समूह के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि बौद्ध प्राचीन अवशेषों के लिए भी जाना जाता है। इस क्षेत्र में बौद्ध धर्म की व्यापक गतिविधियों का प्रमाण चीनी तीर्थयात्री ह्वेनसांग से मिलता है जिन्होंने लगभग 636 ई. में दक्षिण कोसल की यात्रा की थी और एक प्राचीन मठ के साथ–साथ एक 'अशोक स्तूप' की खोज की। हाल ही में हुए शोध से 20 से अधिक बौद्ध बस्तियों का पता चला है। इनमें सरगुजा, कवर्धा, चौरा, जोगीमारा और सन्नापत तथा जांजगीर में खरौद शिवरीनारायण, राजिम, दुर्ग, सिरपुर आदि शामिल हैं। इतिहासकार पंडित लोचन प्रसाद पांडेय के मुताबिक दक्षिण कोशल की सीमा इस प्रकार थी– उत्तर में गंगा, दक्षिण में गोदावरी, पश्चिम में उज्जैन और पूर्व में पूर्वी समुद्र तटवर्ती पाली।

पुरातात्विक उत्खनन के प्रयास– रीवा के पुरातात्विक महत्व के होने की पहली जानकारी वर्ष 1790 ई. में एक अंग्रेज यात्री 'लेकी' से मिली थी। लेकी ने अपने यात्रा वृतांत में यहां एक विशाल तालाब और उसके पास आम के बाग का उल्लेख किया, जहां उन्होंने कुछ समय के लिए विश्राम किया था। लेकी ने लिखा है कि आरंग एक बड़ा और समृद्ध शहर था। यहां कई व्यापारी और बुनकर रहते थे। आरंग के रीवा गांव में आमों का एक विशाल बाग था। ब्रिटिश यात्री आम के बाग में स्थित एक बड़े तालाब के किनारे रुके। यहां लोगों ने उन्हें बताया कि महानदी का उदगम दक्षिण – पूर्व में 120 मील दूर स्थित सिहावा पहाड़ी के जंगल से होता है। ब्रिटिश इतिहासकार अलेकजेंडर कनिंघम ने आरंग के रीवा क्षेत्र का वर्णन अपनी रिपोर्ट में विस्तार से किया था। इसके बाद कई विद्वानों ने इस स्थल का दौरा किया। ब्रिटिश इतिहासकार ए. ई. नेल्सन के 'सेन्ट्रल प्रोविंसेस डिस्ट्रिक्ट गजेटियर रायपुर डिस्ट्रिक्ट' (1909) में इस स्थल पर तीन टीलों का उल्लेख किया गया है, जिनके विषय में माना जाता है कि वे बौद्ध धर्म से संबंधित है। यहां स्थित टीले को पूर्ववर्ती

इतिहासकारों ने 'स्तूप' होने की संभावना व्यक्त की। बी. सी. जैन ने अपने लेख में रीवा के सोने के सिक्कों की खोज का उल्लेख किया। 1975 में स्थानीय पंचूराम नाम के एक चरवाहे को इस गढ़ के आसपास से 35 स्वर्ण सिक्के मिले जो प्रसन्नमात्र शरभपुरीय नामक शासक के कार्यकाल के थे। इतिहासकार बी. सी. जैन ने अपने लेख 'ढलवां सोने के सिक्कों का नया भंडार' में रींवा के सोने के सिक्कों की खोज का उल्लेख किया। ये सिक्के रीवा गांव में उत्कीर्ण किए गए थे। इन सिक्कों को महंथ घासीदास संग्रहालय, रायपुर में रखा गया है। प्राचीन गढ़ क्षेत्र में स्वर्ण सिक्कों के अतिरिक्त विभिन्न धातुओं के अलग–अलग आकृति के सिक्के, मिट्टी के बर्तनों के मिलने से पुरातत्ववेत्ताओं का ध्यान रीवा की ओर आकर्षित हुआ। इतिहासकारों की टीमें समय–समय पर इस स्थल का मुआयना करती रही। अंततः यहां 'स्तूप' होने की संभावना और पुरा सामग्रियों के मिलने के आधार पर रीवा के वास्तविक इतिहास को प्रकाश में लाने का प्रयास प्रारंभ हुआ। सर्वेक्षण के दौरान यहां बड़ी संख्या में मिट्टी के किले मिले जो प्रारंभिक लौह युग के दौरान इस क्षेत्र में अपनाई गई रक्षा की नई अवधारणा के प्रमाण हैं। यहां 'स्तूप' के विषय में जानना भी आवश्यक होगा। 'स्तूप' का निर्माण समाधि के रूप में किया जाता था। स्तूप की उत्पत्ति लौरिया नंदनगढ़ के इन्हीं टीलों से हुई है। इसमें एक प्रतिबिंबित बौद्ध स्तूप का आकार दिखाई देता है। ऋग्वेद में स्तूप शब्द का प्रयोग दो बार किया गया है। एक जगह इसकी तुलना चारों ओर फैले हुए वृक्ष के आकार से की गई है। बुद्ध के पूर्व वैदिक साहित्य के अनुसार, स्तूप शब्द किसी महान व्यक्ति के स्मारक की घोषणा है। बौद्ध साहित्य में स्तूप शब्द का प्रयोग मृत व्यक्ति के राख पर बनाई गई समाधि के लिए किया जाता है, जिसका आकार उल्टे कटोरे के समान होता हैं। बाद में स्तूप शब्द का प्रयोग ऐसे स्मारकों के लिए भी किया जाने लगा। स्तूप का निर्माण बुद्ध और भिक्षुओं की स्मृति में किसी विशेष घटना के उपलक्ष्य में किया जाता था। पहले यह लकड़ी की सहायता से बनाया जाता था। धीरे–धीरे मिट्टी के टीलों को इटों और पत्थरों से सजाया जाने लगा। रीवा में पाया गया स्तूप हमें उस पुरातन संस्कृति की याद दिलाता है।

काफी विचार मंथन के बाद रीवा में पुरातात्विक उत्खनन के लिए 2017 ई. में महानिदेशक, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण नई दिल्ली को प्रस्ताव भेजा गया। महानिदेशक ने 2018–19 ई. सत्र के लिए उत्खनन की अनुमति दी। तत्पश्चात संचनालय संस्कृति एवं पुरातत्व निदेशालय, रायपुर द्वारा चिन्हित टीलों में से दो टीलों पर वर्ष 2019 ई. में उत्खनन कार्य प्रारंभ कराया गया जो 2025 ई. तक चला। पुरातत्व निदेशालय, अभिलेखागार एवं संग्रहालय रायपुर के निदेशक डॉ. पी. सी. पारख, सह निर्देशक डॉ. वृषोत्तम साहू व कन्सलटेंट डॉ. राजीव जे. मिंज ने लेखक के साथ एक साक्षात्कार में रीवा के पुरातात्विक उत्खनन से प्राप्त पुरावशेषों की विस्तार से जानकारी दी।

उत्खनन से प्राप्त पुरावशेष – लगभग 1400 वर्गमीटर क्षेत्र में अलग–अलग गहराई (अधिकतम 7 मीटर) तक उत्खनन के बाद 'नेचुरल मिट्टी' की परत मिली। इतने बड़े सांस्कृतिक जमाव के विभिन्न स्तरों से विभिन्न कालों के पुरावशेष उजागर हुए है। उत्खनन में प्राप्त मौर्य, शुंग, सातवाहन, शक क्षत्रप, मघ, कुषाण और स्थानीय सिक्कों से विभिन्न कालों में हो रहे व्यापारिक उन्नति के बारे में पता चलता है। व्यापारिक गतिविधियों की पुख्ता जानकारी अभिलिखित मृणमय और धातु मुद्रा, मुहर और सिक्के (मुद्रांक) से भी मिलती है। पुरालिपि के आधार पर इन्हें दूसरी ई.पू. से लेकर 7वीं ई. के बीच रख सकते हैं। उत्खनन में सिक्के, मनके, प्राकृतिक लकड़ी के टुकड़े, मिट्टी के बर्तन, लोहे और तांबे की वस्तुएं, चक्की और खंण्डित अवशेष, पशुओं की हड्डी से बनी वस्तुएं, जले हुए चावल के अवशेष आदि प्राप्त हुए हैं।

मृण मूर्तियां– मानव इतिहास को जानने में टेराकोटा (पकी मिट्टी के बर्तन) व मिट्टी के बर्तनों का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान है। इनके विश्लेषण से हमें उस काल की विभिन्न संस्कृतियों के अध्ययन में काफी सहायता मिलती है। यही कारण है कि मिट्टी से बने पुरा सामग्रियों को 'पुरातत्व की वर्णमाला' कहा जाता हैं। जैसे–जैसे मानव का बौद्धिक विकास होता गया, वैसे–वैसे वह कलात्मक बर्तन बनाने लगा। पहले उसने हाथ से बर्तन बनाना सीखा फिर वह चाक की सहायता से बर्तन बनाने लगा। रीवा में काफी संख्यां में विभिन्न आकारों के खाना पकाने वाले बर्तन, हांडी, सुराही, लंबी गर्दन वाले गोलाकार बर्तन, धुमावदार किनारे वाले व घुंडीदार बर्तन, कटोरे, टोटी वाले बर्तन, बोतलें, बिना ढक्कन वाले जार और ढक्कन, कटोरा, हुक्का सहित अनेक प्रकार के बर्तन पाये गए है। उत्खनन में किसी स्तर से गेरुआ तो किसी स्तर से काले, धूसर एवं चमकदार बर्तनों के टुकड़े मिले है। कुछ विशिष्ट कुषाणकालीन मिट्टी के पके बर्तन और बिना पॉलिश वाले बर्तन भी पाये गए है। एन. बी. पी. डब्ल्यू. के प्राप्त बर्तन उस युग के सर्वश्रेष्ठ बर्तन थे। समृद्धि सूचक इन बर्तनों पर अत्यधिक चमकीली गाढ़ी, काली, भूरी पॉलिश लगी होती थी। धातु की तरह कठोर इन बर्तनों का प्रयोग बहुधा तश्तरियों तथा छोटे प्यालों में होता था। इससे पता चलता है कि प्रत्येक काल में एक विशेष प्रकार के मिट्टी के बर्तन बनाने की तकनीक यहां विकसित थी। समय के साथ–साथ इनके आकार–प्रकार, रंग और इन्हें बनाने की विधियां भी बदलती गई। पहले वह हाथ से और फिर चाक से बर्तन बनाने लगा। ये बर्तन भोजन और मानव अवशेषों के भंडारण के लिए उपयोग में लाए जाते थे। संग्रह पात्र के मिलने से पता चलता है कि मानव उस काल में अतिरिक्त उत्पादन करने लगा था। उत्खनन में सबसे नीचले स्तर (लगभग 6 मीटर) से लौहयुग के मिट्टी के चित्रित बर्तन मिले। यह विशेषता पहली बार छत्तीसगढ़ के किसी पुरास्थल पर देखी गई है। उत्खनन में बर्तन व टाईल्स पकाने का आवा, कच्चे बर्तन को ठोक कर फैलाने वाला डैबर (पिरहुर/थापी) व सांचा भी प्राप्त हुआ है।

यहां से प्राप्त अनेक नारी मृणमूर्तियां तत्कालीन समाज में नारी की उच्च स्थिति को प्रतिबिम्बित करते हैं। उत्खनन में कलात्मक नारी मृणमूर्तियां, खिलौने आदि बड़ी संख्या में मिले हैं। इन्हें छह वर्गों में विभक्त किया गया है– मानव आकृतियां, पशु–पक्षियों की आकृतियां, आभूषण, खेल की वस्तुएं, धार्मिक वस्तुएं और विविध वस्तुएं। कई प्रकार की हस्तनिर्मित और एकल व दोहरे सांचे में ढली टेराकोटा कलाकृतियां पायी गई हैं। अधिकांश मूर्तियां खंडित अवस्था में मिली हैं। इनमें आठ मानव मूर्तियां हैं जिनमें पांच महिलाएं, दो पुरुष व एक अज्ञात मूर्ति है। एक छोटी सजावटी मछली की मूर्ति मिली है। मछली के पंख, पूंछ और आंखें स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होते हैं। एक पत्थर का टुकड़ा पाया गया है जिस पर फूलदान और फूलों का गुच्छा उकेरा गया है। इससे पता चलता है कि रीवा में मिट्टी के बर्तन बनाने की कला अत्यंत समृद्ध रही होगी। अधिकांश पुरा सामग्रियां मौर्य, मघ, कुषाण और गुप्त कालखंडों के बताये गए हैं।

रीवा के उत्खनन में महिला श्रृंगार प्रसाधन की वस्तुएं अधिक संख्या में प्राप्त हुई हैं। चूड़ियां, कान की बाली, सोने की नथनी जैसे आभूषण, झुमके, लटकन आदि की आकृतियां मिली हैं। इनके अतिरिक्त विभिन्न आकृतियों के मनके प्राप्त हुए हैं। मोतियों के निर्माण की एक कार्यशाला का पता चला है जिसमें तैयार और अधूरी मोतियां, अपशिष्ट पदार्थों, शिल्प गतिविधियों के कार्यक्षेत्र आदि का पूरा विवरण मिलता है। कई प्रकार के मोती भी पाये गए हैं। इन्हें मुख्य रुप से गोलाकार, बेलनाकार और अंडाकार आकृतियों में विभाजित किया जा सकता है। तांबे की एक अंगूठी मिली है जिसपर ब्राह्मी लिपि उकेरी हुई है जबकि दो अन्य अंगूठियों में से एक फूल के आकार की तो दूसरी ज्यामितीय वृत्ताकार रेखाओं से सुशोभित है। महिलाओं द्वारा कुमकुम व सिंदूर लगाने वाला स्टाइलस, आंखों में काजल अथवा सूरमा लगाने वाला तांबे का अंजनश्लाका के दो टूटे हुए अवशेष भी पाये गए हैं। चूड़ियों के कुछ टुकड़े मिले हैं। ये चूड़ियां या तो सादी है या उन पर हल्की खांचे बनी हुई है। ये ज्यादातर मोटे व मध्यम आकार की हैं और अच्छी तरह से पकाई गई हैं। ये सभी सातवाहन काल की है। कान की बाली के दो नमूने मिले। ये दोनों हाथ से बने हुए हैं, जो बेलनाकार और इनके सिरे चपटे हैं। ये काले और लाल रंग के हैं। एक 69 मिमी व्यास का पहिया सतह से मिला है जो चूना पत्थर से बना है। अत्यधिक पॉलिशदार काले पत्थर का एक टूटा हुआ कान का हार और बलुआ पत्थर पर उकेरे गए एक शंख की आकृति पायी गई है।

ताम्र सिक्के– उत्खनन में 2606 ताम्र सिक्कों से भरा एक मिट्टी का 'मुद्रा संग्रह पात्र' (गुल्लक) मिला है। इन सिक्कों के अग्र भाग पर हाथी व पृष्ठ भाग पर देवी की आकृति अंकित है। ये ताम्र सिक्के छत्तीसगढ़ में पहली से दूसरी शताब्दी ई. के मध्य प्रचलित गज–देवी प्रकार के स्थानीय सिक्के हैं। इनके आकार और वजन अलग–अलग हैं। इस सांस्कृतिक काल में अन्य स्तरों से लगभग 200 ताम्र सिक्के प्राप्त हुए हैं। उल्लेखनीय है कि सिक्कों की बनावट और उन पर अंकित चित्र, चिन्ह अथवा शब्द भी समाज के राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन के विषय में महत्वपूर्ण सूचनाएं देते है। इस प्रकार के सिक्के बिलासपुर के मल्हार से भी मिले हैं। इन सिक्कों के एक तरफ खड़ा हाथी और दूसरी तरफ दो मोर बने हुए हैं। छोटे आकार के सिक्कों पर अन्य प्रतीक भी दिखाई देते हैं। कुछ सिक्कों के अग्रभाग पर खड़े हाथी, तीन मेरु पर्वत एवं पृष्ठ भाग पर हाथियों के चलते, दौड़ते हुए प्रदर्शित किया गया है। कुछ पर देवता की अकृति बनी हाथी के चित्र वाले सिक्कों पर मल्हार अंकित है। स्थानीय राजवंशों के सिक्कों में कई प्रकार की विविधताएं हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि ये सिक्के मघ राजवंश के हैं। प्रायः ये सिक्के वर्गाकार व चौकोर हैं। बताते हैं कि उत्खनन के दौरान स्थानीय ग्रामीण दुर्गाराम धीवर ने किले में स्थित टीले पर एक बर्तन में मिले 52 तांबे के सिक्कों को उत्खनन में लगी टीम को स्वेच्छा से सौपा था। इनमें से 36 सिक्के कुषाण शासक कनिष्क से और 16 सिक्के हुविष्क से संबंधित है। हुविष्क कुषाण वंश का महान प्रतापी शासक था। इनमें से अधिकांश सिक्के घिस चुके हैं, उनपर कोई लेख नहीं है, परंतु कुछ सिक्कों पर शाही चित्र और देवता दिखाई देते हैं। उत्खनन के दौरान सतह से भी कुछ कुषाणकालीन सिक्के मिले। बड़ी संख्या में सिक्कों की खोज से स्पष्ट होता है कि ये सिक्के यहीं ढ़ाले गए थे और दक्षिण कोसल के हिस्सों में भी प्रचलन में थे।

आहत सिक्के– रीवा के उत्खनन में आहत सिक्के (पंच मार्क क्वायन) भी काफी संख्या में मिले हैं जो गोल और चौकोर आकार के हैं। भारत के प्राचीनतम सिक्कों में आहत सिक्कों का महत्वपूर्ण स्थान हैं। ये अनेक विधियों से निर्मित किये जाते थे। धातु को टुकड़ों में विभाजित कर उस पर ठप्पा (पंच) लगाकर या फिर नुकीले औजार से ठोक कर या खोद–खोद कर इन सिक्कों का निर्माण किया जाता था। यही कारण है कि इन्हें 'पंच मार्क सिक्कों के नाम से जाना जाता है। ऐसे सिक्के चांदी और तांबे दोनों के बने होते थे। इनका छठी शताब्दी ई.पू. से लेकर मौर्य और शुंगकाल तक था। माना जाता है कि मौर्य शासकों ने अपने नाम से मुद्रायें जारी नहीं की थी और वे आहत मुद्राओं का ही प्रयोग करते थे। भारत के प्राचीनतम गणराज्यों के सिक्के भी इन्हीं के अनुकरण पर बनाये गए थे, परंतु विभिन्न गणराज्यों के सिक्कों में उनकी तौल, बनावट और चिन्हों का स्पष्ट अंतर था। इसका स्पष्ट कारण था कि छठी शताब्दी ई. पू. में उत्तर भारत में एक नहीं अपितु कम से कम 16 गणराज्य प्रभावी थे। इन राज्यों का शासन गणतांत्रिक था। जन्म से न तो कोई राजा होता था और न ही किसी वंश का शासन पुश्त–दर–पुश्त चलता था। यही कारण है कि इन सिक्कों पर किसी राजा या वंश का नाम उल्लिखित नहीं है। विभिन्न गणराज्यों द्वारा जारी किये गए सिक्के की बनावट, उनपर अंकित चित्र, उनका वजन आदि अलग–अलग है। आगे चलकर इन पर स्थानीय राजाओं के नाम अंकित किये जाने लगे। इन्हें विभिन्न व्यापारिक वर्गों, छोटे शासकों आदि द्वारा तैयार कराया जाता था। परंतु मौर्य काल आते–आते इन सिक्कों का निर्माण संभवतया सरकारी संरक्षण में होने लगा। ये सिक्के रीवा के प्राचीन इतिहास को जानने में प्रमुख साधन हैं। रीवा से चांदी का एक पंच मार्क सिक्का मिला है जो छत्तीसगढ़ में पाये जाने वाले पंच मार्क सिक्कों में सर्वाधिक दुर्लभ है। इन सिक्कों के समस्त चिह्न स्पष्ट रूप से दिखते है। पंचमार्क सिक्कों का माप 19119x एमएम और वजन 44 ग्रेन है। इन सिक्कों में पांच प्रतीक चिह्न अग्रभाग पर हैं। पृष्ठ भाग रिक्त है। अग्रभाग में सूर्योदय का सूर्य, चक्र, वृक्ष, नदी प्रवाह और मध्य भाग पर एक किलेनुमा आकृति बनी हुई है।

स्वर्ण सिक्के– रीवा के उत्खनन में सोने का शरभपुरीया वंश का एक आहत सिक्का (पंचमार्क सिक्का) मिला है। इसे विक्रमादित्य का सिक्का बताया गया है। सिक्के की लंबाई 21 मिलीमीटर और चौड़ाई 0.2 मिलीमीटर है। इस सिक्के पर शरभपुरीय शासक 'श्रीमद् विक्रमादित्य का नाम ब्राह्मी के पेंटिका शीर्ष लिपि में चौकोर अक्षरों में लिखा है। सिक्के के अग्र भाग पर पंख फैलाए हुए गरुड़ की अकृति है, जिसके दोनों ओर शंख और चक्र है। गरुड़ और शंख के मध्य एक छिद्र है। इससे शरभपुरीय राजाओं के वैष्णव स्वरुप का संकेत मिलता है। शरभपुरीय शासक वैष्णव मत के परम अनुयायी थे। उनकी राजमुद्राओं पर गजलक्ष्मी की छवि भी मिलती है। उत्खनन में एक दूसरा सोने का और एक तांबे का सिक्का कलचुरी शासकों का मिला है। सोने का सिक्का रत्नदेव का और तांबे का सिक्का जाजल्लदेव का बताया गया है। सोने और चांदी के सिक्को का मिलना इस क्षेत्र के समृद्ध इतिहास को इंगित करता है। रीवा में मिले पत्थर के मनकों में अगेट, कार्नेलियन, क्रिस्टल, लाल जैस्पर, हरा जैस्पर, कैलसेडोनी, एमेथिस्ट, ओनिक्स आदि से बने मनके पाये गए है जिनमें अगेट की संख्या सबसे अधिक हे। कुछ कार्नेलियन मनकों पर उनकी सुंदरता बढ़ाने के लिए विभिन्न प्रकार के चित्रांकन किये गए है। विशेष रुप से अगेट के साथ बड़ी संख्या में कच्चे पत्थर, पत्थर के मनके, तराशे हुए, बिना रंगे, बिना छिद्र वाले, पॉलिश और बिना पॉलिश किये हुए मनके प्राप्त हुए हैं। इनके निर्माण से संबंधित औजारों के मिलने से पता चलता है कि यह स्थान औद्योगिक गतिविधियों का केन्द्र रहा होगा।

लोहे गलाने का कार्यशाला– रीवा में काफी संख्या में लोहे से बनी सामग्रियां (जिनमें औजार प्रमुख है) मिली है। प्रत्येक खाई से लोहे के छल्ले, कीलें, कड़ाही, छेनी, कूटने के औजार आदि प्राप्त हुए हैं। ये औजार विभिन्न आकारों और डिजाईनों के है। तीर व भाले का अग्र भाग के मिलने से ऐसा प्रतीत होता है कि इनका उपयोग आत्मरक्षार्थ अथवा जंगली पशुओं के शिकार में किया जाता रहा होगा। उत्खनन में लोहे को गलाने और उनसे औजार बनाने की कार्यशाला का मिलना बड़ी उपलब्धि है। यह छत्तीसगढ़ में अब तक अप्राप्त थी। कुछ दुर्लभ प्रकार की हड्डियां भी मिली है जो किसी खास उद्देश्य के लिए

उपयोग की जाती थी। शतरंज के खेल में उपयोग किया जाने वाला हाथी दांत का पासा मिला है। हाथी दांत के विभिन्न आकारों के मनके प्राप्त हुए हैं। हाथी का दांत अर्द्ध–जीवाश्म अवस्था में मिला है। हाथी दांत के मोती बेलनाकार आकार के पाये गए है। इसके अलावा बारहसिंघा का सिंग, जंगली सूअर, चूहा, बैल और अन्य पशुओं की हड्डियां मिली है। पशुओं की हड्डियों से बनी वस्तुओं के अलावा विभिन्न प्रकार के पत्थरों से बनी सामग्रियां मिली है। खिलौने की आकृति के पहिये, अनाज पीसने वाला चक्की, पत्थर से बना मशाला पीसने का सील बट्टा आदि प्राप्त हुए हैं।

रिंग वेल (वलयकूप) – रीवा के उत्खनन में प्राप्त रिंग वेल छत्तीसगढ़ राज्य का प्रथम व अत्यंत महत्वपूर्ण पुरावशेष हे। इसका निर्माण मिट्टी की पकी हुई परतों को एक के उपर एक रखकर गोलाकार आकृति में किया गया है। प्रत्येक कुएं में औसतन 7 से 27 परतें पाई गई हैं। इस गोलाकार कुएं का बाहरी व्यास 70 सेंटीमीटर और लंबाई 120 सेंटमीटर है। कुल 11 छल्ले हैं जिसमें से पहला छल्ला घिस चुका है। प्रत्येक छल्ले की उंचाई 11 सेंटीमीटर है। ऐसा प्रतीत होता है कि इस कुएं का निर्माण पीने का पानी प्राप्त करने के लिए किया गया होगा। माना जाता है कि रिंग वेल का निर्माण नगर विस्तार के साथ लगभग दूसरी सदी ई. पू. से प्रथम सदी के मध्य कराया गया होगा। इस स्थल पर तीन स्तूप, गोलाकार अस्तबल और भंडारण कक्ष, पत्थर से निर्मित तीन अर्धवृत्ताकार हॉल, एक टेराकोटा का गोलाकार कुआं, ईंटों से निर्मित कुआं, अन्न भंडार, मनका कार्यशाला, भट्टे 8 चूल्हे आदि मिले।

रेडियोकार्बन परीक्षण– छत्तीसगढ़ राज्य में पहली बार पुरातत्व में एक समुचित वैज्ञानिक सांस्कृतिक अनुक्रम स्थापित करने तथा पुरा सामग्रियों के काल निर्धारण का कार्य नये सिरे से करने की नितात आवश्यकता महसूस की जाने लगी। इस कठिनाई को दूर करने के लिए उत्खननकर्ताओं द्वारा तीन अलग–अलग स्तरों से चारकोल की सैपलिंग की गई और उसे ए.एम.एस. रेडियोकार्बन– 14 की जटिल वैज्ञानिक परीक्षण के लिए अमेरिका के फ्लोरिडा स्थित विश्व की सबसे अग्रणी और आईएसओ प्रमाणित प्रयोगशाला 'बिटा एनालिटिक्स' भेजा गया। इन तीन सैंपल के मुताबिक – सैंपल 1 की आयु 650–543 ई.पू. आयी है जो बुद्ध के समकालीन महाजन पद काल की है। सैंपल 2 की आयु 806–748 ई.पू. आई है जो बुद्ध के जन्म अर्थात महाजनपदकाल से भी 200 साल पहले की है। इस काल को भारतीय इतिहास में उत्तर वैदिक काल अथवा लौह युग कहा जाता है। सेंपल 3 की आयु 541–392 ई.पू. बताई गई है जो बुद्ध के समकालीन और मौर्यकाल तक जाता है।

प्रयोगशाला से प्राप्त परिणामों ने निचली परतों, अवशेषों के काल निर्धारण में असाधारण रुप से सहायता की है। प्रयोगशाला द्वारा प्रदान की गई एएमएस कार्बन–14 के आधार पर छह विभिन्न सांस्कृतिक चरणों को प्रस्तावित किया गया है। जिनका काल क्रम क्रमशः– उत्तर ताम्रपाषाण काल– लगभग 1100 ई.प.–800 ई.पू., लौह युग (एनबीपीडब्ल्यू से पूर्व)– लगभग 800 ई.पू.–550 ई.पू., एनबीपीडब्ल्यू संस्कृति– लगभग 550 ई.पू.–200 ई. पू. सातवाहन– कुषाण–मघ काल– लगभग 200 ई.पू–300 ई. गुप्त काल लगभग 300 ई. – 550 ई. तथा पोस्ट गुप्ता जमाव– लगभग 550– ई.– 1000 ई. निर्धारित किया गया है। रेडियोकार्बन परीक्षण से रीवा उत्खनन के काल निर्धारण की गुत्थी सुलझ गई है और हम सप्रमाण कह सकते हैं कि छत्तीसगढ में उत्तरवैदिक काल में ऋषि अगस्त्य द्वारा आर्य सभ्यता के प्रसार की जानकारी सही है और यहां परवर्ती ताम्रपाषाण काल के बाद लौहकाल की संस्कृति आबाद हुई। इस प्रकार रीवा का सांस्कृतिक अनुक्रम उत्तर वैदिक से महाजनपद युग तक के संक्रमण को निरूपित करता है। यह मध्य भारत के लौह युगीन सांस्कृतिक परिदृष्य में रीवा की महत्ता को प्रमाणित करता है। विशेषज्ञों के मुताबिक इससे जो कालक्रम (क्रोनोलॉजी) तैयार होगी उसका लाभ भविष्य में होने वाले उत्खननों में भी मिलेगा। रीवा उत्खनन से न केवल आंचलिक इतिहास के समृद्ध होने की बल्कि देश के इतिहास में समुचित स्थान प्राप्त होने की संभावना बलवति हो गई है। रीवा के उत्खनन में पुरातत्वविद् पद्मश्री डॉ. अरुण कुमार शर्मा, डॉ. पी. सी. पारख, डॉ. वृषोत्तम साहू, डॉ. राजीव जे. मिंज आदि की भूमिका उल्लेखनीय रही है।

पुरातत्व निदेशालय, अभिलेखागार निदेशालय रायपुर के निदेशक डॉ. पी. सी. पारख बताते है कि छत्तीसगढ़ के किसी भी पुरातात्विक स्थल की तुलना में सर्वाधिक संख्या में विभिन्न कालखंडों के सिक्कों प्राप्त होने से रीवा की महत्ता राष्ट्रीय स्तर पर बढ़ गई है। पुरातात्विक सामग्रीयां व कलाकृतियां इसके शहरी स्वरुप और समृद्ध औद्योगिक गतिविधियों का पर्याप्त प्रमाण प्रदान करती है। उन्होंने बताया कि मुद्राशास्त्रीय निष्कषों से पता चलता है कि यह एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र के रूप में था, जो संभवतया उत्तर, पूर्व, पश्चिम और दक्षिण के समकालीन शहरी केंद्रों से जुड़ा था। एएमएस कार्बन–14 के आधार पर अनुसंधान जारी है, जिनसे भारत की अनेकों विस्मृत उन्नत व विकसित विरासतों को उजागर करने में महत्वपूर्ण सहायता मिलेगी। रीवा को पर्यटन स्थल के रुप में विकसित करने के लिए कई योजनायें बनाई जा रही है। जिससे पर्यटन और रोजगार को बढ़ावा मिलेगा। इस क्रम में बंधवा तालाब के समीप प्राचीन 'चंडी मंदिर के जिणोंद्धार का कार्य प्रगति पर है। प्राचीन बंधवा तालाब के सौंदर्यीकरण की भी योजना है। ■

अकेला
प्रकाशन
सत्यमेव जयते
ISBN
भारत सरकार द्वारा पंजीकृत एवं आई.एस.बी.एन.
(ISBN) नंबर के साथ गुणवत्तापूर्ण पुस्तकें प्रकाशित करने हेतु प्रतिबद्ध।
यदि आप तय सीमा अवधि के अन्दर उच्च स्तर की पुस्तकें उचित दर पर प्रकाशित कराना चाहते हैं तो हमसे शीघ्र सम्पर्क कर सकते हैं।
Contact: & : 9934659107, 9931974290
: akelaprakashan@gmail.com
Sharma House, Vivek Vinar colony, Sant Kabir Road, Banuchhapar, Bettiah (West champaran) Bihar - 845438

चम्पारण के वीर सपूत पण्डित ध्रुवनारायण मणि त्रिपाठी

विजय कान्त त्रिपाठी
वेस्ट गोपालपुर, वार्ड न॰–33, मोतिहारी।

पावन नारायणी–तट की ऊर्जस्वित भूमि पर स्थित नगदाहां ग्राम निवासी ज्ञान – वैराग्य युक्त सनातन संस्कृति सम्पन्न मणि त्रिपाठी कुल के शिखर पुरुष पं० राम चन्द्र मणि त्रिपाठी के तृतीय पुत्र रत्न के स्वनामधन्य पं० ध्रुवनारायण मणि त्रिपाठी का आविर्भाव 1 नवंबर सन् 1904 को हुआ। होनहार बिरवान के होत चिकने पात वाली सम्भावना इनमें बाल्यावस्था से ही परिलक्षित होने लगी। सद्शिक्षा प्राप्ति की प्रबल ललक महापुरुषों की बाल्यावस्था की पहचान होती है, बालक ध्रुवनारायण में उक्त कथन शत–प्रतिशत प्रतिष्ठित था। गाँव की प्राथमिक पाठशाला में प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करते हुए, बेहतर शिक्षा प्राप्ति की प्रबल इच्छा इनमें बनी रही। प्राथमिक शिक्षा पूरी कर मध्यविद्यालय की उन्नत शिक्षा प्राप्ति हेतु वे चुपचाप घर छोड़कर निकल पड़े। बड़ी कठिनाई से वे मोतिहारी जिला स्कूल में पढ़ाई कर रहे अपने अग्रज सहदेव मणि त्रिपाठी के पास पहुँचे और अन्ततः उन्होंने अपनी मध्यविद्यालयीय शिक्षा के०क्यू० एकेडमी, जो अब गोपाल साह उच्च विद्यालय के नाम से जाना जाता है से पूर्ण किए। फिर सन् 1923 ई० में बिहार विद्यापीठ पटना से प्रवेशिका परीक्षा पास कर, इसी वर्ष वे काशी विद्यापीठ वाराणसी में प्रविष्ट हुए। भगवान विश्वनाथजी की पावन नगरी काशी युगों–युगों से सनातन शिक्षा और संस्कार की ऊर्जस्वित भूमि रही है। सन् 1923 से 1927 तक विद्यापीठ का विद्यार्थी रह इन्होंने शास्त्री की योग्यता पूर्ण की। काशी विद्यापीठ में अध्ययन के क्रम में इन्होंने शास्त्री की योग्यता पूर्ण की। काशी विद्यापीठ में अध्यापन के दौरान इन्होंने वहाँ के उद्भट विद्वान आचार्यों– श्री नरेन्द्रदेव, आचार्य चिन्तामणि, श्री सम्पूर्णानन्द आचार्य श्रीप्रकाश जैसे महानतम विभूतियों से ज्ञानार्जन प्राप्त किया। अपने गुरुओं की योग्यता, आचार–विचार युक्त सद्वाणी सदुपदेश का इनपर बड़ा प्रभावशाली असर हुआ। इन्हीं दिनों काशी वास के अध्ययन क्रम में इन्हें भारतीय आजादी हेतु सतत प्रयत्नशील भारत माता के वीर पुत्रों– श्री लाल बहादुर शास्त्री, श्री कमलापति त्रिपाठी, श्री जनार्दन पति त्रिपाठी, श्री गोपाल झा, श्री सुमंगल मित्र, श्रीमन्मथ गुप्त सरीखे अनेक स्वातन्त्र्य योद्धाओं के इन्हें दर्शन हुए, जिनसे ये बहुत प्रभावित हुए। उक्त राष्ट्र भक्तों की राष्ट्र भक्ति सम्पन्न आचार–विचार और अपने विद्वान गुरुओं के शिक्षा का सहसंस्कार से ओत–प्रोत वे सन् 1927 में गाँव आए। काशी–अध्ययन के दौरान ही इनका विवाह सरिसवा बाज़ार के निकट स्थित बनकट ग्रामवासी पं० पीताम्बर पाण्डेयी जी की सुपुत्री सुश्री रामसंवरी जी के साथ सम्पन्न हो चुका था। स्वतंत्रता संग्राम सत्याग्रही जीवन : जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं। वह हृदय नहीं है, पत्थर है, जिसमें

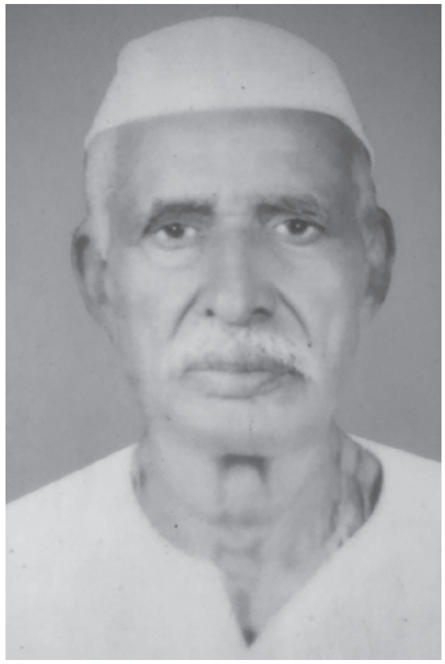

स्वदेश का प्यार नहीं। काशी में अध्ययन काल के चार वर्षों में शिक्षार्थी नवयुवक ध्रुवनारायण के अमल मन पर संस्कृत के आचार्यों की संस्कृति निष्ठ शिक्षा और महान राष्ट्रभक्तों की देश प्रेम निष्ठा का गहरा प्रभाव पड़ा। संस्कृत विषय में शास्त्री की परीक्षा उत्तीर्ण होने के बाद वे अपने गाँव आ गए, पर पल–पल भारत माता के पैरों में पड़ी गुलामी की बेड़ियों की झनकार सुनाई पड़ने लगी। भारत माता की पुकार और आजादी के दीवानों की ललकार से उन्मद हो नवयुवक ध्रुवनारायण सन् 1929 के प्रारंभ में ही भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े। महात्मा गांधी के नेतृत्व में पूरे भारत में देश की आजादी के लिए कई तरह के कार्यक्रम चल रहे थे, जिनमें खादी उत्पादन भी था एवं उसके उपयोग के लाभ से ग्रामीणों को परिचित कराना भी एक था। इन्हें यह योजना अपने मनोनुकूल लगी। देव कृपा से उसी समय इन्हें फुलवरिया निवासी पं० लक्ष्मीनारायण झा से भेंट हुई; इन्होंने उनसे योजना की चर्चा की, योजना को सुनकर झा जी को प्रसन्नता हुई। पं० झा ने इन्हें फुलवरिया ग्राम में रहकर ही खादी वस्त्रोत्पादन के साथ कांग्रेस द्वारा संचालित अन्य कार्यक्रमों का संचालन का आग्रह किया। पं० ध्रुवनारायण को प्रसन्नता मिली।जनवरी 1930 ई० से पं० ध्रुवनारायण त्रिपाठी फुलवरिया ग्राम में रहकर खादी वस्त्रों का उत्पादन एवं आजादी के लिए लोगों में जागृत करने के कार्यक्रम में संलग्न हो गए। उन्हीं दिनों कांग्रेस अधिवेशन में पूर्ण स्वराज की घोषणा हुई। इस घोषणा से पं० ध्रुवनारायण जी का उत्साह बढ़ा। अब वे गाँव–गाँव घूमकर स्वतंत्रता का अलख जगाने लगे। 26 जनवरी 1930 को सम्पूर्ण देश में 'सत्याग्रह दिवस' मनाया गया। इसी दिन उन्होंने भी अपने सहयोगियों श्री सुखम मिश्र, श्री सुधास्त मिश्रा, श्री बद्रीनारायण झा, श्री द्वारिका ठाकुर आदि सहयोगियों की सहायता से सुगौली में भी 'सत्याग्रह दिवस' का सफल आयोजन सम्पन्न कराया। इसी वर्ष 12 मार्च 1930 को अपने 72 सहयोगियों के साथ नमक–अवज्ञा आंदोलन हेतु महात्मा गांधी ने 'दांडी' की यात्रा प्रारम्भ की। यह काफिला 200 मील की दूरी तय कर 05 अप्रैल 1930 को सागर तट स्थित 'दांडी' पहुँचा और 06 अप्रैल 1930 को गांधी जी ने नमक–कानून तोड़ने एवं सभी को नमक बनाने की काँग्रेस सम्मत आज्ञा की घोषणा कर दी। कांग्रेस के इस आह्वान पर देश भर में लोग टोली बनाकर अपने–अपने नायकों के साथ नमक बनाने चल पड़े। इसी बीच बिहार दौरे के क्रम में पं० जवाहर लाल नेहरू मोतिहारी आए। मोतिहारी में आयोजित विशाल जनसभा में यह नियत हुआ कि पूर्ण स्वराज्य हेतु तन–मन–धन से समर्पित क्षेत्रवार जत्थेदार नियुक्त किए जाएं और इसी क्रम में ध्रुवनारायण मणि त्रिपाठी को सुगौली क्षेत्र का जत्थे दार बनाया गया।जेल यात्राएं– सुगौली के जत्थेदार ध्रुवनारायण मणि त्रिपाठी जी ने अपने क्षेत्रीय स्वयंसेवकों की एक विशाल रैली बनाई। सभी स्वयंसेवकों ने विदेशी वस्त्रों और मादक द्रव्यों की बिक्री पर रोक लगाने के लिए विविध प्रदर्शन किए। इसी क्रम में विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार हेतु ईसवी 1930 को जब वे अपने सहयोगियों के साथ सुगौली स्थित एक कपड़े की दुकान पर प्रदर्शन कर रहे थे, तभी सुगौली के थानेदार बिन्दा प्रसाद ने उन्हें धारा 117 के तहत गिरफ्तार कर लिया। उस समय इनकी उम्र 25 वर्ष छह माह की थी। 1930 को मजिस्ट्रेट विन्ध्येश्वरी मिश्र ने सुगौली थाने में ही सुनवाई की। इन्होंने अपना सत्याग्रही जुर्म स्वीकार कर लिया। फिर मई 1930 को इन्हें मोतिहारी जेल भेज दिया गया। फिर इन्हें एक वर्ष का कठिन जीवन व्यतीत करना पड़ा। 1931 में जारी कागज़ जेल भेज दिया गया। एक वर्ष की कैदी जीवन व्यतीत कर सन 1931 में इनकी पहली जेल–यात्रा संपन्न हुई।भारत माता का यह सपूत जिसका तन–मन–धन–सर्वस्व भारतीय आजादी हेतु समर्पित था, जिसकी आंखों में प्रतिपल गुलाम

भारतीयों की दुर्दशा का दृश्य बैठा हो, जिसके कान में हरदम भारत माता की विवशता जन्य वाणी सुनाई पड़ रही हो, आज वैसा देशभक्त अपने पैतृक आवास की सुखद छाया में कबतक ठहर पाएगा? पंडित ध्रुवनारायण मणि त्रिपाठी पुनः गिरफ्तार कर लिए गए। 29 जून 1931 को उन्हें पटना कैंप जेल भेज दिया गया, जहां वार्ड न० 45 में उन्हें दो महीने चौदह दिन की जेल–यातना झेलनी पड़ी। यह इनकी दूसरी जेल यात्रा थी।पटना जेल कैंप से बाहर आकर वे पुनः अपने संघर्ष पथ पर चल पड़े। खाने–पीने, रहने–सोने का कोई निश्चित ठिकाना नहीं। देश–सेवा के अदम्य उत्साह को देख कांग्रेस की उच्च समिति ने उन्हें सन् 1935 ई० में अब ग्रामीण विकास इन्स्पेक्टर पद प्रदान किया। हरसिद्धि के पास रंजीता में इनका कार्यालय स्थापित हुआ। कुछ दिन बाद सन् 1942 ई० में 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' आंदोलन की शुरुआत हुई। वे पुनः आंदोलन का नेतृत्व करने लगे। इस आंदोलन में दिल्ली में प्रदर्शन करना चाहते थे। आंदोलनकारियों के लिए दिल्ली–प्रवेश वर्जित था। फिर योगी जीवन व्यतीत करने वाले अपने पिताजी पं० राममणि त्रिपाठी के शिष्य बनकर योगी वेश धारण कर वे अग्रज मित्रों पं० विभूति मिश्र और पं० शिवधारी पाण्डेय के साथ दिल्ली आए। दिल्ली पहुँच चाँदनी चौक पर अंग्रेज़ सरकार के विरुद्ध आरोप पत्र पढ़ते हुए पं० ध्रुवनारायण मणि त्रिपाठी की गिरफ्तारी हो गई। इन्हें बन्दी बनाकर दिल्ली कैंप जेल में भेज दिया गया। यह इनकी तीसरी गिरफ्तारी थी।

स्वाधीनता संग्राम के इस दौर में दिल्ली कैंप जेल से मुक्त हो वे एक पल भी चैन से नहीं रहे, बल्कि अब जेल इनके लिए भगवान श्रीकृष्ण का जन्म–धाम बन गया था। इस विभूति को अब जेल जाने में भय नहीं था। पुनः इसी आंदोलन का नेतृत्व कर रहे पं० ध्रुवनारायण मणि त्रिपाठी जी को गिरफ्तार कर सरकार भागलपुर सेंट्रल जेल भेज दी। यहाँ लगभग छह महीने जेल में रहकर सन 1943 ई० के अंत में वे बाहर आए। यह इनकी चौथी और अंतिम जेल यात्रा थी। आजाद देश में राजनीतिक सफर– राजनीतिक सफर और स्वतंत्रता : 15 अगस्त 1947 ई० को देश आजाद हो गया। सम्पूर्ण देश में प्रसन्नता छा गई। केंद्र एवं राज्यों में अंतरिम सरकारें गठित हुई। पं० जवाहर लाल नेहरू देश के प्रधान मंत्री और डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ने राष्ट्रपति के रूप में अपने दायित्व संभाला। अब स्वतंत्रता सेनानियों की जवाबदेही बढ़ गयी। जो अबतक अंग्रेज़ सरकार के विरोध में संघर्ष कर रहे थे, अब देश की खुशहाली का चिंतन करने लगे। पं० ध्रुवनारायण मणि त्रिपाठी भी सन् 1947 के अक्टूबर महीने से ही चम्पारण में सामाजिक गतिविधियों से पूर्णरूप से संलग्न हो गये। सन् 1952 में सम्पूर्ण देश में प्रथम आम चुनाव सम्पन्न हुआ। पं० ध्रुव नारायण मणि त्रिपाठी घोड़ा सहन विधानसभा क्षेत्र से काँग्रेस प्रत्याशी बने। क्षेत्र की आधिकाधिक जनता इनसे अपरिचित थी, फलतः ये चुनाव हार गए। लेकिन बिहार कांग्रेस का उच्च नेतृत्व इनके व्यक्तित्व से परिचित था। पं० प्रजापति मिश्र बिहार प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष थे। पं० ध्रुवनारायण मणि त्रिपाठी बहुमत के साथ चम्पारण जिला कांग्रेस के अध्यक्ष चयनित हुए। इस पद पर वे लगातार नौ वर्षों तक आसीन रहे। सन् 1953 में इन्हें पंचायती राज समिति का सलाहकार बनाया गया। सन् 1957 के दूसरे विधानसभा चुनाव में ये गोविन्द गंज विधान सभा से कांग्रेस प्रत्याशी के रूप में विजयी हो कर क्षेत्र के सर्वांगीण विकास में संलग्न हो गए। परिणाम स्वरूप सन 1962 के तीसरे विधान सभा चुनाव में पुनः ये गोविन्दगंज विधान सभाक्षेत्र से चयनित हुए। इस बीच कई बोर्डों के पदेन सदस्य एवं बिहार प्रदेश कांग्रेस कमिटी के महामंत्री भी रहे। जनहित में चल रहे इनके विविध कार्य से गोविन्दगंज की जनता अतिशय प्रसन्न थी। परिणाम यह हुआ कि सन् 1967 के विधानसभा चुनाव में पुनः गोविन्दगंज विधान सभा क्षेत्र से कांग्रेस प्रत्याशी के रूप में विजयी हुए लेकिन यह सरकार अपनी पूरी अवधी पूर्ण नहीं कर पायी। सन् 1969 में विधान सभा भंग हो गयी। इसी वर्ष बिहार में मध्यावधि चुनाव सम्पन्न हुआ। मात्र 66 मतों से ध्रुवनारायण मणि त्रिपाठी जी मध्यावधि चुनाव हार गए।

सक्रिय राजनीति से संन्यास लेकर गाँव में रहकर कृषि कार्यों की देख–रेख के साथ भगवद्भक्ति एवं पढ़ने–लिखने में लिप्त हो अपनों के मध्य गाँव में रहते हुए 30 मार्च 1986 अपने शरीर को त्याग कर आपने मोक्ष की यात्रा प्रारम्भ कर दी। ■

ट्रंप के अड़ियल रवैये के कारण पूरी दुनिया में ऊर्जा संकट का दौर

डॉ० शैलेश शुक्ला
वरीय लेखक, पत्रकार, साहित्यकार (लखनऊ)
(गृह मंत्रालय भारत सरकार द्वारा 'राजभाषा गौरव सम्मान' से सम्मानित)

वर्तमान समय को आने वाले वर्षों में शायद उस दिन के रूप में याद की जाएगी, जब दुनिया ने एक बार फिर महसूस किया कि कुछ शक्तिशाली देशों के राजनीतिक अहंकार और युद्धप्रिय नीतियाँ पूरी मानवता को संकट में धकेल सकती हैं। पश्चिम एशिया की धरती पर भड़कती आग अब केवल मिसाइलों, बमों और सैनिकों तक सीमित नहीं रही है, बल्कि उसने पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था, ऊर्जा व्यवस्था और आम आदमी की रसोई तक को प्रभावित करना शुरू कर दिया है। ईरान, अमेरिका और इजराइल के बीच बढ़ते तनाव ने वैश्विक ऊर्जा बाजार को हिला दिया है। तेल और गैस की कीमतों में भारी उछाल ने पूरी दुनिया में भय, अस्थिरता और आर्थिक संकट का वातावरण बना दिया है। इस पूरे संकट के केंद्र में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का अड़ियल और टकरावपूर्ण रवैया सबसे अधिक चर्चा का विषय बना हुआ है।

पिछले कुछ महीनों से पश्चिम एशिया में लगातार सैन्य गतिविधियाँ बढ़ती जा रही थीं। ईरान और इजराइल के बीच छद्म युद्ध पहले से ही जारी था, लेकिन जब अमेरिका खुलकर इस संघर्ष में उतर आया, तब हालात बेहद गंभीर हो गए। अमेरिका द्वारा ईरान पर लगाए गए नए आर्थिक प्रतिबंधों, समुद्री निगरानी और सैन्य दबाव ने पूरे क्षेत्र को युद्ध की दहलीज पर ला खड़ा किया। डोनाल्ड ट्रंप लगातार कठोर बयान देते रहे। उन्होंने कई बार सार्वजनिक मंचों से ईरान को "पूर्ण समर्पण" करने की चेतावनी दी। उनका यह रवैया केवल राजनीतिक बयानबाजी तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उसने वैश्विक बाजारों में घबराहट पैदा कर दी।

ऊर्जा विशेषज्ञों का मानना है कि आज दुनिया जिस ऊर्जा संकट की ओर बढ़ रही है, उसके पीछे सबसे बड़ा कारण तेल आपूर्ति मार्गों पर मंडराता युद्ध का खतरा है। फारस की खाड़ी और होरमुज जलडमरूमध्य दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण समुद्री मार्गों में गिने जाते हैं। दुनिया के कुल तेल व्यापार का बड़ा हिस्सा इसी रास्ते से गुजरता है। यदि यह मार्ग बाधित होता है, तो पूरी दुनिया में तेल की आपूर्ति प्रभावित होना तय है। यही कारण है कि जैसे–जैसे युद्ध की आशंका बढ़ी, वैसे–वैसे अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतें भी तेजी से बढ़ने लगीं।

आज स्थिति यह है कि दुनिया के कई देशों में पेट्रोल और डीजल की कीमतें लगातार बढ़ रही हैं। परिवहन महंगा हो रहा है। विमान सेवाओं की लागत बढ़ रही है। बिजली उत्पादन पर दबाव बढ़ रहा है। उद्योगों की

उत्पादन लागत बढ़ने लगी है। इसका सीधा असर आम नागरिकों की जेब पर पड़ रहा है। जो संकट अभी ऊर्जा क्षेत्र तक सीमित दिखाई दे रहा है, वह आने वाले समय में खाद्य संकट और महंगाई की सुनामी का रूप ले सकता है।

भारत जैसे विकासशील देशों के लिए यह संकट विशेष रूप से चिंताजनक है। भारत अपनी ऊर्जा जरूरतों का बड़ा हिस्सा विदेशों से आयात करता है। यदि तेल की कीमतें लगातार बढ़ती रहीं, तो देश में पेट्रोल, डीजल, रसोई गैस और दैनिक उपयोग की वस्तुएँ महंगी हो जाएँगी। परिवहन खर्च बढ़ने से फल, सब्जियाँ, अनाज और अन्य आवश्यक वस्तुओं के दाम भी बढ़ सकते हैं। इससे आम मध्यम वर्ग और गरीब परिवारों की आर्थिक स्थिति पर भारी असर पड़ेगा।

विशेषज्ञों का कहना है कि दुनिया एक बार फिर उन्नीस सौ तिहत्तर जैसे वैश्विक तेल संकट की ओर बढ़ सकती है। उस समय भी पश्चिम एशिया में तनाव के कारण तेल की कीमतों में भारी उछाल आया था और पूरी दुनिया आर्थिक मंदी की चपेट में आ गई थी। आज हालात उससे भी अधिक खतरनाक दिखाई दे रहे हैं, क्योंकि अब दुनिया की अर्थव्यवस्था पहले से कहीं अधिक ऊर्जा पर निर्भर हो चुकी है।

युद्ध के कारण समुद्री व्यापार पर भी गंभीर असर पड़ रहा है। तेल ले जाने वाले जहाजों की सुरक्षा लागत बढ़ गई है। बीमा कंपनियाँ भारी प्रीमियम वसूल रही हैं। कई जहाज कंपनियाँ युद्ध क्षेत्र से गुजरने में डर महसूस कर रही हैं। यदि यह स्थिति लंबे समय तक बनी रही, तो अंतरराष्ट्रीय व्यापार बुरी तरह प्रभावित हो सकता है। इसका असर केवल तेल तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि इलेक्ट्रॉनिक सामान, खाद्यान्न, दवाइयों और रोजमर्रा की वस्तुओं की आपूर्ति भी प्रभावित हो सकती है।

ट्रंप प्रशासन की सबसे अधिक आलोचना इस बात को लेकर हो रही है कि उसने कूटनीतिक समाधान की बजाय सैन्य दबाव की नीति अपनाई। कई अंतरराष्ट्रीय विश्लेषकों का मानना है कि यदि अमेरिका ने शुरुआत से ही बातचीत और मध्यस्थता का रास्ता अपनाया होता, तो हालात इतने खराब नहीं होते। लेकिन ट्रंप का राजनीतिक स्वभाव हमेशा से आक्रामक रहा है। वे स्वयं को एक कठोर और निर्णायक नेता के रूप में प्रस्तुत करना चाहते हैं। यही कारण है कि उन्होंने लगातार ऐसे बयान दिए, जिनसे तनाव कम होने की बजाय और अधिक बढ़ता गया।

विश्व राजनीति के जानकारों का कहना है कि ट्रंप की नीतियाँ केवल ईरान तक सीमित नहीं हैं। वे वैश्विक राजनीति में अमेरिकी प्रभुत्व को किसी भी कीमत पर बनाए रखना चाहते हैं। यही कारण है कि वे आर्थिक प्रतिबंधों, सैन्य दबाव और कठोर विदेश नीति को अपनी सबसे बड़ी ताकत मानते हैं। लेकिन समस्या यह है कि इस रणनीति का सबसे बड़ा नुकसान आम जनता को उठाना पड़ता है।

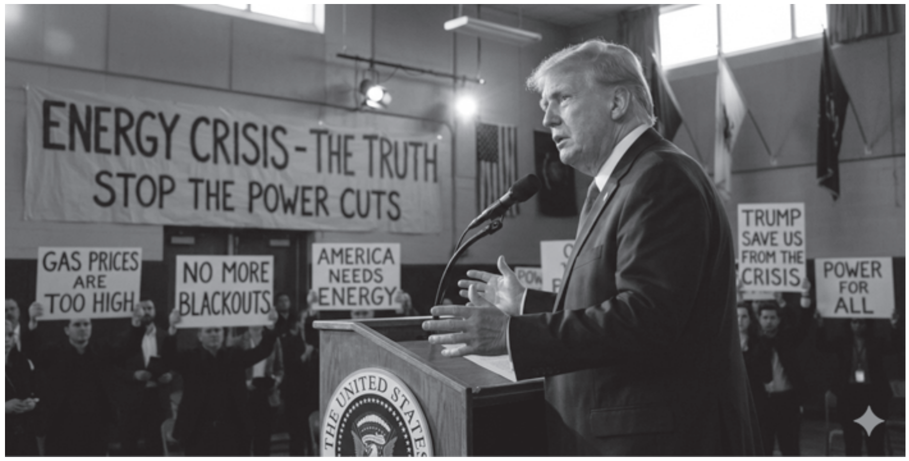

यूरोप इस संकट से बेहद परेशान दिखाई दे रहा है। रूस और यूक्रेन युद्ध के बाद यूरोप पहले ही ऊर्जा संकट से जूझ रहा था। अब पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव ने उसकी चिंताएँ और बढ़ा दी हैं। कई यूरोपीय देशों में गैस और बिजली की कीमतें पहले से ही ऊँचे स्तर पर हैं। उद्योगों की लागत बढ़ रही है। कई कारखाने उत्पादन घटाने पर मजबूर हो रहे हैं। यदि यह संकट लंबा खिंचता है, तो यूरोप में बेरोजगारी और आर्थिक मंदी का खतरा और बढ़ सकता है।

चीन, भारत, जापान और दक्षिण कोरिया जैसे एशियाई देशों की स्थिति भी आसान नहीं है। ये देश ऊर्जा आयात पर अत्यधिक निर्भर हैं। यदि पश्चिम एशिया में युद्ध और बढ़ता है, तो एशिया की आर्थिक वृद्धि प्रभावित हो सकती है। दुनिया की बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में अस्थिरता बढ़ सकती है। शेयर बाजारों में गिरावट आ सकती है। निवेशकों का विश्वास कमजोर पड़ सकता है।

इस पूरे संकट का एक और बड़ा पहलू यह है कि अब युद्ध केवल बंदूकों और मिसाइलों से नहीं लड़े जाते। आज ऊर्जा स्वयं एक हथियार बन चुकी है। तेल और गैस की आपूर्ति रोककर पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था को झकझोरा जा सकता है। यही कारण है कि ऊर्जा मार्गों पर नियंत्रण को लेकर इतनी तीखी प्रतिस्पर्धा दिखाई दे रही है।

विश्लेषकों का मानना है कि यदि होरमुज जलडमरूमध्य पूरी तरह बंद हो गया, तो दुनिया में तेल की कीमतें ऐतिहासिक स्तर पर पहुँच सकती हैं। इससे वैश्विक महंगाई बेकाबू हो सकती है। गरीब और विकासशील देशों की अर्थव्यवस्था चरमरा सकती है। कई देशों में राजनीतिक अस्थिरता और सामाजिक अशांति बढ़ सकती है।

दुनिया के कई बुद्धिजीवी और शांति समर्थक संगठन लगातार यह कह रहे हैं कि युद्ध किसी समस्या का समाधान नहीं है। यदि अमेरिका और ईरान के बीच तनाव कम नहीं हुआ, तो इसका नुकसान केवल दोनों देशों तक सीमित नहीं रहेगा। पूरी दुनिया इसकी कीमत चुकाएगी। आज भी दुनिया कोरोना महामारी और विभिन्न युद्धों के आर्थिक प्रभावों से पूरी तरह उबर नहीं पाई है। ऐसे समय में नया ऊर्जा संकट वैश्विक अर्थव्यवस्था को गहरे अंधकार में धकेल सकता है।

इस संकट का सबसे दुखद पहलू यह है कि दुनिया की राजनीति में मानवीय संवेदनाएँ लगातार कमजोर होती दिखाई दे रही हैं। आम नागरिक महंगाई, बेरोजगारी और आर्थिक संकट से जूझ रहा है, लेकिन शक्तिशाली देशों के नेता शक्ति प्रदर्शन और राजनीतिक प्रभुत्व की लड़ाई में व्यस्त हैं। युद्ध से सबसे अधिक लाभ हथियार उद्योगों और बड़ी ऊर्जा कंपनियों को होता है, जबकि आम जनता केवल पीड़ा, महंगाई और असुरक्षा झेलती है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि संयुक्त राष्ट्र और विश्व समुदाय सक्रिय भूमिका निभाएँ। भारत, चीन, यूरोपीय संघ और अन्य प्रमुख देशों को मिलकर मध्यस्थता करनी चाहिए। यदि समय रहते शांति स्थापित नहीं हुई, तो आने वाले महीनों में दुनिया एक ऐसे आर्थिक तूफान का सामना कर सकती है, जिसकी मार दशकों तक महसूस की जाएगी।

डोनाल्ड ट्रंप का अड़ियल रवैया आज पूरी दुनिया के लिए चिंता का विषय बन चुका है। उनकी आक्रामक विदेश नीति ने पश्चिम एशिया को बारूद के ढेर पर ला खड़ा किया है। यदि यह आग और भड़की, तो केवल एक क्षेत्र नहीं, बल्कि पूरी मानवता इसकी चपेट में आ जाएगी। आज दुनिया को युद्ध नहीं, बल्कि समझदारी, संवाद और शांति की आवश्यकता है। क्योंकि जब ऊर्जा संकट पैदा होता है, तब उसका असर केवल तेल के दामों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह हर घर की रसोई, हर परिवार की आर्थिक स्थिति और हर देश की स्थिरता को प्रभावित करता है।

इतिहास गवाह है कि युद्ध कभी स्थायी समाधान नहीं देते। वे केवल विनाश, महंगाई और अस्थिरता छोड़ जाते हैं। आज पूरी दुनिया उसी मोड़ पर खड़ी है, जहाँ एक गलत निर्णय मानवता को भारी संकट में धकेल सकता है। अब यह विश्व नेतृत्व पर निर्भर करता है कि वह अहंकार और शक्ति प्रदर्शन का रास्ता चुनता है या फिर शांति और सहयोग का।■

सरहद पार जनविद्रोह, भारत के लिए खतरे की घंटी

अजय कुमार चौधरी
विशेष संवाददाता 'लोकचिन्तन' दिल्ली

भारत के अगल–बगल के तीनों पड़ोसी देशों में जेन जी आन्दोलन और नागरिक विद्रोह, इतना भयावह हो गया था कि संसद भवन, उच्चतम न्यायालय, मंत्रियों के आवास, सार्वजनिक भवनों के साथ अनेक निजी होटल आग के हवाले कर दिए गए। तीनों ही पड़ोसी देश छोटे–छोटे देश हैं, किन्तु हमारे देश के लिए अहम है। हम सबों का आपसी संबंध हमेशा मधुर रहा है। हम सदैव एक दूसरों के पूरक रहे हैं। भ्रष्टाचार जब शिष्टाचार का रूप ले लेता है, उत्पीड़न जब लोगों के लिए

असहनीय हो जाता है, तभी जनता विद्रोह करती है। सर्वप्रथम श्रीलंका में जनविद्रोह– सर्वप्रथम श्रीलंका में जन विद्रोह हुआ (जिसे अर्गल्या या संघर्ष कहा जाता है)। मुख्यरूप से 2022 में हुए जनविद्रोह विशाल जन– प्रदर्शनों को संदर्भित करता है, जिन्होंने देश के शक्तिशाली राजपक्षे शासन को सत्ता से बाहर कर दिया था। विद्रोह का मुख्य कारण श्रीलंका अपनी स्वतंत्रता के बाद सबसे भीषण आर्थिक संकट से जूझ रहा था। विदेशी मुद्रा की कमी के कारण देश में ईंधन, रसोई गैस, दवाओं और आवश्यक खाद्य पदार्थों की भारी किल्लत हो गई थी। घंटों बिजली की कटौती हो रही थी। जनता ने इसके लिए राष्ट्रपति गोटा वाया राजपक्षे के आर्थिक कुप्रबंधन और भ्रष्टाचार को जिम्मेदार ठहराया। श्रीलंका का जन–विद्रोह इस कदर भड़का कि प्रदर्शनकारियों का मुख्य नारा ष्लवजं ळव भ्वउमष (गोटा घर जाओ)। मार्च 2022 में छोटे स्तर पर विरोध प्रदर्शन शुरू हुए तो जल्द ही पूरे देश में फैल गए। 9 मई 2022 राजपक्षे समर्थकों द्वारा प्रदर्शनकारियों पर हमले के बाद देशव्यापी हिंसा भड़क उठी, जिसके कारण तत्कालीन प्रधानमंत्री महिन्द्रा राजपक्षे को इस्तीफा देना पड़ा। 9 जुलाई 2022 को लाखों की संख्या में प्रदर्शनकारी कोलंबो पहुँचे और राष्ट्रपति भवन, राष्ट्रपति सचिवालय और प्रधानमंत्री के निजी आवास में कब्जा कर लिया। भारी दबाव के बीच राष्ट्रपति गोटवाया राजपक्षे देश छोड़कर भाग गए और सिंगापुर से अपना इस्तीफा भेज दिया। यह आन्दोलन काफी हद तक स्वतः स्फूर्त और नेतृत्व विहिन था, जिसमें छात्र, आई०टी० पेशेवर, ट्रेड यूनियन के लोग और आम नागरिक शामिल थे। इसे श्रीलंका के इतिहास में एकता का एक दुर्लभ उदाहरण माना गया, जहाँ विभिन्न धर्मों और जातियों के लोग एक साथ आए, एक मंच पर आए।बांग्लादेश में जन विद्रोह– भारत के पड़ोसी देश बंगला देश में जन विद्रोह इस कदर बढ़ा कि 15 साल से अधिक समय से सत्ता में रही प्रधानमंत्री शेख हसीना को पद छोड़ने और देश छोड़ने पर मजबूर कर दिया। जन विद्रोह की शुरूआत जुलाई 2024 में छात्रों द्वारा सरकारी नौकरियों में कोटा प्रणाली के विरोध से शुरू हुई थी। छात्रों की मांग थी कि 1971 के मुक्ति संग्राम के स्वतंत्रता सेनानियों के वंशजों के लिए आरक्षित 30 प्रतिशत कोटे को समाप्त किया जाय। विद्रोह के भड़कने के बाद 5 अगस्त 2024 को लाखों प्रदर्शनकारियों ने ढाका की ओर लौंग मार्च निकाला। स्थिति को बेकाबू होते देख शेख हसीना ने प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया और सेना की मदद से भारत आ गईं। इसके तुरन्त बाद प्रदर्शनकारी प्रधानमंत्री आवास में घुस गए। विद्रोह के बाद नौबेल पुरस्कार विजेता मोहम्मद युनुस के नेतृत्व में एक अंतरिम सरकार का गठन किया गया। बंगला देश में कानून व्यवस्था बहाल करने की गंभीर चुनौती है। बंगला देश के इतिहास में सबसे पहले 1990 में भी एक बड़ा जन विद्रोह हुआ था, जिस आन्दोलन ने सैन्य तानाशाह हुसैन मोहम्मद इरशाद के शासन का अंत किया था और देश में लोकतंत्र की स्थापना हुई थी। 2024 के इस विद्रोह को अक्सर दूसरा

मुक्ति संग्राम भी कहा जाता है। कहीं न कहीं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विदेशी ताकतों द्वारों भारत को अस्थिर करने के लिए पड़ोसी देशों में इस तरह के आन्दोलन प्रायोजित ढंग से करवाए जा रहे हैं ताकि भारत अस्थिरता की स्थिति में रहे। भारत समृद्ध एवं शक्तिशाली देश नहीं बने। नेपाल का जनविद्रोह– सत्ता पर काबिज लोग सत्ता की ताकत मिलते ही ताकत देने वालों के साथ ही नाइंसाफी करना प्रारंभ कर देते हैं। पड़ोसी देश नेपाल का जैन जी आन्दोलन एवं जनविद्रोह इसका ताजा उदाहरण है जहाँ भ्रष्टाचार एवं सरकारी स्तर पर मनमानी की शिकायतें बढ़ती जा रही थी। सरकार जनभावना को समझने में असफल रही। नेपाल का जैन जी एवं जनविद्रोह मुख्य रूप से सितम्बर 2025 की उन घटनाओं से जुड़ा है जिसने देश की राजनीति को पूरी दूरी तरह से बदल दिया। इसका तत्कालिक कारण 26 सोशल मीडिया प्लेटफार्म जैसे फेसबुक, यू–ट्यूब, इंस्टाग्राम और व्हाट्सअप पर लगाया गया प्रतिबंध था। युवाओं ने इसे अपनी अभिव्यक्ति की आजादी पर हमला और सरकार के भ्रष्टाचार को छिपाने की कोशिश माना। नेपाल की राजधानी काठमांडू के मोतीघर मंडल में हजारों युवा इकट्ठा हुए। जब पुलिस ने प्रदर्शनकारियों पर बल प्रयोग किया और कई लोगों की मौत हुई तो यह विरोध पूरे देश में फैल गया। 9 सितम्बर 2025 को स्थिति इतनी बिगड़ गई कि प्रदर्शनकारियों ने संसद भवन में आग लगा दी। बढ़ते दबाव के कारण तात्कालीन प्रधान मंत्री के० पी० शर्मा ओली को इस्तीफा देना पड़ा। खास बात यह रही कि सरकार द्वारा इंटरनेट पर पाबंदी के बावजूद युवाओं ने भी० पी० एन० और डिस्कोर्ड जैसे प्लेटफार्म का इस्तेमाल किया जो विद्रोह और आजादी के संकेत थे। नेपाल भी हमारा अभिन्न पड़ोसी देश है जो सामरिक दृष्टि से भारत के लिए अति महत्वपूर्ण है।■

लोकतंत्र में छोटी क्षेत्रीय आवाज़ों की सिकुड़ती वाणी

सिद्धार्थ मोहन कवि

भारतीय लोकतंत्र की सबसे बड़ी शक्ति उसकी विविधता है। यह विविधता केवल भाषाओं, संस्कृतियों और समुदायों तक सीमित नहीं, बल्कि राजनीतिक प्रतिनिधित्व में भी दिखाई देती है। क्षेत्रीय दल इस विविधता के वाहक रहे हैं। बिहार जैसे राज्य में, जहाँ सामाजिक न्याय, जातीय समीकरण और स्थानीय मुद्दे राजनीति के केंद्र में रहे हैं, वहाँ छोटे क्षेत्रीय दलों ने लोकतांत्रिक विमर्श को समृद्ध किया है। किंतु आज उनके सामने अस्तित्व का संकट खड़ा होता दिख रहा है।

पिछले एक दशक में भाजपा के संगठनात्मक विस्तार और संसाधन–संपन्न चुनावी मशीनरी ने राजनीतिक प्रतिस्पर्धा की प्रकृति बदल दी है। यह परिवर्तन लोकतांत्रिक प्रक्रिया का हिस्सा माना जा सकता है, लेकिन इसके कुछ दुष्प्रभाव भी सामने आए हैं, जिनका असर सबसे अधिक छोटे क्षेत्रीय दलों पर पड़ा है।

सबसे बड़ी चुनौती राजनीति की बढ़ती लागत है। डिजिटल प्रचार, सोशल मीडिया अभियान, पेशेवर चुनाव प्रबंधन और बड़े जनसंपर्क कार्यक्रम चुनावी सफलता के महत्वपूर्ण साधन बन चुके हैं। ऐसे माहौल में सीमित संसाधनों वाले दलों के लिए प्रतिस्पर्धा करना कठिन हो गया है। परिणामस्वरूप लोकतंत्र में विचारों की बजाय संसाधनों की शक्ति अधिक प्रभावी होती दिखाई देती है। 2020 के बिहार विधानसभा चुनाव में VIP, HAM और AIMIM जैसे छोटे दलों का संयुक्त वोट शेयर 4 प्रतिशत से भी कम था, लेकिन उन्होंने 13 सीटें जीतकर सत्ता समीकरणों को प्रभावित किया। यह दर्शाता है कि बिहार में छोटे क्षेत्रीय दल केवल चुनावी भागीदार नहीं, बल्कि गठबंधन राजनीति के निर्णायक स्तंभ हैं। इसके बावजूद बढ़ती चुनावी लागत, संसाधनों की असमानता और राष्ट्रीय दलों के बढ़ते प्रभुत्व ने उनके स्वतंत्र राजनीतिक विस्तार की संभावनाओं को सीमित कर दिया है।

दूसरी बड़ी चुनौती दलबदल और 'हॉर्स ट्रेडिंग' की संस्कृति है। विभिन्न राज्यों में निर्वाचित प्रतिनिधियों के दल बदलने और सरकारों के गठन–पतन में उनकी भूमिका ने लोकतांत्रिक नैतिकता पर प्रश्न खड़े किए हैं। बिहार भी इससे अछूता नहीं रहा। गठबंधनों के बार–बार बदलते समीकरणों ने मतदाताओं के सामने यह प्रश्न रखा है कि जनादेश की वास्तविक भावना क्या रह गयी है? आलोचकों का मानना है कि राष्ट्रीय स्तर पर अधिक शक्तिशाली दलों को ऐसी परिस्थितियों से अपेक्षाकृत अधिक लाभ मिलता है।

बिहार लंबे समय से गठबंधन राजनीति की प्रयोगशाला रहा है। लेकिन जब कोई राष्ट्रीय दल संसाधनों, मीडिया उपस्थिति और संगठनात्मक क्षमता में अपने सहयोगियों से कहीं अधिक मजबूत हो जाता है, तो गठबंधन में समानता का सिद्धांत कमजोर पड़ने लगता है। छोटे दलों को अपनी स्वतंत्र पहचान खोने का भय सताने लगता है।

मीडिया और जनमत निर्माण की लड़ाई ने भी इस असंतुलन को बढ़ाया है। राष्ट्रीय दलों के पास अपनी बात व्यापक स्तर पर पहुँचाने के अधिक साधन हैं, जबकि छोटे दलों की आवाज अक्सर सीमित दायरे में सिमट जाती है। परिणामस्वरूप बिहार के स्थानीय मुद्दे जैसे पलायन, रोजगार, शिक्षा और कृषि संकट, राष्ट्रीय विमर्श के शोर में दब जाते हैं।

भारतीय संघवाद की मजबूती क्षेत्रीय दलों की सक्रिय उपस्थिति पर भी निर्भर करती है। यदि राजनीतिक परिदृश्य कुछ बड़े दलों तक सीमित हो जाए, तो लोकतांत्रिक बहुलता और राज्यों की विशिष्ट आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व कमजोर पड़ सकता है। इसलिए लोकतंत्र की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि छोटी राजनीतिक आवाजों को भी उतनी ही गंभीरता से सुना जाए जितनी बड़ी राजनीतिक शक्तियों को। ■

बारहवीं कक्षा के बाद कैरियर विकल्प: आधुनिक विकल्पों की खोज

डॉ० विजय गर्ग
प्राचार्य (सेवानिवृत) मलोट, पंजाब।

वर्षों तक, स्कूल के बाद विकल्प सीमित माने जाते थे। इंजीनियरिंग, चिकित्सा, सीए, कानून और सरकारी परीक्षाएँ बातचीत पर हावी हो गए, और अधिकांश छात्रों से इन परिचित रास्तों में से चयन करने की उम्मीद थी। कई मामलों में, निर्णय व्यक्तिगत हितों या शक्तियों की तुलना में सामाजिक अपेक्षाओं से अधिक प्रभावित होते थे।

हालाँकि, यह दृष्टिकोण धीरे–धीरे बदल रहा है। उच्च शिक्षा और नए उद्योगों के विस्तार के साथ, आज छात्र अब कुछ पारंपरिक करियर तक सीमित नहीं हैं। नए युग के पाठ्यक्रम, कौशल–आधारित कार्यक्रम और अंत:विषय डिग्रियों ने विभिन्न क्षेत्रों में कई रास्ते खोल दिए हैं।

साथ ही, सूचना तक पहुंच में भी सुधार हुआ है। छात्र अब उभरते क्षेत्रों, वैश्विक कैरियर प्रवृत्तियों और वैकल्पिक शिक्षा मॉडलों के बारे में अधिक जागरूक हैं। इससे कैरियर योजना अधिक लचीली हो गई है, लेकिन साथ ही अधिक जटिल भी बन गई है, क्योंकि विकल्पों की संख्या में काफी वृद्धि हुई है।

कक्षा 12 के परिणाम आने के बाद, यह सिर्फ ठहराव का दौर नहीं है। यह एक ऐसा चरण है जिसमें छात्रों को अपनी रुचियों का मूल्यांकन करना चाहिए, उपलब्ध विकल्पों को समझना चाहिए और अपने भविष्य के बारे में सूचित निर्णय लेना चाहिए।

डिजाइन एवं रचनात्मक करियर

डिजाइन एक संरचित और पेशेवर कैरियर पथ के रूप में उभरा है। छात्र फैशन डिजाइन, उत्पाद डिजाइन, एनीमेशन, गेम डिजाइन और यूआई/यूएक्स डिजाइन जैसे क्षेत्रों में बीडीई (बचलर ऑफ डिजाइन), बीएफटेक या विशेष डिप्लोमा प्राप्त कर सकते हैं। शीर्ष संस्थानों में प्रवेश आमतौर पर NID DAT, NIFT प्रवेश परीक्षा और UCEED जैसी प्रवेश परीक्षाओं के माध्यम से होता है।

भारत में, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ डिजाइन और नेशनल इंस्टीचुएट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी जैसे संस्थान सबसे अधिक मान्यता प्राप्त हैं। एमआईटी इंस्टीट्यूट ऑफ डिजाइन और श्रीस्थ मणिपाल इंस्टीट्यूत जैसे निजी संस्थान भी इसी प्रकार के कार्यक्रम प्रदान करते हैं।

छात्रों के पास ब्रिटेन, अमेरिका और इटली जैसे देशों में विदेशों में अध्ययन करने के लिए भी मजबूत विकल्प हैं, जहां पार्सन्स, सेंट्रल सेंट मार्टिंस और पॉलिटेक्निको डी मिलानो जैसे डिजाइन स्कूल प्रसिद्ध हैं।

कैरियर के अवसरों में डिजाइन स्टूडियो, तकनीकी कंपनियां, विज्ञापन एजेंसियां और स्टार्टअप शामिल हैं। भारत में शुरुआती स्तर के लोगों की वेतन दर लगभग 3.6 लाख रुपये प्रति वर्ष से शुरू हो सकती है। लेकिन अनुभवी डिजाइनर, विशेष रूप से यूआई/यूएक्स एवं उत्पाद डिजाइन क्षेत्र में काम करने वाले, अंतरराष्ट्रीय अवसरों सहित काफी अधिक कमाई कर सकते हैं।

व्यावहारिक विज्ञान

मानसिक स्वास्थ्य के बारे में बढ़ती जागरूकता के कारण मनोविज्ञान और व्यवहार विज्ञान महत्वपूर्ण होते जा रहे हैं। छात्र मनोविज्ञान में बीए या बीएससी की डिग्री से शुरुआत कर सकते हैं, उसके बाद नैदानिक मनोविज्ञान, परामर्श या संगठनात्मक व्यवहार में विशेषज्ञता के लिए मास्टर डिग्री प्राप्त कर सकते हैं।

भारत में प्रवेश मुख्य रूप से ब्न्ज्ञ या विश्वविद्यालय–स्तरीय प्रवेश परीक्षाओं के माध्यम से होता है। दिल्ली विश्वविद्यालय, क्राइस्ट यूनिवर्सिटी एवं टीआईएसएस जैसे विश्वविद्यालय मान्यता प्राप्त कार्यक्रम प्रदान करते हैं। लाइसेंस प्राप्त मनोवैज्ञानिक के रूप में अभ्यास करने की इच्छा रखने वालों के लिए एमफिल या व्यावसायिक प्रमाणन जैसे उच्चतर अध्ययन आवश्यक हैं।

विदेश में अध्ययन करने के विकल्प भी मजबूत हैं, विशेष रूप से कनाडा, ऑस्ट्रेलिया और ब्रिटेन जैसे देशों में, जहां शोध अनुभव के साथ मनोविज्ञान की डिग्री व्यापक रूप से दी जाती है।

कैरियर विकल्पों में परामर्श, चिकित्सा, मानव संसाधन भूमिकाएं, अनुसंधान और शिक्षण शामिल हैं। शुरुआती वेतन 3 लाख से

लेकर 50 लाख रुपये प्रति वर्ष तक हो सकता है, लेकिन विशेषज्ञता और अनुभव के साथ, आय में काफी वृद्धि हो सकती है, विशेष रूप से निजी प्रैक्टिस या कॉर्पोरेट भूमिकाओं में।

खेल और फिटनेस

खेल में करियर अब केवल एथलीट बनने तक ही सीमित नहीं है। छात्र खेल विज्ञान में बीएससी, शारीरिक शिक्षा में स्नातक (बीपीईडी) या खेल प्रबंधन, फिजियोथेरेपी और फिटनेस प्रशिक्षण जैसे पाठ्यक्रम प्राप्त कर सकते हैं। प्रवेश की प्रक्रिया अलग–अलग होती है, कुछ संस्थान प्रवेश परीक्षा या परीक्षण आयोजित करते हैं।

नेताजी सुभाष राष्ट्रीय खेल संस्थान और लक्ष्मीबाई राष्ट्रीय शारीरिक शिक्षा संस्थान जैसे संस्थान संरचित पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं। निजी विश्वविद्यालय भी खेल प्रबंधन कार्यक्रम प्रदान करते हैं।

छात्र ऑस्ट्रेलिया, ब्रिटेन और अमेरिका जैसे देशों में विदेश में अध्ययन के विकल्पों का भी पता लगा सकते हैं, जहां खेल विज्ञान और फिजियोथेरेपी कार्यक्रम उन्नत हैं।

कैरियर की भूमिकाओं में कोच, फिटनेस ट्रेनर, खेल विश्लेषक, फिजियोथेरेपिस्ट और खेल प्रबंधक शामिल हैं। विशेषज्ञता के आधार पर आय में काफी भिन्नता होती हैय लेकिन अनुभवी पेशेवर, विशेष रूप से उच्च स्तरीय खेलों या अंतरराष्ट्रीय भूमिकाओं में काम करने वाले लोग, अच्छी कमाई कर सकते हैं।

कला प्रदर्शन

फिल्म निर्माण, अभिनय, संगीत उत्पादन और ध्वनि इंजीनियरिंग जैसे क्षेत्र अब औपचारिक शिक्षा द्वारा समर्थित हैं। छात्र फिल्म अध्ययन, प्रदर्शन कला या ध्वनि इंजीनियरिंग में डिग्री या डिप्लोमा प्राप्त कर सकते हैं, तथा संस्थान–स्तरीय परीक्षणों या ऑडिशन के माध्यम से प्रवेश ले सकते हैं।

फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया एवं सत्यजीत रे फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट्स जैसे संस्थान शीर्ष सरकारी संस्थानों में से हैं। निजी फिल्म स्कूल और मीडिया अकादमी भी विशेष पाठ्यक्रम प्रदान करती हैं।

विदेश में अध्ययन इस क्षेत्र में एक प्रमुख विकल्प है, जिसमें अमेरिका और ब्रिटेन जैसे देश शामिल नहीं हैं

इस क्षेत्र में विदेश में अध्ययन करना एक प्रमुख विकल्प है, क्योंकि अमेरिका और ब्रिटेन जैसे देश फिल्म निर्माण और संगीत उत्पादन में उन्नत प्रशिक्षण प्रदान करते हैं।

करियर अक्सर परियोजना–आधारित होते हैं, जिनमें फिल्मों, ओटीटी प्लेटफॉर्म, विज्ञापन और मीडिया प्रोडक्शन में भूमिकाएं शामिल होती हैं। शुरुआत में आय अप्रत्याशित हो सकती है, लेकिन कुशल पेशेवर समय के साथ काफी कमाई कर सकते हैं।

व्यावसायिक एवं कौशल–आधारित पाठ्यक्रम

व्यावसायिक शिक्षा व्यावहारिक कौशल और कम अवधि के प्रशिक्षण पर केंद्रित है। छात्र डिजिटल मार्केटिंग, ग्राफिक डिजाइन, फोटोग्राफी, पाक कला और सामग्री निर्माण में प्रमाण पत्र या डिप्लोमा प्राप्त कर सकते हैं। ये पाठ्यक्रम अक्सर निजी संस्थानों या ऑनलाइन प्लेटफॉर्म द्वारा सीधे प्रवेश के साथ प्रदान किए जाते हैं।

आतिथ्य संस्थान और पाककला स्कूल भी उन छात्रों के लिए डिप्लोमा और डिग्री कार्यक्रम प्रदान करते हैं जो शेफ बनने या खाद्य उद्योग में काम करने में रुचि रखते हैं।

विदेश में अध्ययन के लिए आतिथ्य और पाक कला के विकल्प उपलब्ध हैं, विशेष रूप से स्विट्जरलैंड, फ्रांस और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों में।

ये करियर कार्यबल में शीघ्र प्रवेश की अनुमति देते हैं। आय कौशल और अनुभव पर बहुत अधिक निर्भर करती है। उदाहरण के लिए, शेफ, फोटोग्राफर और डिजिटल विपणक फ्रीलांसिंग, उद्यमिता या अंतर्राष्ट्रीय अवसरों के माध्यम से अपनी आय बढ़ा सकते हैं।

सामाजिक क्षेत्र और विकास अध्ययन

सामाजिक प्रभाव में रुचि रखने वाले छात्र सामाजिक कार्य स्नातक (बीएसडब्ल्यू) जैसी डिग्री प्राप्त कर सकते हैं, या विकास अध्ययन और सार्वजनिक नीति से संबंधित कार्यक्रमों का अनुसरण कर सकते हैं। प्रवेश ब्न्ज या संस्थान–स्तरीय प्रक्रियाओं के माध्यम से होता है।

टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज और दिल्ली यूनिवर्सिटी जैसे संस्थान मान्यता प्राप्त कार्यक्रम प्रदान करते हैं। विदेश में अध्ययन के विकल्प भी उपलब्ध हैं, विशेष रूप से विकास अध्ययन और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में।

कैरियर विकल्पों में गैर सरकारी संगठनों, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों, अनुसंधान संस्थानों और नीतिगत थिंक टैंकों के साथ काम करना शामिल है। सामाजिक क्षेत्र में वेतन कॉर्पोरेट पदों की तुलना में कम हो सकता है, लेकिन अनुभव के साथ बढ़ता जाता है, विशेष रूप से अंतर्राष्ट्रीय संगठनों में।

विकल्पों की एक विस्तृत श्रृंखला उपलब्ध होने के कारण, कक्षा 12 के बाद निर्णय रुचि, क्षमता और दीर्घकालिक लक्ष्यों के संयोजन पर आधारित होना चाहिए। छात्रों को चुनाव करने से पहले पाठ्यक्रम की संरचना, लागत, प्रवेश परीक्षाएं और कैरियर के अवसर जैसे कारकों पर भी विचार करना चाहिए।

कैरियर के रुझान में बदलाव से पता चलता है कि सफलता अब कुछ पारंपरिक व्यवसायों तक सीमित नहीं रही। जैसे–जैसे उद्योग विकसित होते हैं, नई भूमिकाएं उभरती रहती हैं, जो छात्रों को सार्थक और टिकाऊ करियर बनाने के लिए कई रास्ते प्रदान करती हैं। ■

कविता

रिक्शा खाली है

प्रो॰ डॉ॰ सुरेन्द्र प्रसाद 'केसरी'
(पूर्व प्राचार्य, एम.जे.के. कॉलेज, बेतिया)
सहायक सम्पादक 'लोकचिन्तन'।

अबे !
रिक्शा खाली है ?
मालिक !
सूरज ढल गया
और,
पेट खाली है
फिर –
साला ! तड़ाक !! चटाक !!!
धम्म !
दोनों काले हाथ
गालों के बजाय
यंत्रवत्,
हैन्डल की काली मूठों पर
चले गये,
और
कोटर–सी धंसी
मटमैली आँखों से
सुफेद पानी,
काले पहियों के साथ
धीरे से लुढ़क गया।
अब –
रिक्शा खाली है।

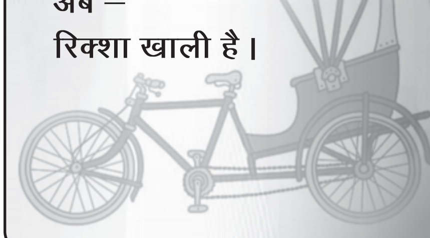

भविष्य पर 'लीक' का साया

कोटा में छात्रों का सैलाब और राहुल गांधी की एंट्री

देवेंद्र गौतम
राजनीतिक समीक्षक, स्तंभकार एवं वरिष्ठ पत्रकार।

परीक्षाओं में पेपर लीक पहले यदा–कदा होता था अब यह बार–बार घटित होने वाली परिघटना बन चुकी है। यह एक संगठित रूप ले चुका है। लेकिन इसबार नीट परीक्षा में पेपर लीक का मामला विकराल रूप धारण करता जा रहा है। 21 जून को आंदोलन के दबाव में पुनर्परीक्षा कराई तो गई लेकिन उसमें भी अनियमितताओं की पराकाष्ठा नजर आई। ऐसा प्रतीत होने लगा कि मौजूदा शासन तंत्र की मंशा शिक्षा व्यवस्था को पटरी से बाहर रखने और युवा वर्ग को नियोजन से वंचित रखने की है। लेकिन इस बार भुक्तभोगी जेन जी पीढ़ी है जो अपने अधिकारों की लड़ाई लड़ना जानती है। उसे राहुल गांधी जैसे तेज–तर्रार नेता का साथ मिला है और लड़ाई निर्णायक दिशा की ओर बढ़ गई है। एक नए छात्र आंदोलन का बिगुल बजने लगा है। इसकी शुरूआत देश के कोचिंग हब कोटा से हुई।

17 जून को नीट परीक्षा में पेपर लीक मुद्दे पर कोटा में जेन जी की गैर राजनीतिक महारैली हुई। जिसमें राहुल गांधी का संबोधन ऐतिहासिक रहा। उन्होंने शिक्षा और परीक्षा की व्यवस्था की पूरी पोल खोलकर रख दी। भाजपा ने इस महारैली को नौटंकी करार दिया। रैली को विफल करने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा दी। सुरक्षा व्यवस्था के नाम पर रेलों और बसों पर कड़ी निगरानी लगा दी। भाजपा की कोशिश थी कि राहुल गांधी कोटा पहुंच ही नहीं सकें। तयशुदा कार्यक्रम के मुताबिक उन्हें रेल से आना था लेकिन राहुल गांधी भाजपा की नस–नस से वाकिफ हैं।

इसलिए उन्होंने अंतिम समय में यात्रा के कार्यक्रम में बदलाव किया और रेल की जगह चार्टर्ड प्लेन से कोटा पहुंच गए। राहुल गांधी ने आने से पहले देशभर के छात्रों को इसमें शामिल होने का आह्वान करते हुए ट्वीट किया था कि जब सरकार सुनने को तैयार नहीं होती तो आवाज ऊंची करनी पड़ती है। कोटा में युवाओं के भविष्य की लड़ाई शुरू होगी जो देशभर में फैलेगी और वे छात्रों की इस लड़ाई में हर कदम पर साथ हैं। इस ट्वीट के बाद भाजपा ने रैली को विफल करने की पूरी तैयारी की थी। हालांकि उसके मंसूबे सफल नहीं हुए। रैली में भारी संख्या में युवाओं ने हुंकार भरी। यह पहला मौका नहीं है। जनांदोलनों के प्रति भाजपा का शुरू से ही यह रवैया रहा है। दोषियों को बचाने में भी उसकी तत्परता अद्भुत रही है।

भारत में प्रतियोगी परीक्षाओं का माहौल हमेशा से तनावपूर्ण रहा है, लेकिन हाल के वर्षों में पेपर लीक की घटनाएं इस समस्या को चरम पर ले गई हैं। नीट–यूजी जैसी परीक्षाओं में बार–बार हुई अनियमितताओं ने लाखों छात्रों, खासकर जेन जी को निराश किया है। इसीलिए कोटा में छात्रों की गूंज' नामक महारैली आयोजित की, जिसमें राहुल गांधी ने इन मुद्दों को केंद्र में रखकर जेन जी से सीधा संवाद किया।

इसबार के पेपर लीक से व्यवस्था की विश्वसनीयता पर उठे सवालों ने पूरे देश को हिलाकर रख दिया है। आरोप है कि पेपर लीक, ग्रेस मार्किंग, अनियमितताएं और रद्द परीक्षाओं की घटनाएं आम हो गई हैं। इससे छात्रों के सपने टूट रहे हैं, परिवारों पर आर्थिक बोझ बढ़ रहा है और मानसिक स्वास्थ्य बिगड़ रहा है। कोटा में कोचिंग छात्रों के आत्महत्या के मामले पहले से चर्चित हैं, और पेपर लीक ने इसे और बदतर बना दिया। राहुल गांधी ने रैली में कहा कि शिक्षा प्रणाली अब सलेक्शन की जगह रिजेक्शन पर आधारित हो गई है। भारतीय परिवार प्रतिवर्ष पांच प्रमुख प्रतियोगी परीक्षाओं पर करीब 3.5 लाख करोड़ रुपये खर्च करते हैं। यह केंद्र सरकार के शिक्षा बजट से तीन गुना ज्यादा है। यह व्यवस्था को व्यवस्था की जगह एक्सटॉर्शन मशीन बना देती है।

इसबार के छात्र आंदोलम में मुख्य रूप से पेपर लीक पर सख्त कार्रवाई, परीक्षा व्यवस्था में सुधार, शिक्षा मंत्री के इस्तीफे, सस्ती, निष्पक्ष और तनावमुक्त शिक्षा व रोजगार के अवसर बढ़ाने की मांग की गई है।

छात्रों की रैली कोचिंग हब कोटा के दशहरा मैदान में हुई, जहां भारी भीड़ उमड़ी। इसमें छात्र–छात्राओं, अभिभावकों और जेन जी की भीड़ उमड़ी। कांग्रेस ने इसे छात्रों के मुद्दों पर संवाद बताया। राहुल ने नीट. जेइई यूपीएससी आदि के प्रतिभागियों के अलावा एक आत्महत्या प्रभावित परिवार को मंच पर बुलाया।

कोटा रैली में राहुल गांधी ने उन्हें जेन जी कामरेड्स कहकर संबोधित किया और कहा कि युवाओं का भविष्य सुरक्षित करना सरकार की जिम्मेदारी है, लेकिन मोदी सरकार में जिम्मेदारी और ईमानदारी की कमी है।

रैली के वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुए, जहां जेन जी राहुल के साथ सेल्फी लेते और नारे लगाते दिखे। कांग्रेस इसे 'शिक्षा क्रांति' का पहला कदम बता रही है। कोटा महारैली के साथ जेन जी के मुद्दे महंगी कोचिंग, पेपर लीक, बेरोजगारी, मानसिक स्वास्थ्य आदि अब मुख्यधारा की राजनीति में आ गए हैं।

राहुल गांधी ने कोटा रैली को छात्रों की गूंज अभियान की शुरुआत बताया। उन्होंने कहा–शिक्षा विशेषाधिकार नहीं, अधिकार होना चाहिए। परीक्षाएं लॉटरी नहीं होनी चाहिए। पेपर लीक, देरी और टूटे सपनों को रोका जाए।

दरअसल पेपर लीक सिर्फ एक लक्षण है। इसकी गहराई में निजीकरण, सीमित सीटें, महंगी कोचिंग, परीक्षा तनाव और रोजगार की कमी मुख्य समस्याएं हैं। कोटा रैली में जेन जी की भागीदारी से राजनीति में नयी ऊर्जा अवश्य दिखी, लेकिन असली बदलाव तब आएगा जब नीतिगत सुधार होंगे, डिजिटल पारदर्शिता होगी। अधिक सीटें होंगी। मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता दी जाएगी और शिक्षा सस्ती होगी। ■

पंडित उगम पाण्डेय महाविद्यालय

मोतिहारी-845401

(बी.आर. अम्बेदकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर की स्थायी सम्बद्ध इकाई)

दूरभाष : 222339, मो० 9431639440

प्रो० प्रेम चन्द्र पाण्डेय
प्राचार्य

महाविद्यालय की मुख्य विशेषताएँ

1. कला, विज्ञान एवं वाणिज्य के सभी विषयों के साथ समाजशास्त्र, गृहविज्ञान, भूगोल, संगीत, प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति एवं भोजपुरी में भी प्रतिष्ठा स्तर तक अध्ययन की सुविधा।
2. सभी शैक्षणिक सुविधाओं एवं संसाधनों से लैश महाविद्यालय।
3. सरकारी अनुदान मिलने वाले बिहार के महाविद्यालयों में अग्रणी।
4. सुयोग्य प्राचार्य के नेतृत्व में विद्वान शिक्षकों एवं अनुशसित शिक्षकेत्तर कर्मचारियों की टीम।
5. नैक मूल्यांकन में ग्रेड प्राप्त महाविद्यालय।
6. विश्वविद्यालय से एन.एस.एस. एवं कैरियर काउंसिलिंग की मान्यता।
7. नियमित वर्ग संचालन।
8. समृद्ध प्रयोगशाला एवं पुस्तकालय की सुविधा।
9. सी.सी.टी.वी. कैमरे से लैश महाविद्यालय।

किशोर पाण्डेय
सचिव

COLLEGE CODE:- 35098 Mob. No.:- 9431427786

HARUN MEMORIAL INTER COLLEGE

Sansaraiya Nautan, (West Champaran) Bihar

Run and Govern by Md. Haroon Khan Educational Trust

Affiliated to B.S.E.B, Patna

आप सभी को
स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक
शुभकामनाएं
और बधाई !

रूहूल अमीन
सचिव

यह पावन पर्व हमारे देश के वीर सपूतों के त्याग, तपस्या और बलिदान की याद दिलाता है।
आइये इस गौरवशाली अवसर पर हम सब मिलकर एक समृद्ध, सशक्त और शिक्षित समाज के निर्माण का संकल्प लें।

संस्कृति फाउंडेशन

(शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला विकास, परिवार कल्याण और ग्रामीण उत्थान के लिए सक्रिय गैर सरकारी संगठन)

समस्त देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस 2026
की हार्दिक शुभकामनाएं!

निधि राय (ट्रस्टी)
(संपर्क- 9973149111)

दीपेन्द्र विक्रम शाह
(फाउंडर)

संस्कृति फाउंडेशन, मेन रोड, नारायणपुर, वार्ड नं.- 7, रामनगर, पश्चिम चम्पारण (बिहार) - 845106

राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर निबंधित

लोकचिन्तन

मासिक पत्रिका

के 17वें स्थापना दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं !:

दुर्गा कन्स्ट्रक्सन

बैठनिया (मझौलिया) प० चम्पारण।

बलिराम पाण्डेय
मैनेजिंग पार्टनर

पाराडाइज़ इंग्लिश स्कूल

इन्दिरा चौक, बेतिया। मो॰ : 9931974290

शमीम अहमद
निदेशक

समस्त देशवासियों को
स्वतंत्रता दिवस 2026
की हार्दिक शुभकामनाएं!

शहजहाँ शमीम
प्रधानाचार्य

With Best Compliments From :

HARINAGAR SUGAR MILLS LTD.

HARINAGAR (WEST CHAMPARAN) PIN-845103 (BIHAR)

MANUFACTURER OF

White Crystal Sugar, Rectified Spirit, Ethanol
and Producer of Jaivik Shakti, Bio-Compost (for Soil Application)

Off. Sugar Mills Phone: 06256-224223, 224285, 224692
Fax: 06256-224215 E-mail: hnsml@sancharnet.injhasmi@sify.com

नव वर्ष एवं गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं!

Regd No. DGET-6/4/54/2013-TC

Skill India
कौशल भारत - कुशल भारत

बेतिया प्रा. I.T.I

NCVT (भारत सरकार के द्वारा मान्यता प्राप्त)

मैट्रिक/इंटर पास छात्र-छात्राओं के लिए I.T.I. कोर्स कर नौकरी प्राप्त करने का सुनहरा अवसर

नामांकन प्रारंभ है

सुरक्षित भविष्य! सुनिश्चित रोजगार!

पूर्वी करगहिया, हवाई अड्डा के नजदीक, बेतिया (प॰ चम्पारण) 845438
8969352401, 8969352201 bettiahiti@gmail.com

बच्चा HOSPITAL

कलीमा बच्चा अस्पताल

डा॰ इम्तेयाज अहमद

एम.बी.बी.एस., एम.डी.(शिशु रोग) राँची

शिशु रोग विशेषज्ञ

भुतपूर्व :-
सीनीयर रेजीडेन्ट सेन्ट स्टीफन हॉस्पीटल, नई दिल्ली
सीनीयर रेजीडेन्ट ई.एस.आई. हॉस्पीटल, नई दिल्ली
असीसटेंट प्रोफेसर नेशनल मेडिकल कॉलेज, बीरगंज
विशेषज्ञ: शिशु गहन चिकित्सा इकाई (NICU) एच.एम.जी. रीयाद

छावनी, लौरिया रोड, बेतिया (पश्चिम चम्पारण)

जयप्रकाश विश्वविद्यालय
द्वारा सुदृढ़ तरीके से संचालित
व्यावसायिक कोर्स
राजेन्द्र कॉलेज में
बीसीए, बीबीए, बैचलर ऑफ मास कम्युनिकेशन
तथा बायोटेक्नोलॉजी की पढ़ाई की व्यवस्था
माननीय कुलपति
प्रो. परमेन्द्र कुमार वाजपेई
वोकेशनल डायरेक्टर
प्रो. अजीत तिवारी
प्राचार्य
प्रो. संजय कुमार
हमारे प्रमुख व्यावसायिक पाठ्यक्रम
BCA
बैचलर ऑफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन
BBA
बैचलर ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन
BACHELOR OF MASS COMMUNICATION
BIOTECHNOLOGY
अनुभवी एवं योग्य शिक्षकों द्वारा शिक्षण
आधुनिक लैब एवं संसाधन
व्यावहारिक प्रशिक्षण
रोजगारोन्मुखी शिक्षा
उज्ज्वल भविष्य की ओर
हमारे साथ कदम बढ़ाएं
राजेन्द्र कॉलेज, छपरा
ज्ञान
कौशल
रोजगार
सफलता
राजेन्द्र कॉलेज, छपरा (बिहार)
06152-232370, 06152-232431

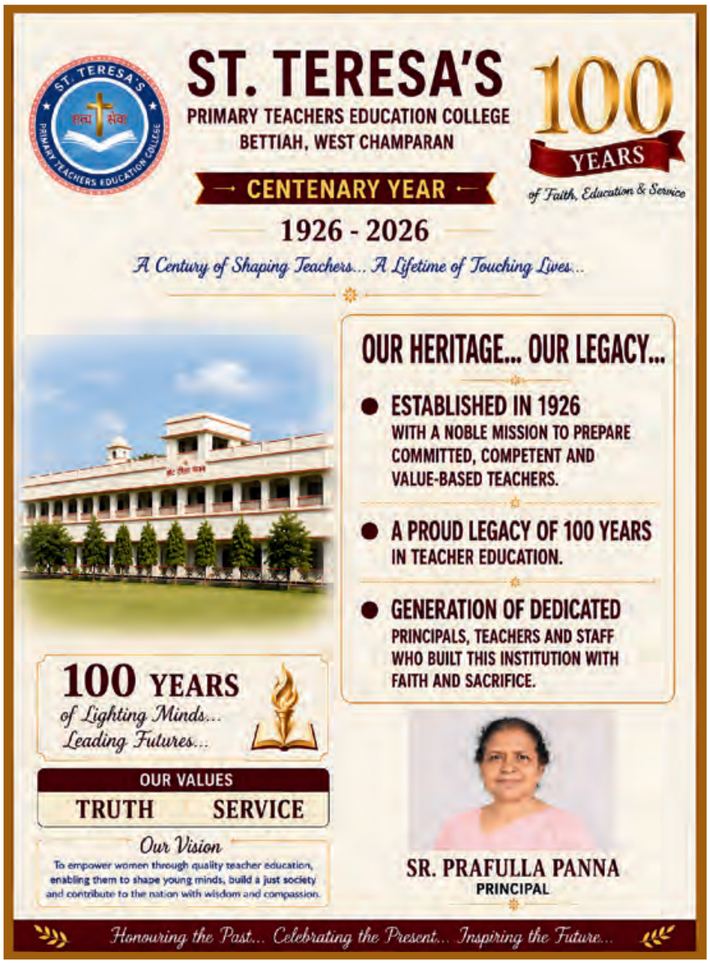

ST. TERESA'S
PRIMARY TEACHERS EDUCATION COLLEGE
BETTIAH, WEST CHAMPARAN
100
YEARS
of Faith, Education & Service
CENTENARY YEAR
1926 - 2026
A Century of Shaping Teachers... A Lifetime of Touching Lives...
OUR HERITAGE... OUR LEGACY...
ESTABLISHED IN 1926
WITH A NOBLE MISSION TO PREPARE COMMITTED, COMPETENT AND VALUE-BASED TEACHERS.
A PROUD LEGACY OF 100 YEARS
IN TEACHER EDUCATION.
GENERATION OF DEDICATED
PRINCIPALS, TEACHERS AND STAFF WHO BUILT THIS INSTITUTION WITH FAITH AND SACRIFICE.
100 YEARS
of Lighting Minds... Leading Futures...
OUR VALUES
TRUTH
SERVICE
Our Vision
To empower women through quality teacher education, enabling them to shape young minds, build a just society and contribute to the nation with wisdom and compassion.
SR. PRAFULLA PANNA
PRINCIPAL
Honouring the Past... Celebrating the Present... Inspiring the Future...

समृद्ध परंपरा की पहचान
विरासत बचाने का संकल्प
प्रयाग संगीत समिति इलाहाबाद एवं प्राचीन कला केन्द्र चण्डीगढ़ से मान्यता प्राप्त
आनंद संगीत महाविद्यालय
(भारतीय कला और संस्कृति के लिए समर्पित संस्थान)
बी.ए., एम.ए. तक संगीत, फाइन आर्ट
एवं योगा की शिक्षा एवं डिग्री प्रदान की जाती है,
जो बी.एड. और एम.एड. के समकक्ष है।
निदेशक
अरविन्द कुमार वर्मा
9470686674, 9939955590
स्थान :- हसपुरा आई टी आई हसपुरा
इटवां रोड, हसपुरा औरंगाबाद (बिहार)

न्यू स्वदेशी सुगर मिल्स
नरकटियागंज, प० चम्पारण।
चीनी मिल के समस्त श्रमिकों,
कर्मचारियों, कृषक बन्धुओं एवं
नगरवासियों को
स्वतंत्रता दिवस 2026
की हार्दिक शुभकामनाएँ!
रविंद्र कुमार तिवारी
कार्यपालक अध्यक्ष

RNI : BIHHIN/2010/32942

प्रकाशन का 17वां वर्ष

ISSN : 2348-5043

लोकचिन्तन

(राष्ट्रीय व अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर निबंधित हिन्दी मासिक समाचार पत्रिका)

राज्य और जिला स्तर पर ब्यूरो प्रमुख / विशेष प्रतिनिधि के रूप में जुड़ने के लिए इच्छुक पुरुष/ महिला व्हाट्सएप नम्बर 9934659107 पर अपना बायोडाटा भेज सकते हैं या इसी नम्बर पर सम्पर्क कर सकते हैं।

विशेष:- अधिकतम प्रचार-प्रसार के लिए सरकारी, गैर-सरकारी संस्थान और व्यावसायिक प्रतिष्ठान लोकप्रिय मासिक समाचार पत्रिका 'लोकचिन्तन' में किफायती दरों पर विज्ञापन छपवाने के लिए 9934659107 पर तुरंत संपर्क करें!

रवीन्द्र कुमार शर्मा

सम्पादक एवं प्रकाशक

9934659107 lokchintanmagazine@yahoo.com www.lokchintan.com

खेमचन्द ताराचन्द महाविद्यालय

रक्सौल, पूर्वी चम्पारण।

(बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर की अंगीभूत इकाई)

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

महाविद्यालय की विशेषताएं :

- भारत-नेपाल सीमा पर अवस्थित अपनी गौरवमयी परम्परा का संवाहक।
- स्वच्छ, सुन्दर एवं प्राकृतिक वातावरण से युक्त विशाल परिसर।
- कला, विज्ञान तथा वाणिज्य संकायों में इण्टरमीडिएट से लेकर स्नातक प्रतिष्ठा स्तर की पढ़ाई की समुचित व्यवस्था।
- इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (IGNOU) से एम.ए. तथा एम.कॉम तक की पढ़ाई।
- एन.एस.एस. एवं क्रीड़ा परिषद द्वारा समय-समय पर विभिन्न कार्यक्रमों का बेहतर आयोजन।
- बी.सी.ए. में पढ़ाई की अच्छी व्यवस्था।अल्पसंख्यक तथा पिछड़े एवं अन्य अनुसूचित जातियों के लिए छात्रवृत्ति की व्यवस्था।
- छात्र / छात्राओं, अभिभावकों तथा शिक्षकों के बीच व्यावहारिक समस्याओं के समाधान हेतु समय-समय पर मिलन-समारोह का आयोजन।

प्रो० (डॉ०) संत साह

प्राचार्य